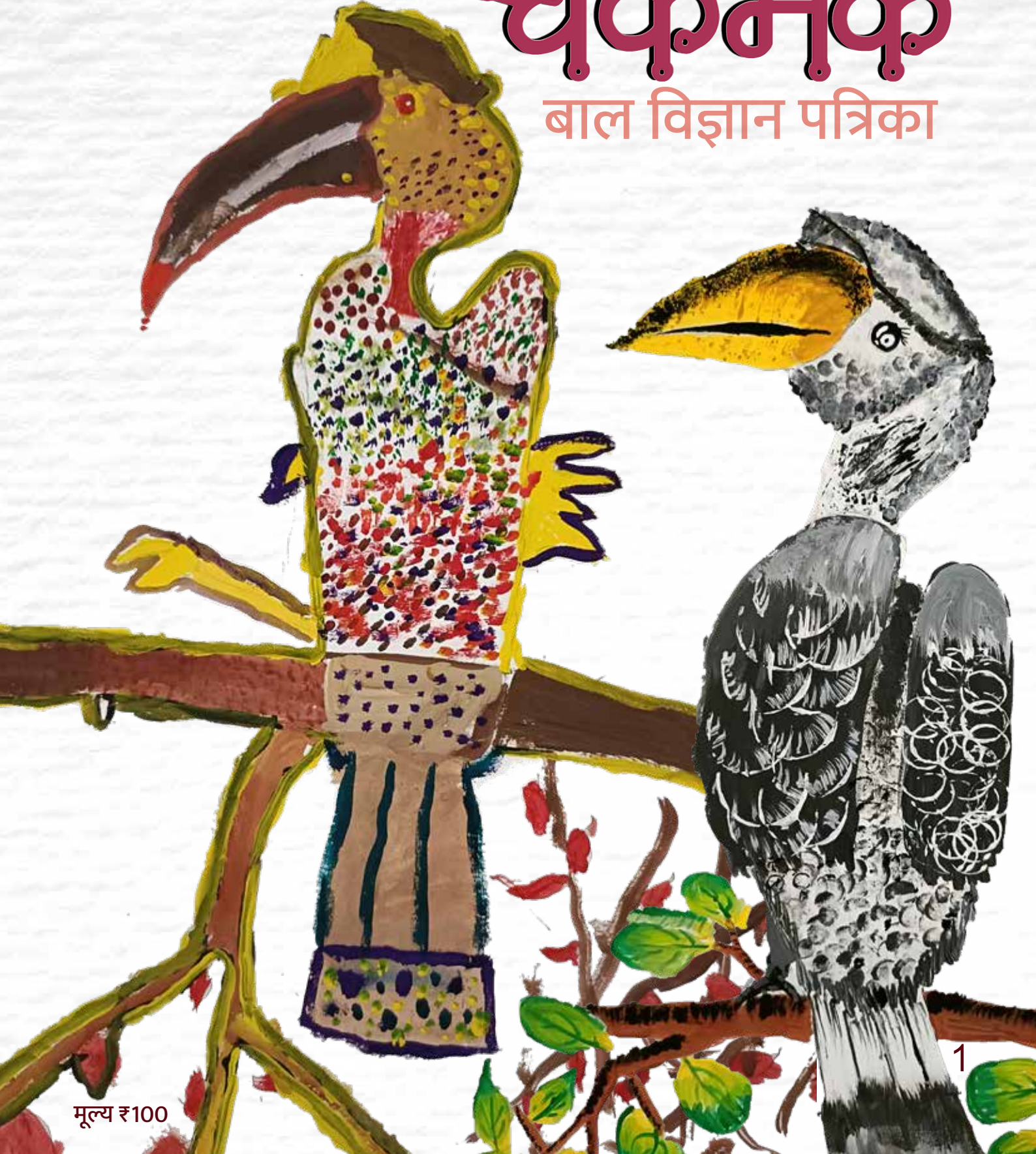


RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 88/प्रकाशन तिथि 1 नवम्बर 2025

अंक 470-71 ● नवम्बर-दिसम्बर 2025

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका



मूल्य ₹100

1



प्रिय चकमक,

पूरे एक महीने बाद तुम आती हो। तुम्हें पढ़कर मज़ा बहुत आता है। एक उत्सुकता बनी रहती है कि इस महीने फिर कुछ नया मिलेगा। कभी कहानी, कभी अनुभव, तो कभी वैज्ञानिकता की झलक, कभी-कभी तो अनूठे चित्र। जिन्हें देखकर एक झटका लगता है कि हमारी कल्पनाशीलता को तुम जैसी पत्रिकाएँ कितना बढ़ावा देती हैं।

कभी-कभी तो यह भी उत्सुकता बनी रहती है कि इस बार मेरी रचना तुम्हारे सुन्दर पन्नों पर दिखेगी। कभी-कभी यह सोचना सच होता है, कभी नहीं। पर इससे बुरा नहीं लगता। पता है क्यों? क्योंकि मुझे वहाँ मेरे दोस्तों की रचनाएँ पढ़ने को मिलती हैं। और उन्हें पढ़कर अलग ही मज़ा आता है। मुझे लगता है 'मेरा पन्ना' तो बिलकुल मेरा ही है। मतलब हमारा। लिखें भी हम, पढ़ें भी हम। हर महीने तुम्हारे आने से बहुत खुशी मिलती है। बहुत अनोखी हो तुम। तुम में जो छपते हैं, वे सब भी तुम्हारी तरह ही अनूठे हैं। इस बार तो और ज़्यादा इन्तज़ार रहेगा क्योंकि इस बार तो विशेषांक आ रहा है।

तुम्हें पढ़ने वाली मित्र
आकृति राज

आठवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

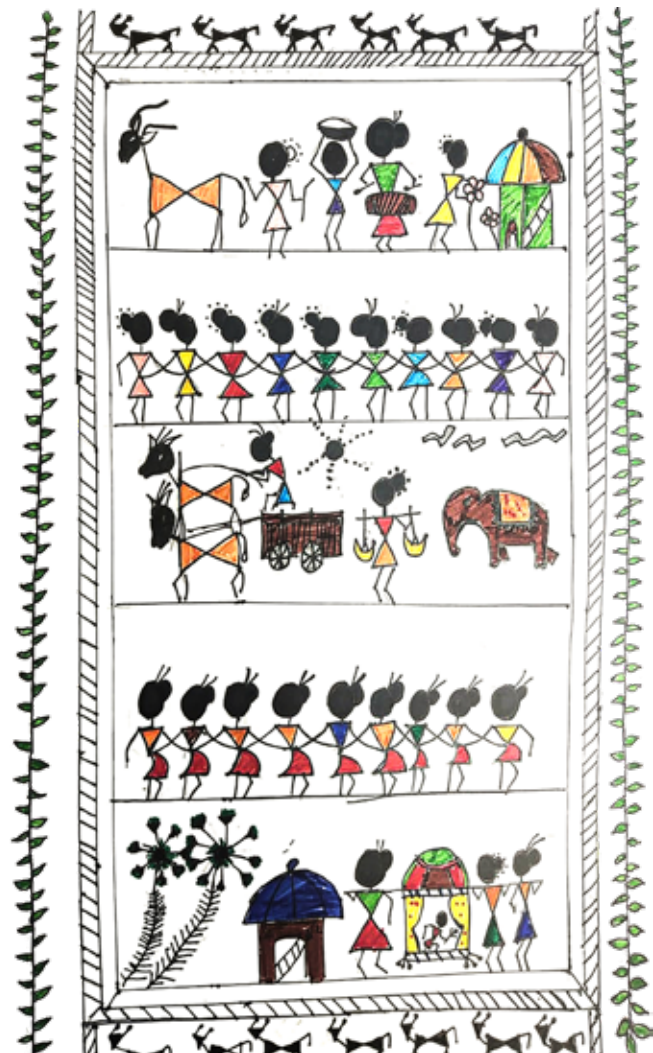
प्रिय सम्पादक चकमक,

मैंने सितम्बर की चकमक पढ़ी थी। उसमें अच्छे-अच्छे चित्र बने थे। मुझे उसमें सुडोकू, चित्रपहेली, क्यों-क्यों और कहानी ननकी व चोरु की दुनिया अच्छे लगे। चकमक हर वक्त मुझसे बातें करती है। मैं चकमक की कविता पढ़ती हूँ। काश मैं एक कविता भेज पाती।

भूलभुलैया मुझे खुद करना पसन्द है। जब तुम मेरा मन खुश कर देती हो तो आज मैंने सोचा कि तुमको भी खुश कर दूँ। तुम बहुत मेहनती हो, चकमक।

यक्षिका

दूसरी, बट्टीपुर, देहरादून, उत्तराखण्ड



चित्र: आयशा, चौथी, दिल्ली पुलिस पब्लिक स्कूल, वजीराबाद, दिल्ली



विशेषांक

अंक 470-71 नवम्बर-दिसम्बर 2025

चकमक मेरा पन्ना

चित्र: सिया, प्री-नर्सरी, एल.बी.एस.एम., जुगाहण, सुन्दरनगर, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

प्रिय दोस्तो,

हम पाठकों से जब पूछते हैं कि चकमक के कौन-से पन्ने वे पहले पढ़ते हैं तो अक्सर जवाब मिलता है — मेरा पन्ना। जितना मज़ा तुम्हें इन पन्नों को देखने-पढ़ने में आता है, शायद उतना ही आनन्द हमें भी इनकी तैयारी में मिलता है। तुम्हारी रचनाओं को देखते समय, पढ़ते समय तुम सब हमारे दिलों में रहते हो। हम सोचते हैं कहाँ होगे तुम, कैसे होगे, तुम्हारा घर कैसा होगा, कहाँ बैठकर तुमने ये बातें सोची होंगी, लिखी होंगी, उकेरी होंगी... हम तुम सबसे मिलकर ये बातें तो कर नहीं पाते हैं। लेकिन एक तरह से इन पन्नों के ज़रिए हम तुम सबसे मिल ही रहे होते हैं, और इस मुलाकात से हमें बहुत खुशी मिलती है।

हर साल की तरह यह अंक सिर्फ तुम्हारी रचनाओं और कुछ मजेदार पहेलियों से बना है। लेकिन इस अंक में कुछ चीज़ें अलग हैं। इस बार तुमने चित्रों से कहीं ज्यादा शब्दों में अपने मन की बात कही। हमारी तरफ से अलग चीज़ यह है कि अंक के डिज़ाइन में बदलाव किए गए हैं। तुम्हें ये बदलाव दिखेंगे — हमें ज़रूर बताना कि तुम्हें पन्ने कैसे दिख रहे हैं।

हर बार की तरह इस साल भी तुम्हारे विचारों, कल्पनाओं व संवेदनाओं ने इस अंक को खास बनाया है और हमें चकित किया है। इसके लिए तुम सबको मुबारकबाद। अंक को पढ़कर-देखकर हमें फोन, व्हॉट्सएप, ईमेल या फिर चिट्ठी लिखकर बताना ज़रूर तुम्हें चकमक कैसे लगी। हमें यकीन है कि आगे भी तुम अपनी कल्पनाओं व अनुभवों से हमें चकित करते रहोगे।

देर सारा प्यार,

तुम्हारी चकमक

आवरण चित्र: ओम गायकवाड और मिताली महामुनि, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

सम्पादक	डिज़ाइन	एक प्रति : ₹100	चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
विनता विश्वनाथन	कनक शशि अनिल	सदस्यता शुल्क	एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
		(रजिस्टर्ड डाक सहित)	बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
सह सम्पादक	सलाहकार	वार्षिक : ₹ 800	खाता नम्बर - 10107770248
कविता तिवारी	सी एन सुब्रह्मण्यम्	दो साल : ₹ 1450	IFSC कोड - SBIN0003867
विज्ञान सलाहकार	शशि सबलोक	तीन साल : ₹ 2250	कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
सुशील जोशी	वितरण		accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।
उमा सुधीर	झनक राम साहू		

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, वेबसाइट: <https://www eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

इस अंक के रचनाकार

1. आवरण चित्र: ओम गायकवाड और मिताली महामुनि, फलटण, महाराष्ट्र	1	46. श्रीजा बाबोडे, फलटण, महाराष्ट्र	31
2. चित्र: आयशा, वजीराबाद, दिल्ली	2	47. चित्र: अमांडा मोयोंग, लोहित, अरुणाचल प्रदेश	31
3. चित्र: सिया, मण्डी, हिमाचल प्रदेश	3	48. चित्र: करण, मुम्बई, महाराष्ट्र	32
4. तेजस्वनी देवांगन, बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़	6	49. उत्कर्ष यादव, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश	32
5. अनुजा मिंज, रिया दास, जयनन्दन सारथी, कुमारी रितिका, दुर्गा व शान्ति दास, परसा, छत्तीसगढ़	6	50. आरणा वसान, नोएडा, उत्तर प्रदेश	33
6. आर्य पटेल, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश	7	51. चित्र: झरना, नैनीताल, उत्तराखण्ड	33
7. चित्रा जोशी, नानकमत्ता, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड	8	52. चित्र: प्रज्ञा, जयपुर, राजस्थान	36
8. चित्र: जुगनू, उज्जैन, मध्य प्रदेश	8	53. तेजस्विनी दुबे, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश	36
9. अरहम, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश	8	54. प्रीति लकड़ा, दिल्ली	36
10. चारिका, बाड़मेर, राजस्थान	9	55. सना माकिन, नोएडा, उत्तर प्रदेश	37
11. यक्षिका, देहरादून, उत्तराखण्ड	9	56. चित्र: प्रिया कुमारी, सिवान, बिहार	37
12. चित्र: अरहम, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश	9	57. सोनू साहू सिंह, नगांव, असम	38
13. शिवांश कास्दे, केसला, मध्य प्रदेश	9	58. चित्र: आयुष्मान भट्ट, देहरादून, उत्तराखण्ड	41
14. भावना यदुवंशी, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश	10	59. अंजीत रोकाया, बेंगलुरु, कर्नाटका	41
15. मुख्तार, धर्मपुर, उत्तर प्रदेश	10	60. गुनगुन, बाड़मेर, राजस्थान	42
16. सीरत कौर, नानकमत्ता, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड	11	61. लक्ष्मीना, नगांव, असम	43
17. शशांक मिश्रा, दरभंगा, बिहार	12	62. प्रिंसी यादव, सागर, मध्य प्रदेश	44
18. दनिका तिवारी, सितारगंज, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड	13	63. मोहम्मद इकबाल, दरभंगा, बिहार	44
19. तेजस, करनाल, हरयाणा	13	64. श्रीधी राज, चंगलपेट, तमिलनाडु	44
20. चित्र: नूर खान, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड	14	65. ईशा शर्मा, नैनीताल, उत्तराखण्ड	45
21. चित्र: हसन, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड	14	66. रूबी बानो, सीतापुर, उत्तर प्रदेश	45
22. मुस्कान गुलाब शेख, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र	15	67. शिवांगी नेलवाल, रानीखेत, उत्तराखण्ड	48
23. चित्र: अदिति तिवारी, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश	15	68. पीहू कुमारी, पटना, बिहार	48
24. चित्र: मुस्कान गुलाब शेख, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र	16	69. सावर्णिका मनु, पंतनगर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड	49
25. आध्या सिंह, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश	16	70. चित्र: प्रकाश डावर, खरगोन, मध्य प्रदेश	49
26. रूही, जोग्युड़ा, नैनीताल, उत्तराखण्ड	16	71. काजल देवी, मलसराय, सीतापुर, उत्तर प्रदेश	50
27. यशवी, चंगलपेट, तमिलनाडु	17	72. सुष्मेन्द्र कुमार, मलसराय, सीतापुर, उत्तर प्रदेश	51
28. आस्तिक उडके, बीजाडाण्डी, मण्डला, मध्य प्रदेश	17	73. चित्र: शांभवी, वडोदरा, गुजरात	51
29. ई हन्विता, चंगलपेट, तमिलनाडु	17	74. मानवी रावत, दिनेशपुर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड	52
30. कशिश, मानवी, नैना व देवराज, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश	18	75. चित्र: सुरगी, बेंगलुरु, कर्नाटका	52
31. संगम, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश	20	76. क्रान्ति, धर्मपुर, उत्तराखण्ड	52
32. पीयूष मलिक, सितारगंज, ऊधमसिंह नगर	20	77. अमरजीत, धर्मपुर, उत्तराखण्ड	53
33. विकास, जयपुर, राजस्थान	21	78. चित्र: सृष्टि रावत, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड	53
34. हीना ठाकुर, मण्डी, हिमाचल प्रदेश	21	79. चित्र: दिया असवाल, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड	53
35. अयान चन्द्र, नोएडा, उत्तर प्रदेश	22	80. भारत, मण्डी, हिमाचल प्रदेश	54
36. चित्र: अर्जुन चढा, नोएडा, उत्तर प्रदेश	22	81. ज्योति मण्डल, दिल्ली	54
37. सावर्णिका मनु, पंतनगर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड	23	82. चित्र: निहार वासुदेब हलबे, चंगलपेट, तमिलनाडु	54
38. चित्र: अनिष्क जैन, नोएडा, उत्तर प्रदेश	23	83. प्रिंसी यादव, सागर, मध्य प्रदेश	55
39. मालिनी, भोपाल, मध्य प्रदेश	24	84. विरेन, करनाल, हरयाणा	55
40. चित्र: अनीता वर्मा, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश	26	85. काजल, जयपुर, राजस्थान	56
41. चित्र: अर्विश, टोंक, राजस्थान	27	86. काव्या यादव, दिल्ली	56
42. योग्य आनन्द, नोएडा, उत्तर प्रदेश	28	87. श्वेता बलसूनी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड	56
43. पीहू कुमारी, पटना, बिहार	29	88. स्मिता उडके, केसला, मध्य प्रदेश	57
44. चित्र: कबीर चश्मावाला, वडोदरा, गुजरात	30	89. दिया भट्ट, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड	57
45. राधिका यादव, सागर, मध्य प्रदेश	31	90. दिव्या, बाड़मेर, राजस्थान	57

91. कल्पना रजक, बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़	60
92. छाया अहिरवार, केसला, मध्य प्रदेश	61
93. प्रज्ञा, जयपुर, राजस्थान	61
94. प्रथम सिंह पटियाला, चंगलपेट, तमिलनाडु	61
95. चित्र: तेजस, करनाल, हरयाणा	62
96. चित्र: जियांश देसाई, वडोदरा, गुजरात	63
97. सनंदा एल. और निकिता एस. चंगलपेट, तमिलनाडु	64
98. विकास कुमरे, केसला, मध्य प्रदेश	65
99. मानवी, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश	65
100. नवजोत कौर, नानकमत्ता, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड	65
101. हर्षिता कहार, केसला, मध्य प्रदेश	65
102. सेहज त्यागी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	66
103. शोएब एवं मुख्तार, धर्मपुर, उत्तर प्रदेश	66
104. कन्हैया कुमरे व विवेक कुमरे, केसला, मध्य प्रदेश	67
105. महफूज खान, भोपाल, मध्य प्रदेश	67
106. दीपा, सोनीपत, हरयाणा	67
107. यश, बाड़मेर, राजस्थान	68
108. शांभवी, वडोदरा, गुजरात	68
109. दुर्गा, परसा, छत्तीसगढ़	68
110. प्रज्ञा शहा, फलटण, महाराष्ट्र	69
111. राधिका यादव, सागर, मध्य प्रदेश	69
112. भूमिका राना, नानकमत्ता, ऊधमसिंह नगर	69
113. सत्यम कुमार, पटना, बिहार	70
114. मोहिनी शर्मा, केसला, मध्य प्रदेश	72
115. वर्षा, मण्डी, हिमाचल प्रदेश	73
116. प्राजक्ता काकड़े, फलटण, महाराष्ट्र	73
117. सुमन, कानपुर, उत्तर प्रदेश	73
118. नगमा, दिल्ली	76
119. स्नेहा कलमे, केसला, मध्य प्रदेश	76
120. राखी लविस्कर, केसला, मध्य प्रदेश	76
121. चित्र: सुमन, कानपुर, उत्तर प्रदेश	76
122. अहान जैन, दिल्ली	77
123. पलक, मण्डी, हिमाचल प्रदेश	77
124. चित्र: प्रथम सिंह पटियाला, चंगलपेट, तमिलनाडु	77
125. चित्र: नैवध्य थपलियाल, देहरादून, उत्तराखण्ड	78
126. चित्र: रोहित, बाड़मेर, राजस्थान	79
127. चित्र: मंजूर अली, बाड़मेर, राजस्थान	79
128. चित्र: नन्दिनी धुमाल, फलटण, महाराष्ट्र	80
129. प्रकाश ठाकुर, नगांव, असम	81
130. समर्थ यादव, मण्डला, मध्य प्रदेश	81
131. ममता, बाड़मेर, राजस्थान	82
132. विवेक कुमरे व कन्हैया कुमरे, केसला, मध्य प्रदेश	82
133. अमरजीत, धर्मपुर, उत्तर प्रदेश	83
134. चित्र: अमरजीत, धर्मपुर, उत्तर प्रदेश	83
135. श्रेयांश राज, चेंगलपेट, तमिलनाडु	83
136. लक्ष्मी, जालौर, राजस्थान	86

इस बार

मैंने खत लिखा	2, 18, 52
श्शश... ये सीक्रेट है	6
ख्वाबों में	8, 36
मेरे घर का सबसे पुराना सदस्य	10, 20, 44, 82
भूलभुलैया	14, 78
बैलपोला	15
चिड़िया क्या सोचती होगी	16
छोटी गिलहरी हमसे डरती है	16
चमगादड़ की मौत	17
हमारे गाँव का रास्ता	17
साहसी शिक्षिका	17
क्या मैच था वो	22, 54
अन्तर ढूँढो	26, 62
फिल्मी बातें	28, 70
पहली-पहली बार	30, 48
चित्रपहेली	34, 74
अम्बेडकर जयन्ती पर एक डिस्प्ले	38
नवमी में पूरी-हलवा	41
किताबें कुछ कहती हैं...	42
माथापच्ची	46, 58
वो मेरा हीरो	56
मन की पसन्दीदा जगह	60, 72, 76
तुम भी बनाओ	64
क्यों-क्यों	66
झण्डू बाम	81
भेदभाव और घमण्ड	81
मेरा बचपन	86

संज्ञासूचक लेखन

कुम्हार कोई सक्रिय जो दुम
जब घुम रहे लफ जाते हैं, तो
घोते करते हैं और बूझ लेने में
अफाई कर रही थी तो मैं लेस
दुमें बाँध पिनाई फिर लो ले
मैं बूझ लिन बाजार गुमो तो
फिर ऊँठ मोमोसु मिलाई तो
खिलाई भीर लो लोग अपन-
फिर बूझ लिन मैं घर में किना
फिर मैं बूझ लिन पीछा लगा
लेखा



मेरा
पत्रिका

मेरा सीक्रेट

मेरी पाप एक सीक्रेट है वो भी अपनी बहन के ऊपर जैसे की मेरी बहन हमेशा पापा से मुझे जांत खेलवाती है तो मैंने एक योजना सोची की मैं अपनी बहन को बताना जरूर लूंगी तो मैंने पहले पापा के कपड़े पर दाग लगा दिया जब पापा उसे पहने और उन्होंने देखा तब बोले की ये दाग किसने लगाया है तो मैंने बोला आनी ने लगाया है तो पापा उसे डांटने लगे फिर मैंने पापा के जूते में रंग लगा दिया फिर पापा जैसे जूते पहने लगे तो उन्होंने कहा अब यह रंग किसने लगाया है तो मैंने का आनी ने तो फिर उसने गले साध में मार डी पड़ी। और मैंने अपनी बहन से ये नहीं बताया की ये मैंने किया है।



Signature

रचनात्मक लेख

PAGE NO. DATE

उम्मीदों को हम सबका करता छोड़ो

मेरे सुपर हीरो को हम सबका करता छोड़ो
मेरी लड़की को और मुझे बहुत धूल लगा रही थी।
और दुर्गमा भी मारने वाली तो सजा जाती थी।
बोले मे अर्मा को बेल रही उधरों नंदी मत समझना।
और तो सुकल में भी रहती तो सच मेरी दुखे थली मौनने
जाना तो देती नंदी को भी मुझसे छोड़ना लड़के
करती। वो वारी वीर आन से प्राणने की गलती नहीं
करेंगी बोरी।

नाम- दुर्गा

कक्षा- 4 (वि.म)

शा. प्र. मा. बाला, कक्षा

उम्मीदों को हम सबका करता छोड़ो

जंगल में कोई सीक्रेट जो मैं मेम को
नहीं बताई मैं सुकल से भागी थी तो
मे मेम को नहीं बताई थी आनने मुझे
उ मेम को डर लग रहा था तो मैं भाग गई
उ मे घर लाकर मेरे मन में लगा की
उ मे दुर्गमा मार कर पकड़नी चाई थी
उ मे छोटी मांग कर मन में पिन मार
उ छोटी बात मेरे मन में पिन मार
उ मा रही थी पर ऐसा हो नहीं पता

नाम शान्ति दास

कक्षा 4 वि.म

रोल नं: 33

शा. प्र. मा. शान्ति

भूत

चित्रा जोशी
सातवीं, नानकमता
पब्लिक स्कूल, नानकमता
ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

मैं थी अपने घर में। मम्मी-पापा दूसरे कमरे में सो रहे थे। मैं दूसरे कमरे में थी। मुझे नींद नहीं आ रही थी। और मैंने देखा मेरे आगे एक भूत खड़ा है। तो मैं बहुत डर गई। मुझे हनुमान चालीसा नहीं आती, लेकिन उस वक्त मैंने पता नहीं कितनी बार जैसे-तैसे करके हनुमान चालीसा पढ़ी। एकदम टूटी-फूटी। मुझे उस रात नींद ही नहीं आ रही थी। फिर पता नहीं कैसे मैंने भूत को अपनी बातों में फँसाया और रात भर उससे बातें करती रही। उसने मुझे अपनी कुछ बातें बताईं और मैंने भी। और पता ही नहीं चला कि बातें करते-करते कब सुबह हो गई। फिर मैं स्कूल चली गई और ये सारी बातें अपनी दोस्त शिखा और कोमल को बताईं।



डरावना सपना

अरहम

तीसरी 'ब', जिंगल बेल स्कूल, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

मुझे एक बार बहुत ही डरावना सपना आया। क्या आप सोच सकते हैं कि कैसा सपना था? सपना बहुत ही डरावना था। मैं बेड पर से गिर गया था। अरे! मैं तो मज़ाक कर रहा था। मैंने सपना देखा कि एक बहुत बड़ा भूत मुझे खाने के लिए तैयार था। वो मुझे अपने हाथ में लेकर खाने ही वाला था कि मेरी मम्मी बोली, “बेटा उठो, स्कूल जाना है।” क्या आपको भी कोई डरावना सपना आया है?



नकली भूत

जुगनू

आठ साल, अवंती स्कूल
ऑफ एक्सीलेंस, उज्जैन
मध्य प्रदेश

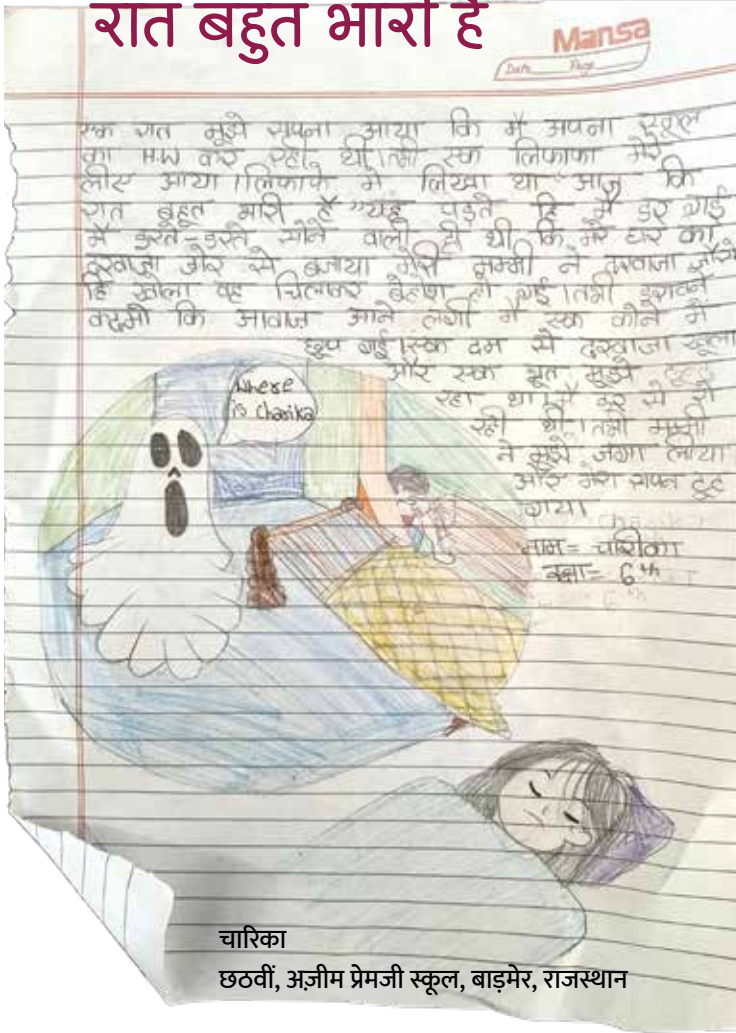


चित्र: जुगनू

मुझे सपना आया कि हमारे घर में एक भूत आ गया है। और सब वहाँ पर बेहोश हो गए हैं। मैं भी वहाँ पर थी। मुझे लगा कि ये एक नकली भूत है तो मैं उसके पास गई और मैंने उसका मुखौटा खींचा। और वो वहीं बेहोश हो गया।



रात बहुत भारी है



चारिका

छठवीं, अजीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

मैंने सपना देखा

यक्षिका

दूसरी, बट्टीपुर, देहरादून, उत्तराखण्ड

एक रात को मैंने सपना देखा कि मैं दूर तक उड़ रही हूँ। डाल-डाल पर बैठ रही हूँ। पेड़ों से बातें कर रही हूँ। एक सुबह मैं एक मोरनी से मिली। वो सच में सुन्दर थी। उसके रंग पंखों पर नाच रहे थे। मैंने उससे दोस्ती कर ली। हम हमेशा साथ रहेंगे। जो भी मुसीबत में हो उसकी मदद करेंगे।

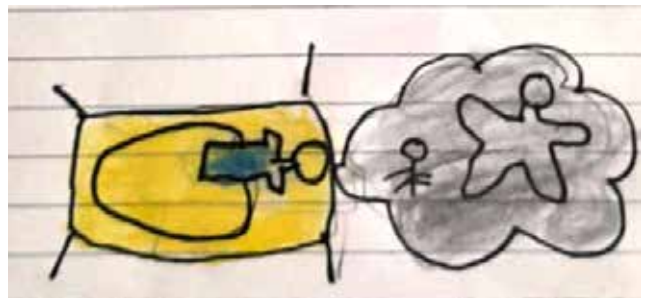


चिड़िया और मछली

शिवांश कास्दे

छठवीं, शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला
जामुनडोल, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

हमारे गाँव की जो जगह मुझे बहुत अच्छी लगती है वो है नदी। नदी में जाकर हमें बहुत अच्छा लगता है। नदी के पास कई सारी चिड़िया आती रहती हैं और मछली को नदी से पकड़कर ले जाती हैं। एक दिन हमें नदी के किनारे पर एक मछली मिली। वह पानी के बाहर थी। हमने उस मछली को नदी में डाल दिया। लेकिन वह फिर बाहर आ गई। ऐसा लगा कि मछली हमारी दोस्त बनना चाह रही थी। हमने उसे फिर से नदी में डाल दिया। फिर वह नहीं आई क्योंकि जैसे ही नदी में डाला एक चिड़िया आई और उसे लेकर चली गई। लेकिन उस चिड़िया ने हमें उदास देखा तो उस मछली को वापिस छोड़ दिया। और फिर पापा ने मुझे जगा दिया।



चित्र: अरहम, तीसरी 'ब', जिंगल बेल स्कूल, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

मेरे घर का सबसे पुराना सदस्य



पाई-पाई

भावना यदुवंशी
पाँचवीं, डेफोडिल, नर्मदा वैली
इंटरनेशनल स्कूल, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

इसे पाई कहा जाता है। यह गेंहूँ नापने के काम आती है। पहले लोग एक-दूसरे को पैसे नहीं देते थे, बल्कि इससे गेंहूँ नापकर देते थे। और अभी भी कुछ लोग इससे गेंहूँ नापकर देते हैं।

ढुई पाटन के बीच में

मुख्तार
पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय
धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे घर में एक चक्की है। जब मेरे दादा के परदादा थे तब से वो चक्की हमारे घर में है। वो अभी भी इस्तेमाल होती है। उसमें मटर और मसूर की दाल भी पीसी जाती है। उसमें चावल भी पीसा जाता है। वह पत्थर की बनी है। इस्तेमाल होते-होते उसके पाट चिकने हो जाते हैं तो चक्की से ठीक से पिसाई नहीं होती। तब पत्थरकट को बुलाते हैं। वो छैनी और छोटी हथौड़ी से धीरे-धीरे चोट करके चक्की के पाट को छीन देता है।



चित्र: मुख्तार, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश



रिश्तों की गर्माहट

सीरत कौर

सातवीं, नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, नानकमत्ता
ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

जब मैं छोटी थी, तब हमारे घर में एक चूल्हा था। यह हमारे घर की सबसे पुरानी चीज़ थी और मेरे लिए सबसे खास और रोमांचक यादों का पिटारा भी। वह चूल्हा मेरे दिल के बहुत करीब था, क्योंकि जब भी मम्मी सुबह-सुबह पकवान बनाती थीं, तो उसकी खुशबू दूर-दूर तक फैल जाती थी और घर का वातावरण एकदम जीवन्त हो जाता था।

सर्दियों के दिनों में चूल्हे की गर्माहट पूरे परिवार को एक जगह इकट्ठा कर देती थी। सभी लोग चूल्हे के पास बैठते थे, अपना दुख-सुख साझा करते थे और एक-दूसरे के करीब आते थे। बच्चे और बूढ़े मिलकर कहानियाँ और कविताएँ सुनते थे। उस समय घर में खुशी, अपनापन और रिश्तों की मिठास भरी रहती थी।

लेकिन अब समय बदल गया है। चूल्हे की जगह गैस सिलेंडर ने ले ली है। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी के पास मोबाइल फोन आ गए हैं। अब न कोई चूल्हे के पास बैठता है और न ही कोई अपना दुख-सुख साझा कर पाता है। हर कोई अपने-अपने मोबाइल में ही व्यस्त रहता है।

पुराने समय का चूल्हा सिर्फ खाना पकाने का साधन नहीं था, बल्कि वह परिवार को जोड़ने वाला केन्द्र था। आज भले ही सुविधा बढ़ गई हो, लेकिन रिश्तों में वह अपनापन और मेल-जोल कहीं खो-सा गया है।



मेरे घर का सबसे पुराना सदस्य

मिट्टी की कोठी

शशांक मिश्रा
नौवीं, किलकारी बिहार बाल
भवन, दरभंगा, बिहार

पुरानी चीजें मुझे हमेशा से आकर्षित करती हैं और मैं उन्हें जानने की हमेशा कोशिश करता हूँ। इसके लिए अक्सर मैं अपने दादा और दादीजी के पास बैठता हूँ और उनसे उनके समय की बातें करता हूँ। मेरे घर के कोने में मिट्टी का एक

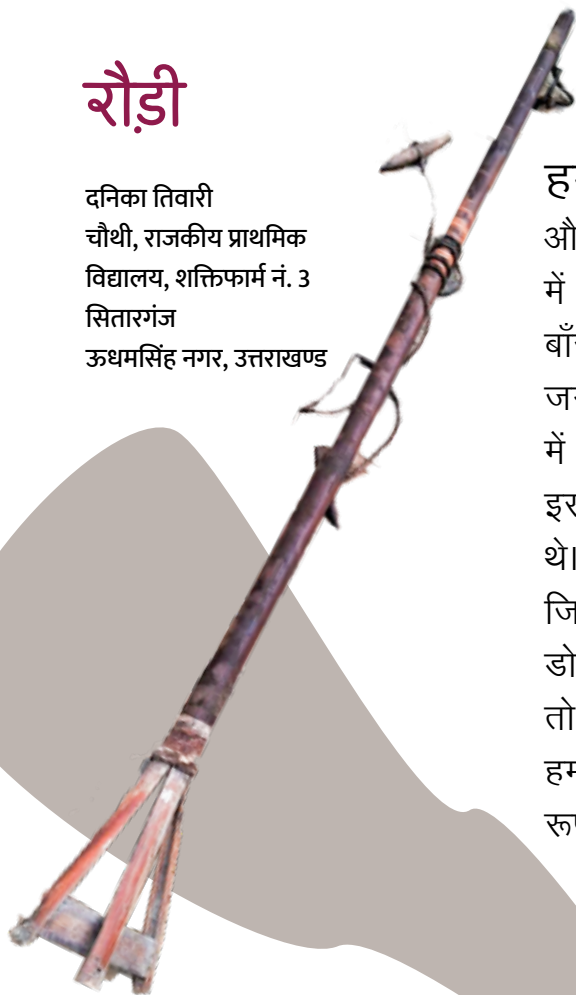
ड्रम जैसा है, सुन्दर-सा डिज़ाइन किया हुआ। मछली और कई दूसरी तरह की आकृतियाँ बनी थीं उसमें। और ढक्कन भी लगा हुआ था। मिट्टी से ही उसकी पूरी संरचना बनी हुई थी।

मैंने दादी से पूछा, “दादी ये क्या है?” दादी ने कहा, “जैसे अभी के समय में अन्न भण्डारण के लिए ड्रम का उपयोग होता है वैसे ही हमारे समय में मिट्टी की कोठी का उपयोग होता था। बहुत समय तक इसमें अनाज सुरक्षित रहता था। समय-समय पर लोग इससे अनाज निकालते थे और फिर मिट्टी से बन्द कर देते थे।” फिर वहीं रखे एक सन्दूक पर मेरी नज़र गई तो दादाजी से मैंने पूछा, “यह कैसा बक्सा है और इसमें क्या रखा है?” दादाजी ने बताया, “यह हमारे बाबूजी ने बनवाया था। इसमें कुछ पुराने पीतल के बर्तन और कुछ औज़ार भी रखे हुए हैं।” मुझे देखने का बड़ा मन किया और मैंने दादाजी से सन्दूक खोलकर दिखाने को कहा। उसे देखकर मुझे बहुत ही अच्छा लगा और मैंने भी प्रण किया कि मैं भी अपने पूर्वजों की धरोहर को संजोकर रखूँगा।



रौड़ी

दनिका तिवारी
चौथी, राजकीय प्राथमिक
विद्यालय, शक्तिफार्म नं. 3
सितारगंज
ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड



हमारे घर में एक रौड़ी है। यह लस्सी, मट्ठा और मक्खन बनाने के काम आती थी। सन 1992 में मेरे दादू इस रौड़ी को लाए थे। यह रौड़ी बाँस की डण्डियों से बनती थी। पर अब इसकी जगह फिरकी और मिक्सी ने ले ली है। हमारे घर में पहले तीन गाएँ थीं। तो दूध बहुत होता था। इसलिए इसे दादू हमारे पहाड़ के घर से लाए थे। इसे खम्भे पर बाँधकर इस्तेमाल करते थे। जिसमें दूध मथने के लिए डाला जाता था उसे डोका कहते थे। पर अब हमारे पास गाय नहीं है तो दूध भी ज़्यादा नहीं होता। इसलिए अब यह हमारे घर में पुराने ज़माने की एक निशानी के रूप में रखी है।



दादी का बेल्ला

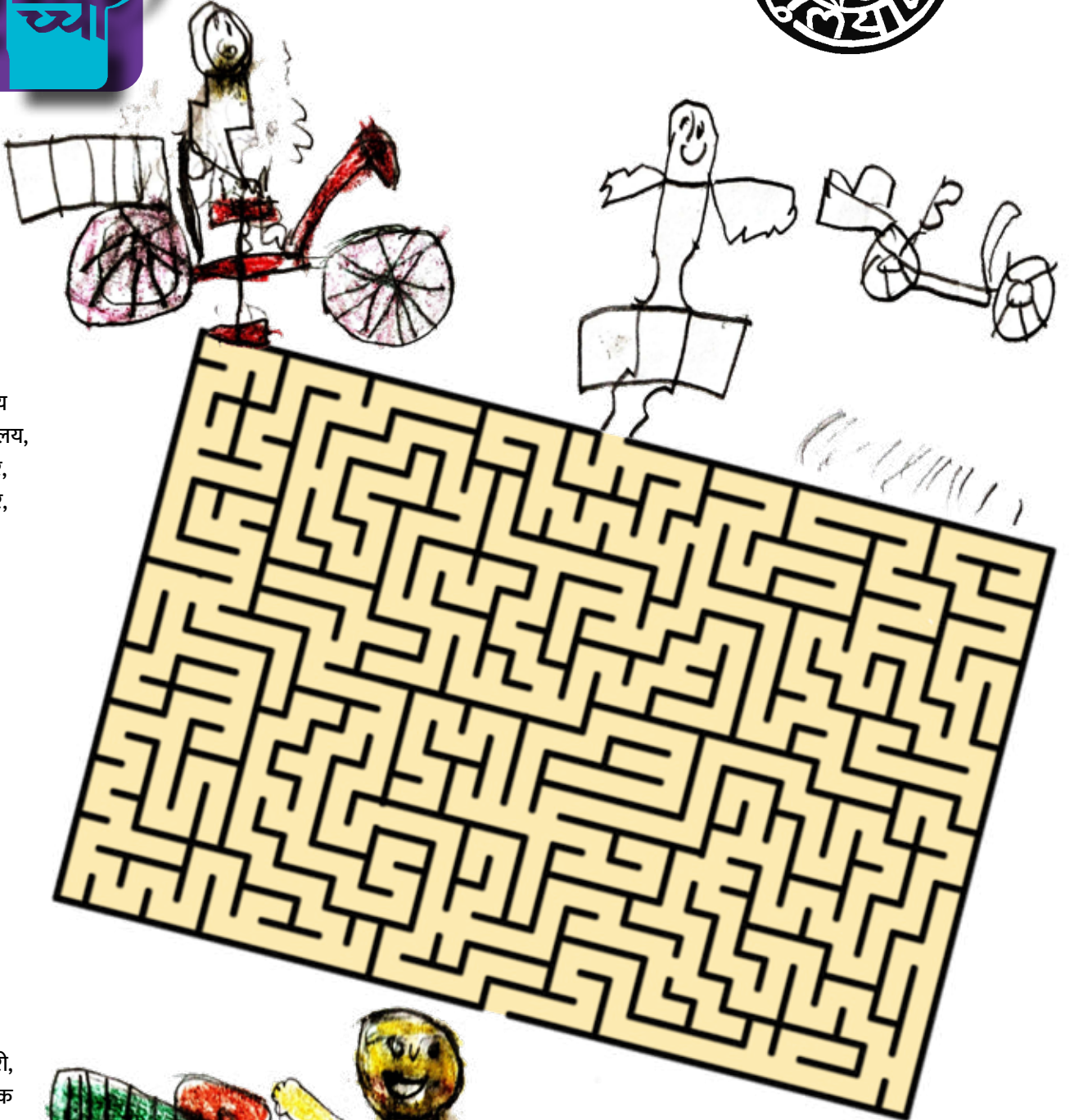
तेजस
सातवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल
पाड़ा, करनाल, हरयाणा

यह हमारी दादी के ज़माने का है। इसे हमारी मातृभाषा में बेल्ला कहते हैं। इसमें मेरी दादी बचपन में खाना खाया करती थीं। यह पीतल से बना है। वैसे तो यह बेल्ला मेरी दादी का है, पर इसे मैं रखता हूँ।





चित्र: नूर खान,
पहली, राजकीय
प्राथमिक विद्यालय,
महराया, रुद्रपुर,
ऊधमसिंह नगर,
उत्तराखण्ड



चित्र: हसन, दूसरी,
राजकीय प्राथमिक
विद्यालय, महराया,
रुद्रपुर, ऊधमसिंह
नगर, उत्तराखण्ड



बैल को बैलपोला के दिन पूजा जाता है। इस दिन उसे नहला-धुलाकर सजाया जाता है। उससे इस दिन कोई काम नहीं करवाया जाता। उसे मन्दिर में ले जाते हैं, मीठा खिलाते हैं। उसे घर-घर घुमाते हैं। बस यही एक दिन उसे आराम मिलता है और प्यार मिलता है।

मैंने बैल से पूछा उसे कैसे लगता है ये सब, तो वो बोला कि वो बेहद दुखी है। उसे रोज़ बहुत काम करना पड़ता है। खाना भी कम ही मिलता है। उसे मार भी पड़ती है। गालियाँ भी सुननी पड़ती हैं। कमज़ोर होने पर भी उससे काम करवाते हैं। काम करने के लायक न होने की वजह से उसके एक दोस्त को बाज़ार में बेच दिया गया। उसे दुख हुआ। पर किसी ने उसके आँसू नहीं देखे।

उसने यह भी कहा कि वो थक जाता है, पर रुक नहीं सकता। रुक गया तो डण्डे पड़ते हैं। कभी-कभी बोझ उठाते हुए वो इतना थक जाता है कि चल नहीं पाता और बैठ जाता है। तब उसे बहुत मार खानी पड़ती है। जब कभी बैलगाड़ी कीचड़ में फँस जाती है, तब उसे बहुत ज़ोर लगाना पड़ता है। वो पूरी ताकत लगाता है, थक जाता है, पर रुकता नहीं है। उसकी ज़िन्दगी सिर्फ़ काम करने में जाती है। उसे कोई प्यार, सम्मान नहीं मिलता और कोई उसकी सेवा नहीं करता।

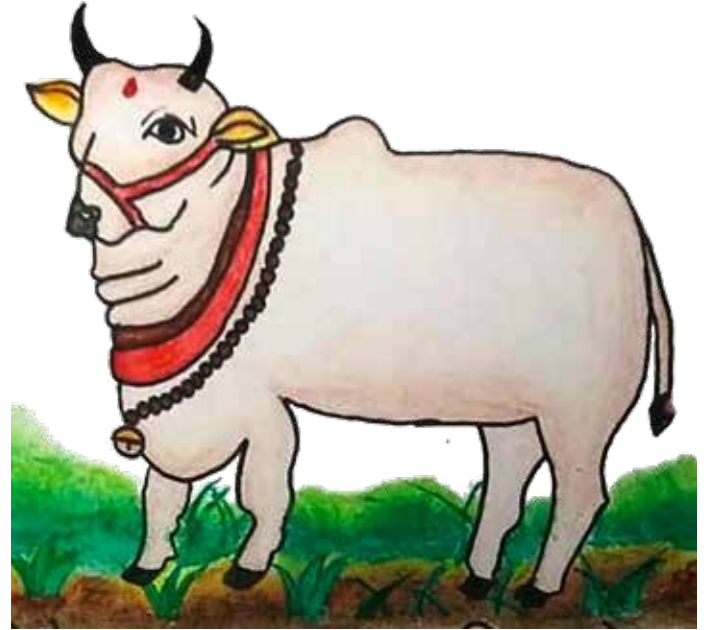
मैं ये सब सुनकर दुखी हो गई। सोचने लगी क्यों इन्सान जानवरों से इतना काम करवाते हैं? क्यों उसकी जान को जान नहीं समझते? और उसके दर्द को नहीं समझते?

उस रात मैंने मीठा खाना नहीं खाया।



बैलपोला

मुस्कान गुलाब शेख
छठवीं, जिला परिषद स्कूल
खुटाला, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र



चित्र: मुस्कान गुलाब शेख

चित्र: अदिति तिवारी, तीसरी 'स', जिंगल बेल स्कूल, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश



चिड़िया क्या सोचती होगी

रूही
पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय
जोग्युड़ा, नैनीताल, उत्तराखण्ड

चिड़िया क्या सोचती होगी
इन्सान अच्छे हैं
चावल मिले खुश होगी
दुनिया में अच्छे लोग हों तो हमें चावल मिल सकते हैं
मैं भी इन्सान को उड़ा पाती
चिड़िया सोचती होगी इन्सान मेहनत करके देते हैं



चित्र: धीरज अहिरवार, आठवीं,
लाइब्रेरी एकलव्य फाउंडेशन,
नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश



छोटी गिलहरी हमसे डरती है

आध्या सिंह
जूनियर केजी
किडजी स्कॉलर वर्ल्ड
बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

छोटी गिलहरी हमसे डरती है क्योंकि
उसको लगता है कि हम उसको मारने
आ रहे हैं। बड़ी गिलहरी हमसे नहीं
डरती क्योंकि वो हमारे नाखून चुभा
सकती है। मैं बन्दर से डरती हूँ क्योंकि
वो हमारे पैर में काट सकता है।



चमगादड़ की मौत

यशवी
सातवीं, रमणा विद्यालय
महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी
चंगलपेट, तमिलनाडु

एक बार की बात है। जब मैं छोटी-सी थी तो हम पुराने घर में रहते थे। एक बार हमारी छत पर गेट खुला छोड़ दिया किसी ने, और किसी को भी नहीं पता था। उस रात एक चमगादड़ छत पर से अन्दर नीचे की ओर आया और पंखे से टकरा गया। इस वजह से वह ज़्यादा घायल हो गया और मर गया। जब तक मैं कुछ समझ पाती, वह मुझ पर गिर गया। मैं बहुत डर गई। उसके बाद मेरी दादीजी ने उसे उठाया और कहीं पर ले गई और उसे दफना दिया।



हमारे गाँव का रास्ता

आस्तिक उइके

पाँचवीं, एकलव्य फाउंडेशन, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, पीपरडाही
बीजाडाण्डी, मण्डला, मध्य प्रदेश

हमारे गाँव का रास्ता बहुत मज़ेदार है। सोहड़ और पीपरडाही के बीच में एक आम का पेड़ है। उसके नीचे इतना कीचड़ है कि जो भी वहाँ से जाता है वह कीचड़ में गिर जाता है। और जो भी व्यक्ति गुज़रते हैं रास्ते से वे सब हँसने लगते हैं।



साहसी शिक्षिका

ई हन्विता
सातवीं, रमणा विद्यालय
महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी
चंगलपेट, तमिलनाडु

एक दिन हमारी शिक्षिका कक्षा में हमें बता रही थीं कि तुम सबको जीवन में साहसी बनना चाहिए। कुछ घण्टों बाद उनकी कुर्सी के पास एक छिपकली दिखाई दी। उसे देखते ही वे तुरन्त चिल्ला उठीं, “हे भगवान!” यह सुनकर पूरी कक्षा हँसी से लोटपोट हो गई। सभी सोच रहे थे कि वह हमें साहसी बनने के लिए कह रही थीं। मैं इस मज़ेदार घटना को कभी नहीं भूल सकती।



प्रिय बच्चो,

तुम कैसे हो? मुझे बहुत अच्छा लगा कि तुमने मेरे बारे में जाना। मेरी दोस्त चुजुको ने एक दिन मुझसे कहा कि यदि तुम एक हजार कागज़ की चिड़िया बनाओगी तो तुम ठीक हो जाओगी। मैंने बहुत चिड़िया बनाई। मुझे अच्छा लगा कि तुमने मेरे लिए 261 चिड़िया बनाई। प्यारे दोस्तों 6 अगस्त, 1945 को हमारे शहर हिरोशिमा में लिटिल बॉय नाम का परमाणु बम गिरा था। उससे जापान में बहुत जानें चली गईं। पर अब मुझे लगता है कि 2025 में ऐसा नहीं होगा। अब विश्व में कहीं भी युद्ध नहीं होगा और देशों में शान्ति होगी। कहीं भी परमाणु बम नहीं गिरा होगा। और हरियाली ही हरियाली होगी। जैसी बीमारी जापान में हैं वैसी तुम्हारे यहाँ नहीं होगी। मुझे ब्लड कैंसर है। मुझे बहुत दुःख है कि मैं अब दौड़ में भाग नहीं ले पाऊँगी। मुझे परमाणु बम से ही कैंसर हुआ था। अगर तुमने मेरे लिए कुछ लिखा हो तो मुझे ज़रूर बताना। और हो सके तो मेरे जैसे बच्चों की सहायता करना ताकि वो सब अपना जीवन खुशी-खुशी जी सकें।

धन्यवाद

तुम्हारी प्यारी दोस्त

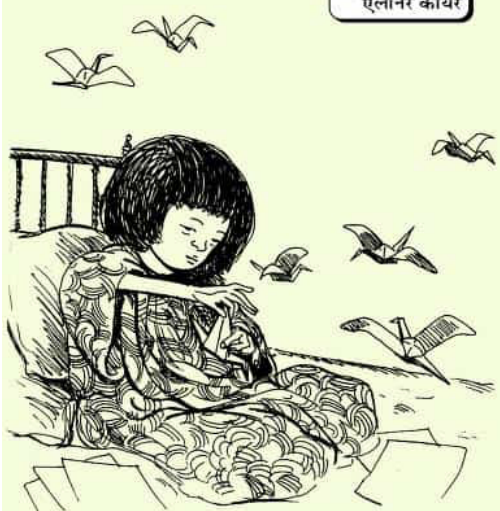
सडाको

(यह पत्र सडाको की तरफ से कशिश ने लिखा है।)



सडाको और कागज़ के पक्षी

एलीनर कोयर



यह सभी खत प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश की कक्षा चौथी के छात्र-छात्राओं ने सडाको और कागज़ के पक्षी पुस्तक पढ़ने के दौरान लिखे हैं।

प्रिय लेखक जी,

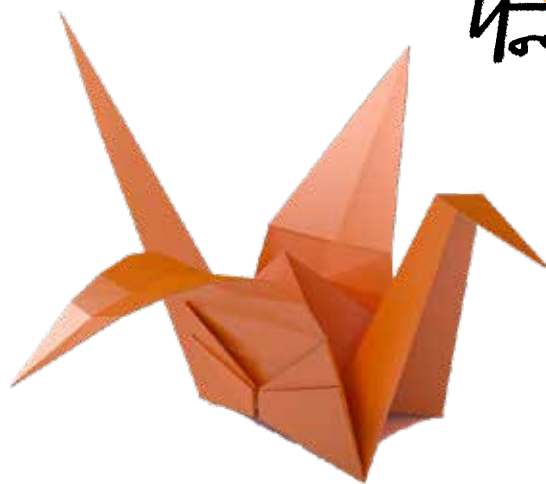
आप कैसे हो? मैं चाहती थी कि सडाको ठीक हो जाए इसलिए हमने बहुत सारे पक्षी भी बनाए थे। यदि सडाको यहाँ नहीं ठीक हो रही है तो दूसरे हॉस्पिटल में चली जाए। मुझे यह जानकर दुख हुआ कि सडाको इस दुनिया में नहीं रही। जब सर कहानी सुना रहे थे, तो मुझे बहुत बुरा लगा कि हमने इतनी मेहनत से 261 पक्षी बनाए लेकिन फिर भी वो नहीं बची। यदि सडाको ठीक होती तो मैं उसके बारे में कहानी लिखती। मुझे सडाको की बहुत ज़्यादा याद आती है। सडाको ठीक हो जाती तो वह स्कूल जाकर रेस लगाती और पढ़ती भी। जो हमने पक्षी बनाए थे, वो हमने सडाको के लिए बनाए थे। अब वो हमने सडाको की याद में अपनी कक्षा में टाँग दिए हैं।

मानवी

प्रिय सडाको,

सडाको मुझे तुम बहुत अच्छी लगती हो। हमारे सर हम सभी बच्चों को तुम्हारी कहानी सुनाते हैं। तुम मैदान में बहुत तेज दौड़ती हो मगर मुझे इस बात का दुख हुआ कि तुम्हें दौड़ते समय चक्कर आ गए और तुम गिर गई। तुम्हारे सर बहुत दयालु थे। उन्होंने तुम्हें उठाया और अस्पताल में भर्ती करा दिया। अगर तुम्हें ठीक होना है तो तुम हरी सब्जियाँ खाओ। उससे तुम बहुत जल्दी ठीक हो जाओगी। मुझे तो बुखार हो गया था। मैंने हरी सब्जियाँ खाई और ठीक हो गई। तुम्हारे माता-पिता का क्या नाम है? तुम्हें चित्र बनाना पसन्द है? मुझे तो बहुत पसन्द है। तुम्हारी दोस्त चुजुको ने तुमसे कहा कि अगर तुम एक हजार चिड़िया बनाओगी तो तुम जल्द ही ठीक हो जाओगी। हम भी तुम्हें ठीक करने के लिए बहुत सारी चिड़िया बना रहे हैं। तुम्हें किमोनो पहनना पसन्द है? जब तुम अस्पताल में थी तो नर्स ने तुम्हें किमोनो पहनाया। तुम किमोनो में कैसी लग रही थीं? हमारे देश में कोई किमोनो ड्रेस नहीं पहनता। मैं तो जींस-टॉप, स्कर्ट-टॉप व फ्रॉक पहनती हूँ। मुझे कभी-कभी तो ऐसा लगता है, जैसे मैं तुमसे बातें कर रही हूँ। क्या तुम्हारी सबसे पक्की दोस्त चुजुको हैं? हमारे गाँव में तो बारिश हो रही है। क्या तुम्हारे गाँव में बारिश हो रही है? क्या तुम्हारे विद्यालय में पेड़-पौधे हैं? मेरे विद्यालय में तो बहुत सारे पेड़-पौधे हैं। तुम्हें कौन-सा खेल पसन्द है? मुझे तो कैरम बोर्ड खेलना बहुत पसन्द है। तुम्हारे अध्यापक का क्या नाम है? मेरे अध्यापक का नाम तो अरविन्द कुमार सिंह हैं। हमने तुम्हें ठीक करने के लिए 261 चिड़िया बना ली हैं। तुमने अब तक कितनी चिड़िया बना ली हैं? मेरे पत्र का जवाब जल्दी भेजना।

तुम्हारी दोस्त
नैना



प्रिय केनजी,

मुझे बहुत दुख है कि तुम्हें ब्लड कैंसर है। हम तुमको और सडाको को बचाने के लिए कागज़ की चिड़िया बना रहे हैं। मुझे यह भी पता चला है कि तुम्हें यह बीमारी हिरोशिमा में गिरे उसे एटम बम की वजह से हुई थी जिसका नाम लिटिल बॉय था।

हमने तुमको बचाने के लिए 261 चिड़िया बना ली हैं। मुझे यह बात भी पता है कि तुम्हारी नानी के अलावा तुम्हारा इस दुनिया में कोई भी नहीं है। वह तुमसे हफ्ते में एक बार मिलने आती हैं।

हम तुम्हें और सडाको को बचाने के लिए पूरी मेहनत करेंगे। जल्दी ही हम तुमको कागज़ के पक्षी भेज देंगे।

मेरे पत्र का जवाब ज़रूर देना
तुम्हारा दोस्त
देवराज



मैंने ख़त लिखा



मेरे घर का सबसे पुराना सदस्य

लालटेन

संगम

चौथी 'ब', जिंगल बेल स्कूल
फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

मेरे घर पर एक पुराना लालटेन है जिस पर जंग लग चुकी है। मैंने पापा से पूछा कि यह लालटेन कितना पुराना है। तो उन्होंने बताया कि यह चालीस साल पुराना है। उन्होंने कहा कि यह केवल धीमी रोशनी में टिमटिमाती एक वस्तु नहीं है, बल्कि हमारे बचपन की यादों की रोशनी है। आज बिजली के बल्बों और ट्यूबलाइटों ने हमारे घरों पर कब्ज़ा कर लिया है। लेकिन कभी यह लालटेन हमारी रातों की साथी हुआ करती थी। गाँव में जब दिन ढलता था तो यह लालटेन हमारे आँगन को रोशन कर दिया करती थी। घर के सभी लोग इसके आसपास बैठकर बातें करते और मैं दादी-नानी से कहानियाँ सुना करता था। हमारी पढ़ाई भी इसी रोशनी में हुआ करती थी।

अपने बचपन को याद करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि लालटेन की रोशनी में अपनापन-सा लगता है। जब बिजली चली जाती थी तो अँधेरा डरावना नहीं लगता था क्योंकि लालटेन हमारे साथ हुआ करती थी। यह सिर्फ रोशनी का साधन नहीं, बल्कि हमारे जीवन का हिस्सा हुआ करती थी।



पीयूष मलिक

पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय शक्तिफार्म-3
सितारगंज, ऊधमसिंह नगर

यह बात है 1984 की जब मेरे पापा का जन्म हुआ था। इक्कीस दिनों के बाद उनके नामकरण के दिन यह लालटेन उनके पापा लेकर आए थे। उन दिनों मेरे पापा झोपड़ी में रहा करते थे। दादाजी लालटेन इसीलिए लाए थे क्योंकि उनके घर में बिजली नहीं थी। यह लालटेन हलके हरे रंग की है। जब मेरे पापा बारह साल के हुए तब तक इसी लालटेन को जलाकर पढ़ाई किया करते थे। यह लालटेन अभी भी हमारे घर के एक छोटे-से डिब्बे में रखी है। अभी भी जब पापा इस लालटेन को देखते हैं तो यही कहते हैं कि जब मैं छोटा था तब इसी लालटेन को जलाकर पढ़ाई किया करता था।



फोटो: पीयूष मलिक

विकास

आठवीं, समूह इन्द्रधनुष, दिगन्तर विद्यालय, जयपुर, राजस्थान

मेरे घर में आज भी दो ऐसी चीज़ें सुरक्षित रखी हुई हैं, जो हमारे परिवार की अमूल्य धरोहर हैं — एक पुरानी लालटेन और एक तलवार। इन दोनों का सम्बन्ध मेरे परदादा से है।

बहुत समय पहले जब बिजली गाँवों तक नहीं पहुँची थी, तब लोग रात में रोशनी के लिए लालटेन का प्रयोग करते थे। मेरे परदादा जब भी अँधेरे में खेतों की ओर जाते, पशुओं को देखने जाते या घर के बाहर किसी काम से निकलते, तो हमेशा लालटेन अपने साथ रखते थे। एक रात परदादाजी लालटेन लेकर खेत की ओर जा रहे थे। रास्ते में एक पागल कुत्ते ने उन्हें काट लिया। वे बेहोश होकर वहीं गिर पड़े। जब वे देर रात तक घर नहीं लौटे, तो सब लोग चिन्तित हो गए। तभी दादाजी को दूर से चमकती हुई एक रोशनी दिखाई दी। वह रोशनी उसी लालटेन की थी। दादाजी तुरन्त वहाँ पहुँचे और परदादा को डॉक्टर के पास ले गए। इस तरह लालटेन ने परोक्ष रूप से उनकी जान बचाई। आज वही लालटेन हमारे घर की बुखारी में सहेजकर रखी हुई है। यह बात दादाजी ने हमें बताई।

मेरे घर में एक पुरानी तलवार भी है। परदादा इसे हमेशा अपने पास रखते थे। कहते हैं कि एक बार जब वे खेतों में थे, तब अचानक लकड़भग्गों का झुण्ड उनके सामने आ गया। उन्होंने हिम्मत दिखाते हुए तलवार उठाई और उन्हें डराया। लकड़भग्गे भाग गए और वे सुरक्षित घर लौट आए।



हीना ठाकुर
बारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

पुराने ज़माने में सब जगह लाइट नहीं होती थी। तब इस लैम्प का प्रयोग रोशनी के लिए किया जाता था। लैम्प को जलाने के लिए इसमें मिट्टी का तेल डाला जाता था। और बत्ती लगाकर इसे जलाया जाता था। मेरी दादीजी बताती हैं कि पुराने समय में जब लाइट नहीं होती थी तो तब हम इसी की रोशनी में रात का खाना पकाते थे। और अन्य काम भी इसकी सहायता से करते थे। मेरे पिताजी इसी लैम्प की रोशनी से रात में पढ़ाई करते थे। लाइट न होने के कारण यह लैम्प पुराने समय में बहुत उपयोगी था। अब हर घर में बिजली की सुविधा होने से इस लैम्प का उपयोग नहीं होता। परन्तु पहले इसका खास महत्व था।

मेरा
पन्ना

मेरे घर का सबसे पुराना सदस्य

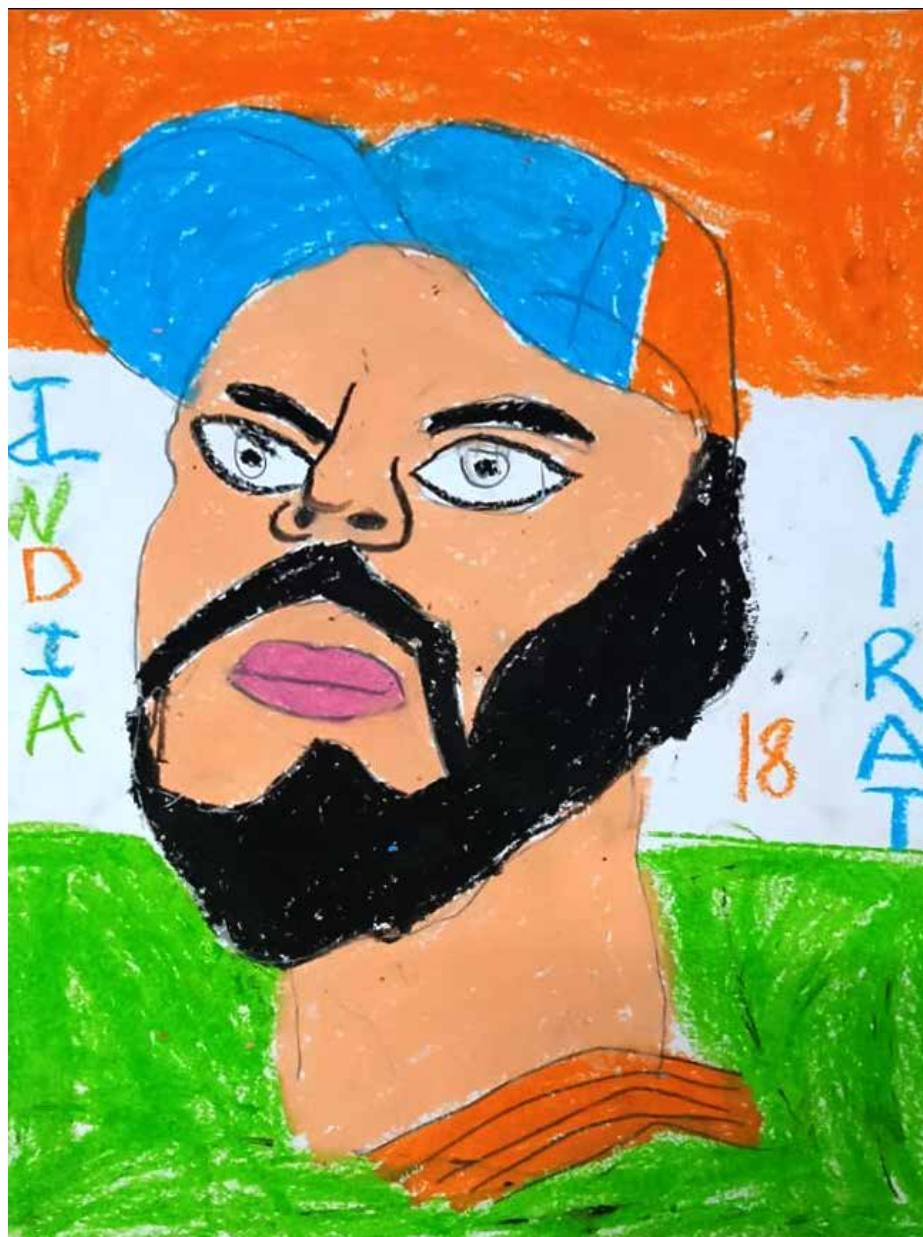




जब मैंने देखा पहला लाइव मैच

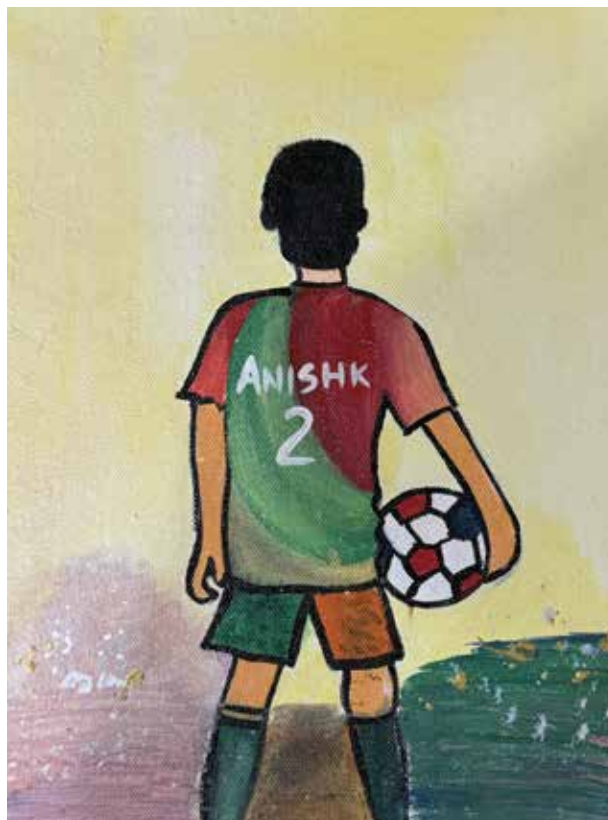
अयान चन्द्र
सातवीं, पाथवेज स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

20 अप्रैल 2025 को मैं लाइव आईपीएल मैच देखने गया। यह मैच दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में हो रहा था। यह मैच दो मज़ेदार टीमों के बीच होना था — कलकत्ता नाइट राइडर्स और दिल्ली कैपिटल्स। मैं अपने पिताजी और एक अच्छे दोस्त के साथ यह मैच देखने गया। स्टेडियम जाने में बहुत देर लगी क्योंकि वह हमारे घर से बहुत दूर था। जब हम वहाँ पहुँचे तो स्टेडियम के बाहर बहुत भीड़ थी। गाड़ी से उतरते ही हमें बहुत सारी खाने-पीने की दुकानें दिखीं। लोग बहुत सारी चीज़ें खा रहे थे। इस कारण हमें अन्दर जाने में और भी समय लगा।



चित्र: अर्जुन चढा, तीसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

हमने भी उन दुकानों से कुछ खाने का सामान खरीदा। अन्दर जाते-जाते हमें काफी रौनक दिखी। बच्चे बलून वाले के पीछे-पीछे भाग रहे थे और उनके माता-पिता उनको रोकने की कोशिश कर रहे थे। ऐसा लग रहा था कि यह क्रिकेट स्टेडियम नहीं कोई मेला हो। अन्दर जाने के बाद गेट के एकदम सामने टीमों की टी-शर्ट और टोपियाँ मिल रही थीं। बहुत



लोगों ने उसे खरीदकर अपने कपड़ों पर पहन लिया। अन्दर जाने की लाइन बहुत लम्बी थी। पर कुछ ही देर बाद हम अन्दर पहुँच गए। क्रिकेट फील्ड देखते ही मेरा दिल धड़कने लगा। टीवी पर दिखने वाली छोटी-सी फील्ड को इतनी बड़ी देखकर मैं तो चौंक गया।

हम अपनी सीट पर बैठ गए और खिलाड़ियों का इन्तज़ार करने लगे। लोग अपनी-अपनी टीम के लिए चिल्ला रहे थे। दिल्ली की टीम टॉस जीत गई और उन्होंने बल्लेबाज़ी चुनी। यह पता चलते ही दिल्ली के लोग अपनी टीम के सपोर्ट में बड़े-बड़े बैनर लेकर खड़े हो गए। सभी खिलाड़ी एक-एक करके अपनी जगह पर खड़े हो गए। दिल्ली के दो बल्लेबाज़ आए और पूरा स्टेडियम उनके नाम से गूँजने लगा। के एल राहुल ने पहली ही बॉल पर छक्का लगाया तो सब लोग नाचने व गाने लगे। दोनों टीमों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। परन्तु अन्त में दिल्ली जीत गई। जीवन का यह मेरा पहला लाइव मैच था जो बहुत ही रोचक था। इस अनुभव को मैं कभी भुला नहीं सकता।



हम टी-20 वर्ल्ड कप जीते

सावर्णिका मनु

सातवीं, अक्ष पब्लिक स्कूल, पंतनगर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

2024 में भारत ने बारबाडोस में हुए रोमांचक फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को सात रनों से हराकर ट्रॉफी अपने नाम की। इस जीत के साथ ही भारत का 11 साल से चला आ रहा आईसीसी ट्रॉफी का सूखा भी खतम हो गया।

इस मैच का मेरा सबसे पसन्दीदा मूमेंट यह था — हार्दिक पांड्या गेंदबाज़ी कर रहे थे। उन्होंने एक वाइड फुल टॉस फेंकी, जिसे दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाज़ मिलर ने ज़ोरदार तरीके से सीधे मैदान के बीचोंबीच की ओर मारा। सूर्याकुमार यादव लॉन्ग-ऑफ से बाईं ओर दौड़े और गेंद को पकड़ लिया। लेकिन गेंद के साथ उनकी रफ्तार उन्हें बाउण्ड्री के पार ले जाने लगी, तो उन्होंने गेंद को हवा में उछाल दिया। और वापस मैदान में आकर गेंद को लपकते हुए शानदार कैच पकड़ा।





मालिनी
पाँचवीं, मुस्कान संस्था
भोपाल, मध्य प्रदेश

फ्रिसबी ने बदल दी मेरी ज़िन्दगी

मेरा नाम मालिनी है। मैं ओझा गोंड समुदाय से हूँ। मैं गौतम नगर में रहती हूँ। मुस्कान संस्था से जुड़ने से पहले मेरा जीवन बहुत कठिन था। मैं सुबह जल्दी उठकर अपनी माँ के साथ कबाड़ बीनने जाती थी और दिन के समय मन्दिर, आसपास के कॉलोनी और चेतक ब्रिज की तरफ खाना या पैसे माँगने जाती थी। मेरी बस्ती के कई बच्चे पढ़ने के लिए मुस्कान स्कूल जाते थे। मेरा भी पढ़ने का बहुत मन होता था। लेकिन मैं नहीं जा पाती थी।

फिर गम्भीर बीमारी के कारण मेरे पापा की मौत हो गई। तब मैं अपनी माँ और भाई-बहन के साथ मुस्कान के हॉस्टल में रहने के लिए आ गई। और इस तरह मेरी पढ़ाई की शुरुआत हुई। यहीं मैंने पहली बार फ्रिसबी नाम का खेल खेला। शुरुआत में मुझे कुछ समझ नहीं आता था। लेकिन धीरे-धीरे मैं सीख गई और

अब मुझे यह खेल खेलते हुए चार साल हो चुके हैं।

जब कोई मेरे खेल की तारीफ करता है तो मुझे अच्छा लगता है। जब दोस्त कहते हैं कि आपके थ्रो अच्छे हैं, आप कट अच्छा फेंकते हैं, आप गेम अच्छा चलाती हो, आप पास अच्छा देते हो तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। खेलने से मैं अपने आप को स्वस्थ महसूस करती हूँ और मेरा पढ़ाई में भी मन लगता है

यह खेल मुझे इसलिए अच्छा लगता है कि यह खेल मिक्स जेंडर खेल है और इससे बहुत कुछ सीखने को मिलता है। दूसरी मज़ेदार बात यह है कि खेल खतम होने के बाद जब हम स्प्रिट सर्कल में बैठते हैं तब अपन जो महसूस कर रहे हैं, अपने को अच्छा लगा, उस पर बात रख सकते हैं। स्प्रिट सर्कल के दौरान हम जीवन में जो भी उतार-चढ़ाव चल रहे हैं उसे भी रख सकते हैं। इस सब से मेरा कॉन्फिडेंस बढ़ा है और मुझे कभी निराशा भी नहीं होती।

जब मुझे पता चला कि लखनऊ में चिली-यो टूर्नामेंट होने वाला है तो मैंने उसकी तैयारी शुरू कर दी। मैंने बहुत प्रैक्टिस की। सबसे अच्छी बात यह लगी कि इस बार सिलेक्शन में कट, थ्रो, जम्प के अलावा इन सभी आयामों का भी ध्यान रखा गया कि आपका बिहेवियर कैसा है, आप टीम को कैसे चलाते हो, आप जीत के लिए खेलते हो या खेल भावना से खेलते हो।

जब टीम में मेरा सिलेक्शन हुआ तब मुझे ज़्यादा ही खुशी हुई कि मैं लखनऊ खेलने जा रही हूँ। मैं अपनी टीम की सबसे छोटी बच्ची थी। जब मैं पहली बार बड़े ग्राउंड पर गई तो देखा कि वहाँ देश भर से चौबीस टीमों आई हुई हैं। छह अलग-अलग ग्राउंड पर मैच चल रहे हैं और देश भर से लगभग 250 बच्चों ने पार्टिसिपेट किया है। यह दृश्य देखकर मुझे लगा कि मैं क्या ही कर पाऊँगी। मुझे डर लगने लगा क्योंकि मैं पहली बार इतना बड़ा टूर्नामेंट खेलने गई थी।

जब मैंने मैच खेलना शुरू किया तो खेलते-खेलते मेरा डर कम हुआ। मेरा मनोबल बढ़ा और हमारी टीम ने बेस्ट परफॉर्मेंस दिया। जब हम पहला मैच जीते तब मुझे लगा कि नहीं मैं भी कुछ कर सकती हूँ। मैं भी अपनी टीम को जीतने में मदद कर सकती हूँ। इससे मेरा मनोबल दुगुना हो गया और खेलते-खेलते एक के बाद हम 7 में से 6 मैच जीते। इससे मुझमें अपने खेल के प्रति, अपनी टीम के प्रति एक भरोसा पैदा हुआ। इस टूर्नामेंट में टीम को टी-शर्ट दी गई।

जब मैं वापस आई तब मेरे दोस्त जो मेरे साथ पढ़ते हैं, उन्होंने मेरी बहुत तारीफ की। मेरे घरवाले भी मुझे सम्मान देने लगे और बस्ती के लोग भी मेरी बहुत तारीफ करते हैं। मुझे लगता है कि मैं फ्रिसबी में आगे बढ़ सकती हूँ। यह खेल मेरी प्रेरणा बन गया है। अब मैं खुद पर विश्वास करती हूँ।

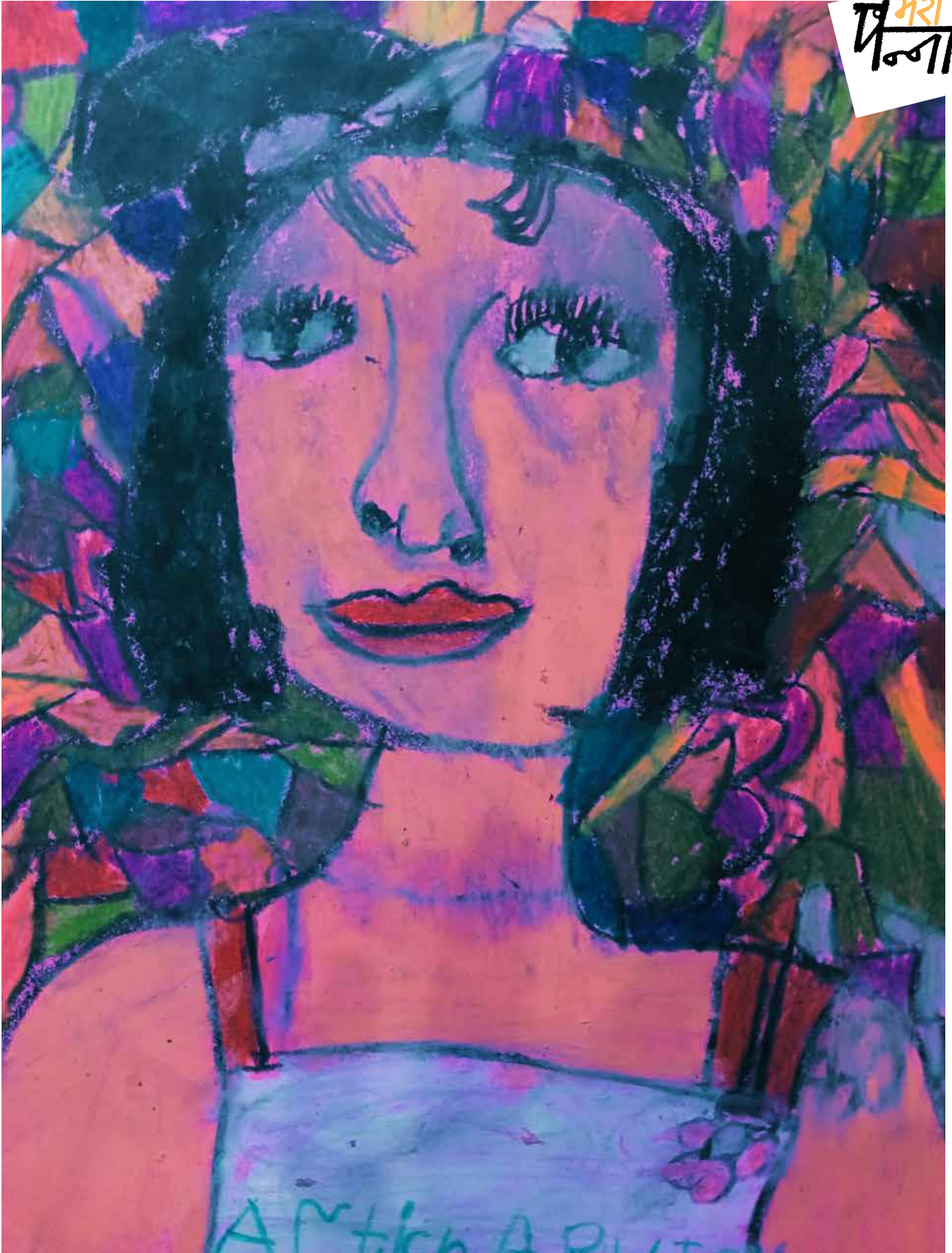




अन्तर ढूँढो
3-4-6

एक जैसे दिखने वाले इन दोनों चित्रों में पाँच अन्तर हैं, तुमने कितने ढूँढे?





चित्र: अर्विश, दूसरी, अजीम प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान

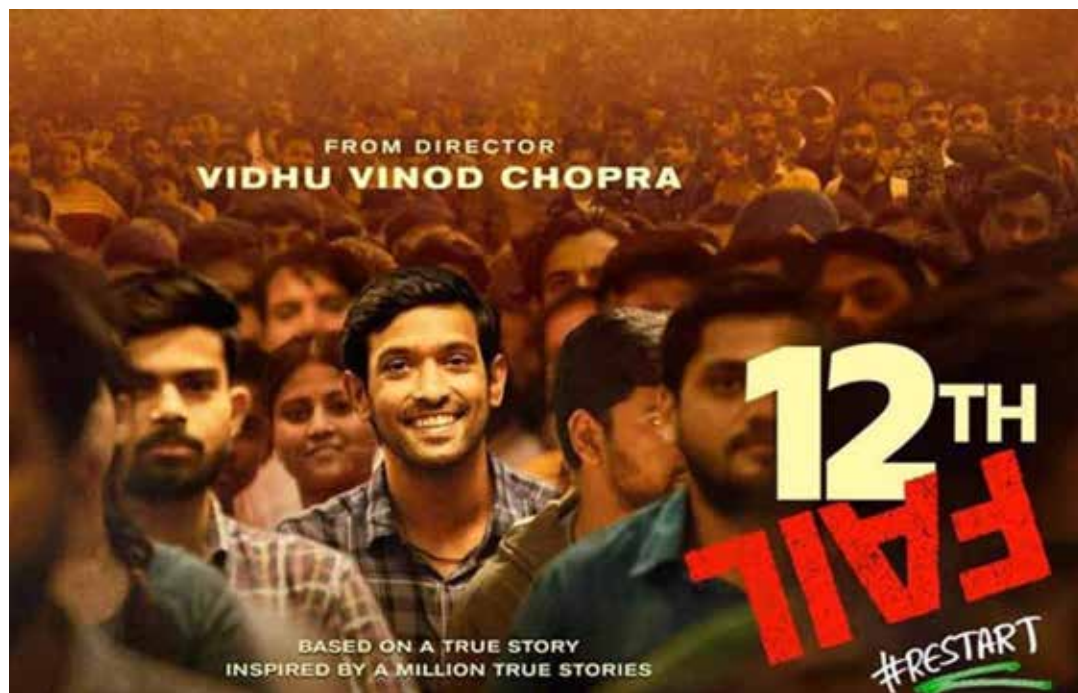
बातें फिल्मी

कुछ दिनों पहले मैंने घर पर अखबार में बार-बार फिल्म 12वीं फ़ेल और इसके अनिभेता विक्रान्त मैसी की तस्वीरें और खबरें देखीं। इससे मुझे इस फिल्म को देखने की बहुत इच्छा हुई। जब यह ओटीटी पर आई तो मैंने इसे देखा।

फिल्म में छोटे कस्बे का लड़का दिल्ली आता है ताकि वह पुलिस अफसर बने। रास्ते में उसे बहुत मुश्किलें आती हैं क्योंकि उसे देश की सबसे कठिन परीक्षा सिविल सर्विस एग्जाम पास करनी होती है। कई बार असफल होने के बावजूद वह हार नहीं

मानता। मुझे यह फिल्म इसलिए बहुत अच्छी लगी क्योंकि इसने दिखाया कि अगर हम अपने सपने पर विश्वास करें और उन्हें पूरा करने के लिए मेहनत करें तो कोई मुश्किल हमें हरा नहीं सकती। यह कहानी मुझे और मेरे दोस्तों को सिखाती हैं कि हमें भी अपने सपनों पर भरोसा करना चाहिए। लक्ष्य पाने वालों से प्रेरणा लेनी चाहिए और समाज व देश को बदलने की कोशिश करनी चाहिए ताकि और भी लोगों को हमारी कहानी से हिम्मत मिले।

फिल्म को देखते हुए मुझे लगा कि यह सिर्फ एक परीक्षा की कहानी नहीं है, बल्कि हर उस इन्सान की कहानी है जो कुछ बड़ा करने का सपना देखता है। इसलिए 12वीं फ़ेल सिर्फ एक फिल्म नहीं है बल्कि उत्साह दिलाने वाला अनुभव है।



12वीं फ़ेल

निर्देशक: विधु विनोद चोपड़ा
निर्माता: विधु विनोद चोपड़ा
रिलीज सन: अक्टूबर, 2023

योग्य आनन्द
पाँचवीं 'सी', शिव नाडर स्कूल
नोएडा, उत्तर प्रदेश

फिल्म की कहानी भविष्य के साल 2838 की है। जहाँ प्रकृति और ईश्वर का अस्तित्व बिलकुल खतम हो गया है। “कॉम्प्लेक्स” ही है सबकी चाहत और सबका भगवान। वहाँ “सुप्रीम यास्कन” शासक है, जो भगवान-सा अमर होना चाहता है।

जिस तरह फिल्म में दिखाया गया है भविष्य में दुनिया कैसी होगी – यह कल्पना वाकई लाजवाब और कमाल की है। देखकर रोंगटे खड़े हो जाते। हर जगह सुखार, बंजरता, नास्तिकता और बरबादी। काशी जैसे शहर से भी भगवान का वजूद खतम हो गया है।

कहानी रोचक तब हो जाती है जब सुमति को पता चलता है कि उसके गर्भ में भगवान विष्णु का दसवां अवतार ‘कल्कि’ ही है। और अश्वत्थामा जब उसे बचाने निकला तब से कहानी का असल संघर्ष शुरू होता है।

फिल्म के शुरुआती हिस्से के कुछ सीनों में अधिक व्याख्या है जो थोड़ा बोरिंग लगती है। वैसे बाद में फिल्म कमाल की है। फिल्म का सबसे शुरुआती हिस्सा मेरा पसन्दीदा है, जहाँ महाभारत का आखिरी दृश्य और उसके बाद यह दिखाया गया है कि कैसे आज-कल की दुनिया में इन्सानियत खतम हो रही है। ये दोनों सीन ऐसे लगते हैं जैसे फिल्म की जान हों।

फिल्म देखने के बाद यही महसूस होता कि चाहे पाप कितना भी भारी क्यों न हो जाए जीत इन्सानियत की ही होगी। हर युग में जब सब कुछ खतम हो जाता है तो कहीं न कहीं जीवन फिर जन्म लेता है। और यही एहसास इस फिल्म को मेरी पसन्दीदा मूवी बनाता है।



कल्कि 2898 AD

निर्देशक: नाग अश्विन

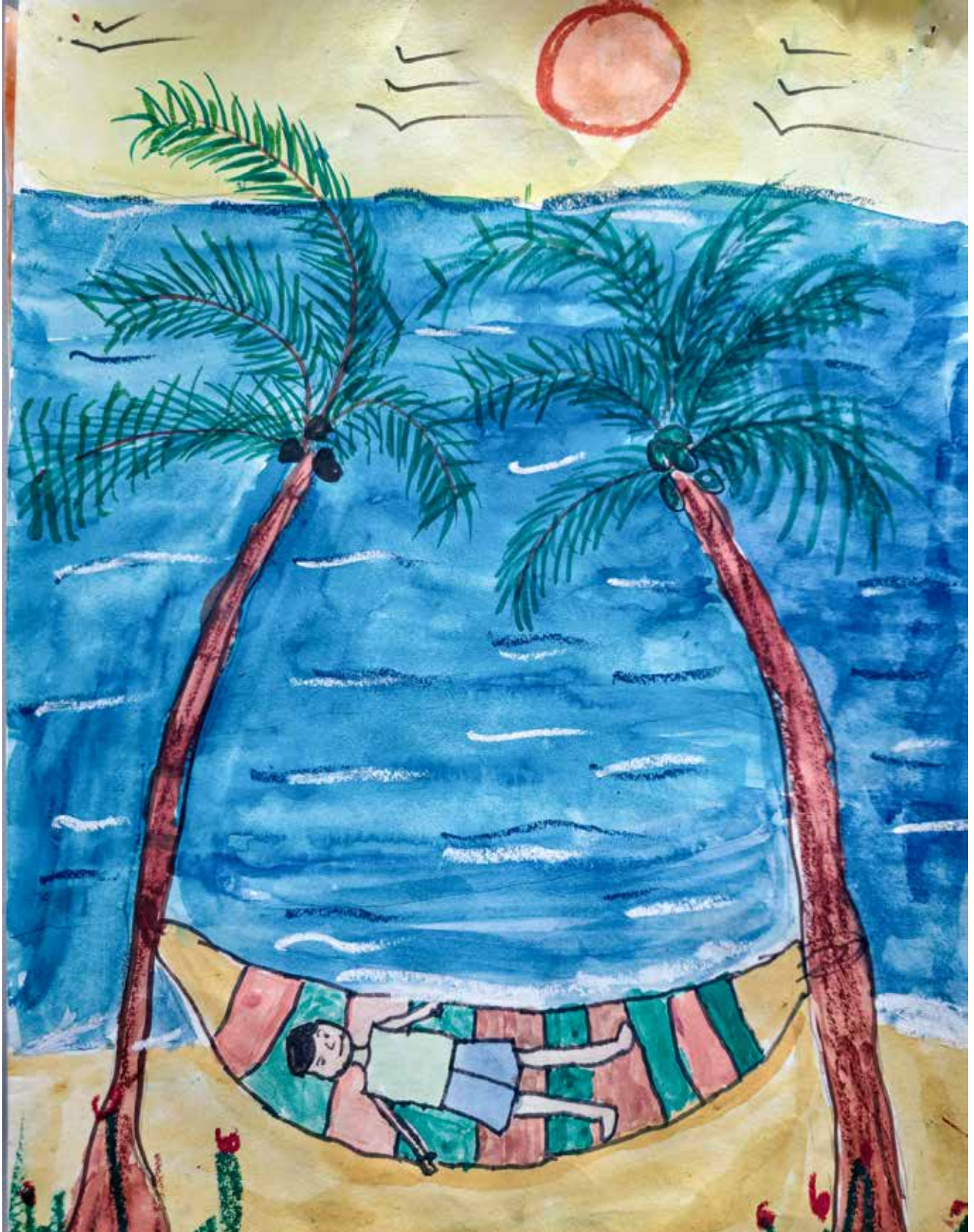
निर्माता: प्रियंका दत्त, अश्वनी दत्त, स्वप्ना दत्त

रिलीज तारीख: 27 जून, 2024

पीहू कुमारी

आठवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

पहली-पहली बार



चित्र: कबीर चश्मावाला, तीसरी, बाल भवन, वडोदरा, गुजरात

एक दिन था जब मैं पहली बार फोन पे का इस्तेमाल करके कुछ सामान दुकान से लेने वाली थी। उन्हाले की छुट्टियाँ थीं। तभी मेरे पापा ने मुझे फोन-पे कैसे इस्तेमाल करते हैं – यह सब सिखाया था। उसे याद रखकर मैं दुकान गई।

दुकान जाते वक्त मेरे दिमाग में बहुत सारे सवाल आए। क्या होगा? ज़्यादा पैसे तो नहीं जाएँगे? इन सवालों पर विचार करते-करते मैं दुकान पहुँची। उनसे मैंने सामान लिया और पूछा, “कितने रुपए हुए?” उन्होंने कहा, “सत्तर रुपए हो गए।” मैंने कहा, “ठीक है। आपका स्कैनर कहाँ है?” उन्होंने हैरानी से कहा, “फोन-पे चलाना तुम्हें आता है?” फिर उन्होंने मेरी तारीफ की। मुझे बहुत अच्छा लगा कि कोई मेरी तारीफ कर रहा है। मैंने मोबाइल का पासवर्ड खोला और फोन-पे ओपन किया। पर ये क्या, इंटरनेट गायब। यह देखकर तो मेरी जान ही निकल गई थी। थोड़ी देर बाद इंटरनेट आ गया। पर इस चक्कर में मैं मोबाइल का पासवर्ड ही भूल गई। थोड़ा दिमाग पर ताण (ज़ोर) दिया तब याद आया।

फिर मैंने पासवर्ड डाला और फोन-पे से पैसे ट्रांसफर किए। जब तक पैसे ट्रांसफर नहीं हुए थे मुझे चैन नहीं मिल रहा था। और फाइनली पैसे ट्रांसफर हो गए। और अब मैं आराम से बिना किसी चिन्ता के पैसे ट्रांसफर करती हूँ।



मोल-भाव

राधिका यादव

आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला
जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश

जब मैं पहली बार अकेली दूध लेने गई थी तो वहाँ पर बहुत भीड़ थी। मुझे बहुत समय तक इन्तज़ार करना पड़ा। एक लीटर दूध की कीमत पचास रुपए थी। मैंने कहा, “मैं तो चालीस रुपए दूँगी।” वह कहने लगे, “ठीक है, गुड़िया। तुम चालीस रुपए ही दे दो।” और मैं दूध लेकर खुशी-खुशी वापस आ गई।



फोन पे का इस्तेमाल

श्रीजा बाबोड़े

आठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चित्र: अमांडा मोयोंग, सातवीं, वी. के. वी.,
सुनपुरा, लोहित, अरुणाचल प्रदेश



सब्ज़ी मण्डी

उत्कर्ष यादव
चौथी 'ब', जिंगल बेल स्कूल
फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

जब मैं पहली बार सब्ज़ी लेने गया तो थोड़ा डर लग रहा था। लेकिन उत्सुकता भी थी। जब मैं सब्ज़ी मण्डी पहुँचा तो वहाँ की भीड़ और रंग-बिरंगी सब्ज़ियों ने मुझे आकर्षित किया। मैंने दुकानदार से बात की और अपनी ज़रूरत की सब्ज़ियों के बारे में पूछा। उन्होंने मुझे सही दाम बताया और मैं उन्हें खरीदकर खुश हुआ।

जब मैं बिजली का बिल जमा करने गया तो वहाँ की प्रक्रिया थोड़ी मुश्किल लगी। लेकिन वहाँ के एक कर्मचारी ने मुझे सही गाइड किया तो फिर मैंने बिल जमा कर दिया। इन अनुभवों से समझ आया कि अकेले काम करना और लोगों से बात करना कितना महत्वपूर्ण है।



चित्र: करण, छठवीं, कन्नड़ा भवन हाई स्कूल, मुम्बई, महाराष्ट्र (स्लैम आउट लाउड संस्था से प्राप्त)



ताज़ी सब्जियों की पहचान

आरणा वसान

छठवीं, पाथवेज स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

पहली-पहली बार



चित्र: झरना, चौथी, आरोही बाल संसार, प्यूडा, नैनीताल, उत्तराखण्ड

आज मेरी ज़िन्दगी का ग्रैंड शॉपिंग डे था। पहली बार मैं अकेली खरीददारी करने निकली थी। दिल की हालत वैसी ही थी जैसे एग्जाम देने के लिए जाते समय होती है। रास्ते में मैं बस यही सोच रही थी कि भगवान, बस सब्जीवाला मुझे बेवकूफ ना बनाए। मैं पहली दुकान पहुँची और बोली, “भैया आधा किलो आलू कैसा दिया?” दुकानदार ऐसे घूर रहा था जैसे पूछ रहा हो इतनी बड़ी हो गई और अभी तक आलू का दाम भी नहीं पता। मैंने भी सोचा, “अरे भाई, प्रैक्टिस यहीं से शुरू होगी!”

आगे बढ़ी तो सब्ज़ियाँ इतनी चमकदार दिखीं कि मैं कन्फ्यूज़ हो गई कि कौन-सी सब्ज़ियाँ ताज़ी हैं। टमाटर दबाने लगी तो बगल वाली आंटी बोली, “बिटिया ऐसे दबाते नहीं है। देखकर पहचानो।” मैं मुस्करा दी और मन में बोली, “आंटीजी गाइडेड टूर चाहिए तो पैसे चार्ज कर लेना।”

फिर किराने की दुकान पहुँची। वहाँ तो मेरा दिल ही फिसल गया। बिस्कुट,

नमकीन, चॉकलेट — सब ऐसे बुला रहे थे जैसे कह रहे हों, हमें भी ले चलो। मैंने मन ही मन सोचा कि आज तो मैं खुद बॉस हूँ और टोकरी में डाल दिया।

असल कॉमेडी सीन हुआ बिलिंग काउंटर पर। कुल बिल बना दो सौ दस रुपए। मैंने पाँच सौ रुपए का नोट थमाया। दुकानदार ने छुट्टे दिए और मैं उन्हें ऐसे गिन रही थी जैसे आरबीआई की ऑडिटर हूँ। घर आकर मम्मी को जब बताया तो बोली, “वाह! अब तो तू शॉपिंग क्वीन बन गई।” मैंने सोचा कि अगर पहली बार इतना मज़ा आया है तो अगली बार तो मैं मॉल पर धावा बोलूँगी।



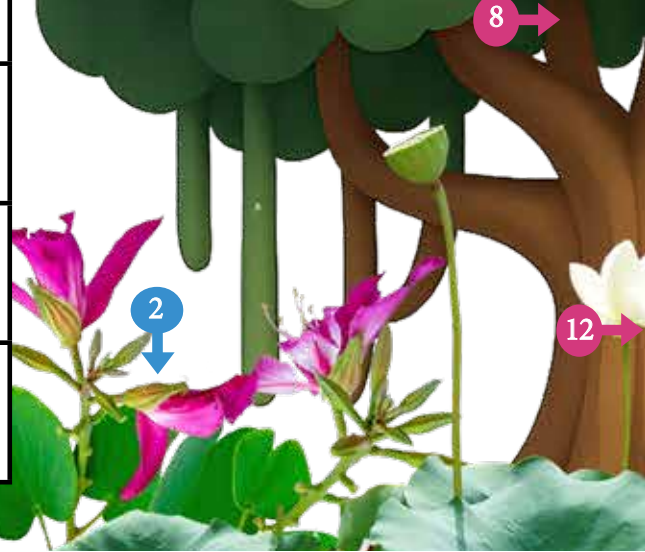


चित्र पहेली

दिए हुए बॉक्स में 1 से 6 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 6 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। इतना कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

सुडोकू 90

4	1	5	3		2
		2	4		5
	2		6	4	3
	6				1
2	4	3	1		6
	5	6			





दो महीने पहले की बात है। घर में पैसों से जुड़ी कुछ दिक्कतें चल रही थीं। तब मैंने दो महीनों तक एक सपना लगातार देखा। और उस सपने में जो था उसका नाम 'मास्क मैन' था। और वो मुझे बहुत परेशान करता था। और वो मेरी ज़िन्दगी का सबसे बुरा सपना था।



मास्क मैन

तेजस्विनी दुबे
सातवीं 'डी', नर्मदा वैली इंटरनेशनल
स्कूल, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश



चित्र: प्रज्ञा, दिगन्तर स्कूल, जयपुर, राजस्थान

ज़ॉम्बी

प्रीति लकड़ा
सातवीं, मंजिल संस्था, दिल्ली

मैं स्कूल गई तो मेरी दोस्त ने बताया कि उसने एक डरावना सपना देखा। इतना डरावना सपना उसने आज तक नहीं देखा था। वो इतना डर गई थी कि काँपने लगी थी। मैं बताती हूँ कि दरअसल उसने सपने में क्या देखा था।

उसने देखा कि वो सुबह नहा-धोकर तैयार होकर स्कूल पहुँची। तब हमारे पेपर चल रहे थे। हम सभी रीवाइज़ कर रहे थे। मैं होस्टल से अभी आई नहीं थी। तभी हमारी क्लास में एक लड़की आई। उसकी बॉडी में खून ही खून लगा था। उसने अपनी बॉडी को पूरा 360 डिग्री से मोड़ लिया। तब पता चला कि वह ज़ॉम्बी बन चुकी थी।

मेरी दास्त किसी तरह बचकर अपने घर पहुँची। तब तक ज़ॉम्बी वहाँ नहीं आई थी। फिर मैंने कहा कि मेरे पापा की स्कूटर से किसी सेफ जगह पर चलते हैं। उसके माता-पिता ने भी कहा तुम दोनों कहीं सेफ जगह पर चले जाओ। और फिर मैं स्कूटर चला रही थी।



काला आसमान

सना माकिन

आठवीं, पाथवेज स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मैंने भी एक ऐसा सपना देखा था जो पहले बहुत सुन्दर था, लेकिन बाद में थोड़ा डरावना भी हो गया। यह सपना मुझे आज तक याद है।

सपने में मैं एक बड़े और सुन्दर बगीचे में थी। चारों तरफ रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। हवा ठण्डी और ताज़ी थी। पक्षियों की मीठी आवाज़ सुनाई दे रही थी। तितलियाँ फूलों पर उड़ रही थीं। छोटे-छोटे जानवर खेल रहे थे और सब कुछ बहुत शान्त और सुन्दर लग रहा था। मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई। ऐसा लगा कि मैं किसी जादुई जगह पर पहुँच गई हूँ। मैंने फूलों को छुआ और उनकी खुशबू महसूस की। मेरा मन बहुत खुश और शान्त था। मैं वहाँ समय बिताना चाहती थी और उस जगह को छोड़ना नहीं चाहती थी।



चित्र: प्रिया कुमारी, परिवर्तन सेंटर, नारायणपुर, सिवान, बिहार

लेकिन अचानक सपना बदल गया। आसमान काला हो गया और बगीचा अँधेरे में डूब गया। पक्षियों की आवाज़ बन्द हो गई और पेड़ डरावने लगने लगे। चारों तरफ अजीब आवाज़ें आने लगीं। मुझे लगा कि कोई मेरा पीछा कर रहा है। मैं डर गई और भागने लगी। मेरा दिल बहुत तेज़ी-से धड़कने लगा। मैं घबराई हुई थी और नहीं जान पा रही थी कि अब मुझे क्या करना चाहिए। तभी मेरी नींद खुल गई और मैं समझ गई कि यह सिर्फ सपना था।





अम्बेडकर जयन्ती पर एक डिस्प्ले

सोनू साहू सिंह
नौवीं, कथा कानन लाइब्रेरी एवं संसाधन केन्द्र
नगांव, असम



हमारी लाइब्रेरी में अम्बेडकर जयन्ती पर एक डिस्प्ले लगाया गया था, जो जातिवाद और भेदभाव के बारे में था। उसमें एक सवाल पूछा गया था कि क्या पीने के पानी का पात्र भेदभाव का कारण बन सकता है? इस पर मैं अपना अनुभव लिखना चाहता हूँ।



हाँ, बन सकता है। जब हम किसी समारोह या काम में किसी को कप में और किसी को पेपर कप में पानी देते हैं, तो यह भेदभाव होता है। एक बार मेरे घर में एक दादी आई थीं जो मुसलमान थीं। उन्हें बहुत भूख लगी थी। माँ ने उन्हें खाना और पीने का पानी दिया। जब दादी चली गई, तो माँ ने वह थाली मुझसे उठवाई और फिर घर में पानी छिड़का। मुझे तब इतना एहसास नहीं था, लेकिन आज यह घटना याद आ गई।

मेरी माँ जब दूसरों के घरों में काम करती थीं, तो उन्हें अलग थाली में खिलाया जाता था।

यह भेदभाव का एक रूप है। बाबा साहेब अम्बेडकर ने समाज की कल्पना सीढ़ी की तरह की थी, जहाँ अलग-अलग पायदानों पर लोग खड़े होते हैं। इस सीढ़ी में जो सबसे ऊपर है, वह नीचे वालों पर जुल्म करता है। माँ ने भेदभाव झेला था, लेकिन वे समाज के बनाए उस नियम को निभा रही हैं। वे संविधान के कर्तव्यों का पालन नहीं कर रहीं, लेकिन अधिकारों का पूरा फायदा उठा रही हैं। मुझे यह सब देखकर बुरा लगता है, लेकिन मैं माँ को कुछ कह नहीं पाता।





नवमी में पूरी-हलवा

अंजीत रोकाया
तीसरी, विद्या विकास हाई स्कूल
बेंगलुरु, कर्नाटका



चित्र: आयुष्मान भट्ट, पाँचवीं,
सन वैली स्कूल, देहरादून,
उत्तराखण्ड

एक दिन पहले रामनवमी थी। अपनी बहन के साथ मुझे भी ऊपर फ्लैट वाली आंटी ने खाने पर बुलाया था। मैं वहाँ अकेला लड़का था। बाकी सब लड़कियाँ थीं। हमें खाने में पूरी, सब्जी और हलवा मिला। साथ ही सौ रुपए और एक रुमाल भी। पैसे मम्मी ने ले लिए। मेरे पास बस रुमाल बचा।

मुझे रुमाल बहुत पसन्द आया। इतना मुलायम और छोटा। मेरे जींस की जेब में पूरी तरह से फिट होता। जैसे मेरे लिए ही बना हो। उस पर नीले फूल की ड्राइंग भी थी। मैंने नीले फूल कभी नहीं देखे। रुमाल पर वे कमाल दिख रहे थे। मुझे असली नीले फूल देखने का मन होने लगा।

रुमाल को आए एक दिन भी नहीं हुआ था। हमारी गली के कुत्ते की आँख के नीचे न जाने कहाँ से दो कीड़े आ जमे। मैंने उसे कितनी बार कचरे के ढेर के पास सोने से मना किया है। पापा ने कहा कि कीड़े उसका खून चूस रहे हैं। और उसे दर्द हो रहा है। उसकी आँखों के नीचे आँसू की लाइन बह-बहकर सूख गई थी।

मैंने पापा से उसे बचाने को कहा। पापा ने मुझसे कोई कपड़ा माँगा। मेरे पास कोई कपड़ा नहीं था। फिर मुझे रुमाल की याद आई। मुझे रुमाल देने में हिचक हो रही थी। अब तक के सारे रुमाल मम्मी ने रद्दी कपड़े से काटकर बनाए थे। ये मेरा पहला असली रुमाल था। पर कुत्ते को रुमाल की ज़्यादा ज़रूरत थी।

मैंने रुमाल पापा को दे दिया। पापा ने रुमाल को आधा मोड़ा और कुत्ते की आँख से कीड़े निकाल दिए। कुत्ते ने ज़रा भी शोर या हलचल नहीं की। कीड़ों के निकलते ही उसकी आँखें थोड़ी बड़ी हो गईं। चमकने भी लगीं। अपनी जीभ बाहर कर वह दौड़ गया।

मेरे रुमाल पर खून के निशान लगे थे। नीले फूलों के साथ वे लाल गुलाब की तरह दिख रहे थे।

किताबें

कुछ

कहती

हैं...

द जंगल बुक
लेखक: रुडयार्ड किपलिंग

गुनगुन
सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल
बाड़मेर, राजस्थान



यह किताब तो आप सबने कभी ना कभी पढ़ी होगी। इसमें एक लड़का होता है। उसका नाम मोगली होता है। उसके कितने दोस्त हैं? 1, 2, 3 या 4-5 नहीं, बल्कि पूरा जंगल। पर वह एक जानवर से डरता है, वो है शेर खान। इस बुक के

कई पार्ट हैं। जब मैं उन्हें पढ़ती हूँ तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। मुझे भी जंगल में रहने का मन करता है। पेड़-पौधे सबसे ज़्यादा अच्छे लगते हैं। वो झरना, उसमें बहने वाले पानी की आवाज़ में एक सुकून है। तुम भी पढ़ना जंगल बुक।

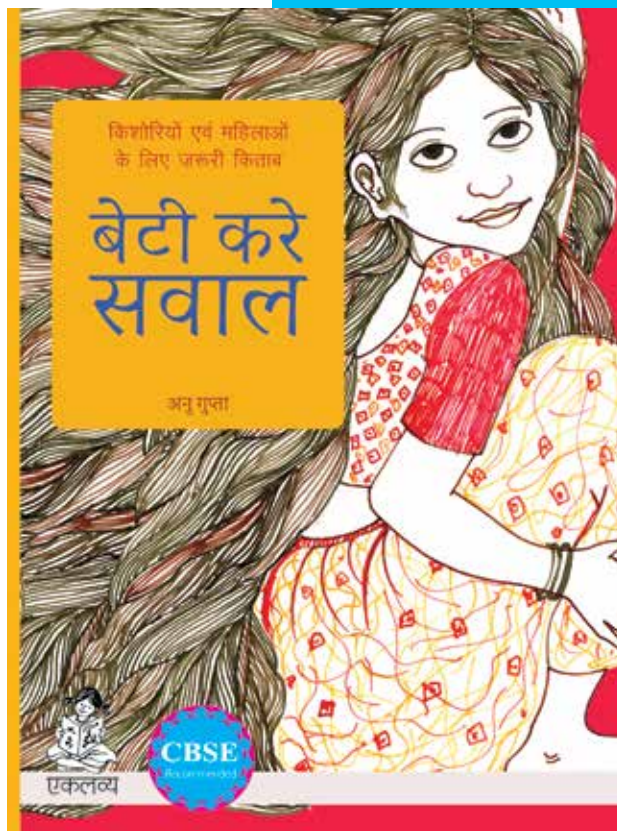
मोगली पेड़ पर चढ़कर भागता। कभी उड़ने की कोशिश करता। कभी कुछ करता, तो कभी कुछ करता। शेर खान से बचने में बलू (जो एक भालू है) और बघीरा (जो एक तेंदुआ है) उसकी मदद करते हैं। हालाँकि हम इन जानवरों से डरते हैं। लेकिन यह मोगली के बड़े अच्छे दोस्त हैं। मैं भी इन्हें अपना दोस्त बनाने की इच्छा रखती हूँ। अब तो शायद तुम्हें भी इच्छा हो रही होगी इस किताब को पढ़ने की और इन्हें अपना दोस्त बनाने की।



बेटी करे सवाल
लेखक: अनु गुप्ता
चित्र: कैरेन हैडॉक
प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन

लक्ष्मीना
आठवीं, कथा कानन लाइब्रेरी एवं
संसाधन केन्द्र, नगांव, असम

आज मैंने मम्मी के साथ *बेटी करे सवाल* किताब का एक चैप्टर पढ़ा। चैप्टर का नाम था – माहवारी से जुड़ी मान्यताएँ। इस किताब को पढ़ने के बाद मम्मी को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि माहवारी के समय छूने से पापड़, अचार खराब नहीं होता है। भगवान को छूने से, पौधे को छूने से ऐसा कुछ नहीं होता है। और माहवारी का खून गन्दा नहीं होता है। फिर मैं मम्मी से बोली, “मम्मी इस किताब में झूठ बात तो नहीं बोला है। क्योंकि किताबें कभी झूठ नहीं बोलती हैं। अगर किताबें झूठ बोलतीं तो लोग इन्हें पढ़ते ही क्यों। और वैसे भी आप बोलते हो कि पढ़ाई करो, पढ़ाई करो तो क्या फिर हम झूठी पढ़ाई करते हैं।” आखिर में मम्मी बोलीं, “अभी मेरा बहुत काम है। मैं जा रही हूँ अपना काम करने।” फिर मैं थोड़ी देर बाद मम्मी से पूछी, “क्या आपको अभी भी विश्वास नहीं हो रहा कि माहवारी के दौरान पौधा छूने से कुछ नहीं होता? तो मम्मी बोलीं, “नहीं। यह सब सच ही है। अचार-पापड़ सच में खराब हो जाते हैं और पौधे आदि सूख जाते हैं।”



मेरे घर का सबसे पुराना सदस्य

मोहम्मद इकबाल

बारहवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, दरभंगा, बिहार

मेरे घर में पुरानी वस्तुएँ तो अनेक हैं मगर उनमें से एक सरौता है। यह उन पुरानी खास वस्तुओं में से एक है जो मेरी अम्मी की शादी में नानी ने यादगार के तौर पर दी थीं। यानी यह सरौता नानी के ज़माने का है। अम्मी बताती हैं कि यह सरौता कितने ही लोगों की शादी में पान-कसेली काटने के लिए ले जाया गया है। इससे पता चलता है कि यह पहले की तरह अभी भी काम करता है। अभी तक इसमें जंग नहीं लगी है।

अम्मी इसे सँभालकर रखती हैं। अगर इसे कोई ले जाए और समय पर वापिस न दे तो अम्मी खुद ही लेकर चली आती हैं। सरौते से अम्मी की बहुत-सी यादें जुड़ी हैं जिन्हें वे अक्सर सुनाया करती हैं। और सुनाते-सुनाते अपने बचपन की कहानियों में चली जाती हैं। उन्हें सुनते हुए हम भी उनकी कहानियों में खो जाते हैं।



श्रीधी राज

छठवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु

मेरे नानाजी के पास एक सरौता है जो लगभग पचास साल पुराना है। उसे एक लोहार ने बनाकर मेरे नानाजी को उपहार में दिया था। वह बहुत काम की चीज़ है। उसे मेरे नानाजी हमेशा अपने साथ रखते हैं। वे उससे छुहारे, सूखे नारियल आदि काटकर हमें खाने के लिए देते हैं।



सरौता

फोटो: श्रीधी राज

प्रिंसी यादव

आठवीं, शासकीय
माध्यमिक शाला, जेरवारा
सागर, मध्य प्रदेश

जब मेरी दादी का ब्याह हुआ था तब मेरी दादी जर्दा खाने के लिए और उसके साथ सुपाड़ी कुतरने के लिए इस सरोतिया का इस्तेमाल करती थीं। इसका वज़न कुल सौ ग्राम है। यह कम से कम तीस-चालीस साल से ज़्यादा पुरानी सरोतिया है। पहले के समय में दादा-दादी दोनों इसे इस्तेमाल करते थे।



आँगन में ओखल

ईशा शर्मा

नौवीं, आरोही बाल संसार, प्यूड़ा, नैनीताल, उत्तराखण्ड

हमारे कुमाऊँ मण्डल उत्तराखण्ड में कई गाँव हैं। वहाँ के हमारे गाँव में जो घर हैं तो बाहरी लोग देखेंगे तो आँगन में ओखल देखने को मिलेगा जो गहरा होगा और आँगन के बीच में होगा। हमारे पूर्वज इसमें मसाले, धान कूटते थे। और उसे मूसल से कूटा जाता था। यह आपको हर घर के आँगन में देखने को मिलेगा। दीवाली में गेरु और चावल का घोल बनाकर ओखल में डिज़ाइन बनाई जाती है व लक्ष्मी माता के पैर भी बनाए जाते हैं। परन्तु यह संस्कृति अब धीरे-धीरे खतम हो रही है।



मैं गाली और मूसल हूँ

रुबी बानो

सातवीं, माध्यमिक विद्यालय, बरेठी, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

पाषाण युग से लेकर आज तक मेरा प्रयोग गाँव के घरों में किया जाता है। मैं पत्थर को तराशकर ज़मीन में गड़्ढा खोदकर स्थापित की जाती हूँ। मेरा उपयोग मेरे साथी मूसर (मूसल) के साथ किया जाता है। मूसल लकड़ी का बना होता है जिसके आगे के भाग में सांजी नाम का लोहे का छल्ला जाम किया जाता है। इससे मोटे अनाज जैसे जौ, सावा, बाजरा, सभी प्रकार की दालों को साफ करने में मदद मिलती है। धान को कूटकर चावल निकाला जाता है जो सब के मुख्य भोजन का हिस्सा है। मैं और मूसल आज भी घरों का हिस्सा बने हुए हैं। शायद इसीलिए अनेक त्योहारों एवं शादी-विवाह में हमारा पूजन किया जाता है। हमारे ऊपर एक लोकोक्ति भी प्रचलित है – “गाली के भीतर रहकर चोट से बाहर नहीं रहा जा सकता।” मैं गाली और मूसल हूँ।

मैं चक्की हूँ। मुझे भी पत्थरों का तराशकर बनाया जाता है। मैं दो भागों में होती हूँ। मेरा आकार गोल होता है। मेरे ऊपरी भाग में किनारे पर सुराख करके लकड़ी का हत्था लगाया जाता है। बीच में जो सुराख होता है उसमें एक लोहे की कील लगी होती है जिसमें अनाज डालकर हत्था पकड़कर चारों ओर घुमाया जाता है, जिससे आटा बनता है। मुझ पर भी एक लोकोक्ति है – “दो पाटों के बीच में साबूत न कोया।”





फटाफट बताओ

कौन-सी चीज़ है जो गर्म करने पर जम जाती है?

(1898)

कौन-सी चीज़ है जो सफेद होती है और उसके अन्दर पानी ही पानी भरा होता है?

(1908)

यह दोनों पहेलियाँ हरयाणा के करनाल ज़िले के ग्राम पाड़ा के दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल की छठवीं कक्षा की छात्रा अर्पिता ने भेजी हैं।

सफेद नदी, काला पत्थर और उनके ऊपर छाता। बताओ कौन?

(छाँह)

क्या है जिसे हम कभी ब्रेकफास्ट में नहीं खा सकते?

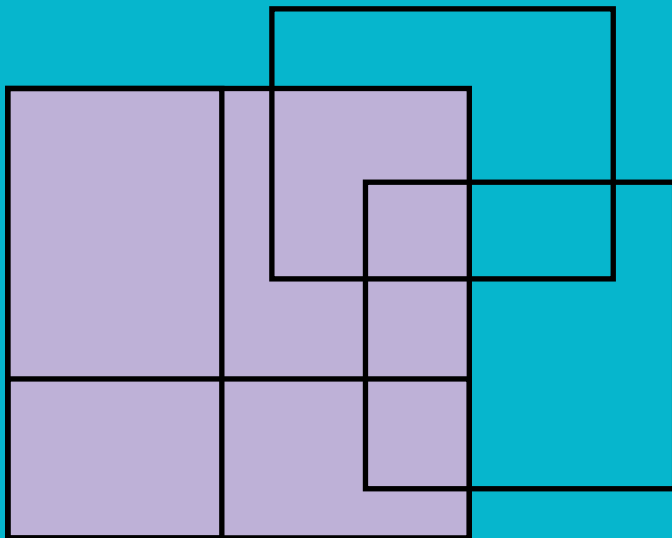
(फ्रिज़ी फ्रीज़ ज़ॉन)

यह दोनों पहेलियाँ मध्य प्रदेश के धार ज़िले के कुक्षी के एलीगेंस एक्डमी की पाँचवीं कक्षा की छात्रा मिशिका जैन ने भेजी हैं।

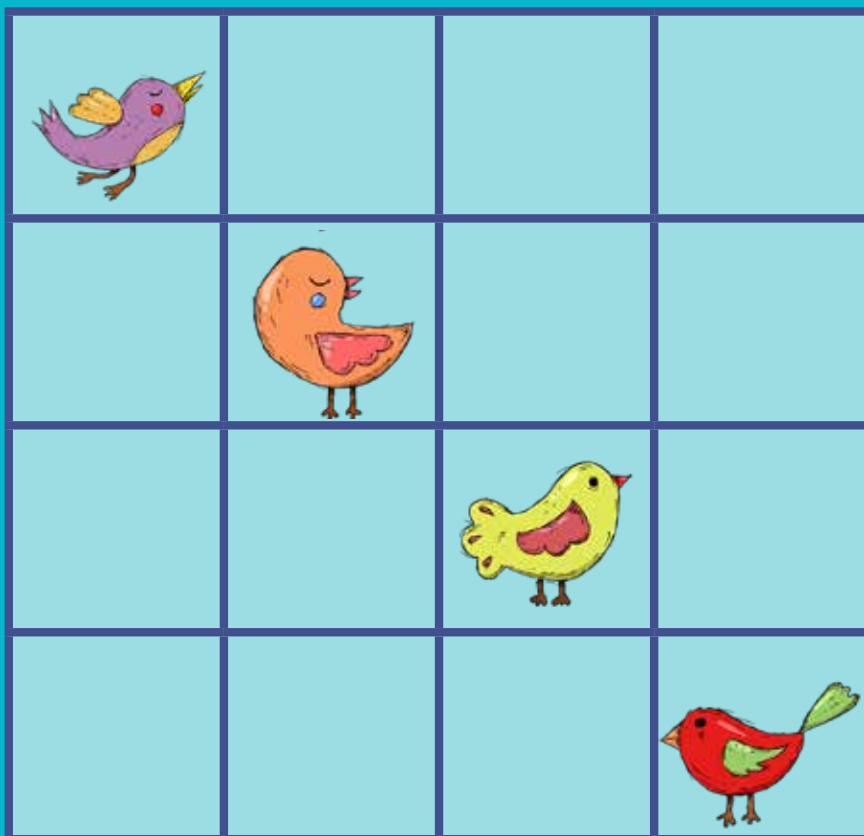
नहला दिया, धुला दिया
मुक्के मारकर सुला दिया

(1908)

1. इस चित्र में कितने आयत दिखाई दे रहे हैं?



2. एक बड़े-से डिपार्टमेंटल स्टोर में एक आदमी ने बास्केट में ऊपर तक सामान भरा और बिना पैसे दिए बाहर जाने लगा। दुकान के मालिक ने उसे बाहर जाते देख भी लिया। पर ना तो उसे रोका और ना ही पुलिस को बुलाया। ऐसा क्यों?
3. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग चिड़िया आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी चिड़िया आएँगी?



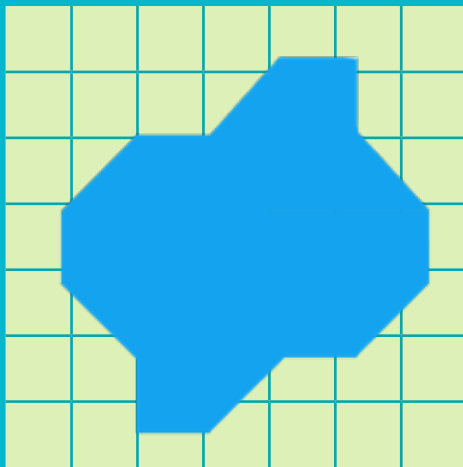
4.

तुम्हें इसमें कितनी संख्याएँ दिख रही हैं?

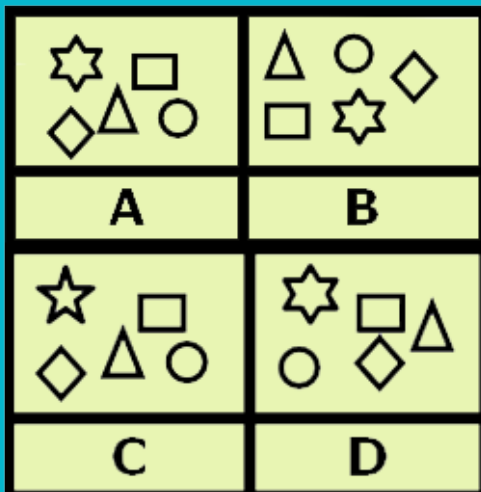


6.

दी गई आकृति को चार टुकड़ों में इस तरह बाँटना है कि उन्हें जोड़ने पर एक चौकोर बन जाए। कैसे करोगे?



10. चारों में से कौन-सा चित्र अलग है?



5.

क्या तुम केवल एक तीली को इधर-उधर करके इस समीकरण को सही कर सकते हो?

7.

सभी खाली जगहों में एक ही अंक आएगा। कौन-सा?

$$1 \dots \times \dots = \dots 4$$

8.

दिए गए वाक्यों में शरीर के कुछ अंगों के नाम छिपे हुए हैं। ज़रा ढूँढो तो।

1. नेहा थरमस में गरम चाय है, पी लेना।
2. उसका नमकीन बनाने का तरीका ही कुछ अलग है।
3. मेरी पतंग लाल रंग की है।
4. ज़ोया ने पावभाजी भरपेट खाई और पैक भी करा ली।
5. महिमा थाली ले आना।
6. सपना कल दिल्ली जाने वाली है।

9.

दी गई ग्रिड में कई सारे फूलों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

क	से	रा	बे	श	र	म
ने	म	गु	ला	ब	जू	ट
र	ल	ल	चं	पा	मा	ही
गें	ल	मो	ग	रा	त	नी
टे	दा	ह	र	सिं	गा	र
पा	सू	र	ज	मु	खी	लि
चाँ	द	नी	रा	च	मे	ली

आलू-प्याज़ और टमाटर

शिवांगी नेलवाल
सातवीं, रानीखेत
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

यह बात है पिछले साल की गर्मियों की छुट्टी की। तब रानीखेत में बहुत अच्छा मौसम था। मैं और मेरा दोस्त प्रियांशु खेल रहे थे। तभी मेरी मम्मी ने मुझसे कहा कि दुकान से आलू-प्याज़ और टमाटर लाना है। पहले मैंने मना किया क्योंकि मैं डर रही थी। मैं सोच रही थी कि मैं ला भी पाऊँगी या नहीं। अगर मुझसे कोई गड़बड़ हो गई तो। पर मम्मी ने फिर भी मुझे भेजा। मैंने मम्मी से कहा भी कि आप भी चलो। लेकिन मम्मी ने मना कर दिया और मुझे अकेले ही भेजा।

मैं दुकान में गई। वहाँ से मैंने आधा किलो टमाटर, एक किलो आलू और एक किलो प्याज़ के साथ एक चॉकलेट भी ली। जब मैं घर आई तो मैंने सामान मम्मी को दिया और मम्मी ने मुझे शाबाशी। फिर मैंने सोचा मैं फालतू ही डर रही थी। और मैंने आराम से चॉकलेट खाई।



घोटाला

पीहू कुमारी
आठवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

मैं पहली दफा दूध खरीदने डेयरी की दुकान पर गई। मुझे डर लग रहा था कि कहीं कोई गाड़ी मुझे टक्कर न लगा दे। मैं सोच रही थी कि कहीं दुकान वाले मुझसे ऐसा ना कहे कि तुम्हें सामान नहीं मिलेगा। किसी बड़े को बुलाओ। और अगर मैंने दूध खरीद भी लिया तो मैं बिना कागज़-कलम के हिसाब कैसे करूँगी। लेकिन जब मैं दुकान पहुँची तो मैंने दूध खरीद ही लिया। पर अब डर इस बात का था क्या भैया ने सही हिसाब किया है। फिर मैंने घर आकर पैसे माँ को दिए। उसमें दस रुपए कम थे। दुकान वाले ने घोटाला नहीं किया था, बल्कि मुझसे ही गिर गए थे और फिर नहीं मिले।



बहन के साथ अण्डे लेने गई

सावर्णिका मनु
सातवीं, अक्ष पब्लिक स्कूल
पंतनगर, ऊधमसिंह नगर
उत्तराखण्ड

मैं एक दिन दिसम्बर में पापा के कहने पर मेरी बहन के साथ अण्डे लेने गई थी। पहले मैं और मेरी बहन शहीद चौराहा गए। वहाँ की दुकान बन्द थी। फिर हम रूबी किराना स्टोर गए। वहाँ पर एक कुत्ता अपने बच्चों के साथ बैठा था। मेरी बहन ने जब उसे कुत्ते की आँखों में देखा तो वह मुझे और मेरी बहन को काटने आ गया था। तभी एक आदमी ने देखा कि कुत्ते ने हमें नीचे गिरा दिया है और हमें काटने आ रहा है तो वो हमें बचाने आ गया। हमने उसका शुक्रिया अदा किया और अण्डे लेकर घर चले गए। घर जाने के बाद हमने मम्मी और पापा को सारी बात बताई तो उन्होंने पूछा कि कुत्ते ने तुम्हें काटा तो नहीं? हमने कहा कि नहीं काटा। फिर उसके बाद हमने साइकिल सीख ली और अब जब भी हमें कुछ लेने जाना होता है तो हम साइकिल से ही आते-जाते हैं।



चित्र: प्रकाश डावर, चौथी, खरगोन, मध्य प्रदेश



एक दिन मेरी चप्पलें टूट गईं। ये बात अभी हाल ही की है। तो मैं घर में बोली, “मेरी चप्पलें टूट गई हैं। खरीद दो।” मेरे पापा तो हैं नहीं, तो मैं ये बात अपनी मम्मी और भैया से बोली। मम्मी बोलीं, “चप्पलें दिला देंगे।” पर भैया ने मुझे पैसे दे दिए और बोले, “मुझे समय नहीं है। तुम स्कूल जाओगी तो आते समय खरीद लाना।” तो जब मैं यह सुनी तो घबरा गई और बोली, “क्या, क्या कैसे खरीदूँगी। मैं अकेले नहीं जा पाऊँगी।” तो भैया बोले, “मैं नहीं जाऊँगा। खुद खरीदो।” मैं सोच में पड़ गई।

अगले दिन मैं किसी तरह चप्पलों की दुकान पर गई। मैं सोच रही थी कि दुकानदार अँग्रेज़ी में बात ना करे और ये भी सोच रही थी कि दुकानदार मुझसे पैसे ज़्यादा ना ले। क्या मालूम चप्पलें अच्छी ना दे। तभी दुकानदार बोला, “बेटा क्या लेना है?” मैं बोली, “मुझे चप्पलें दिखा दीजिए।” दुकानदार ने मुझे बहुत-सी चप्पलें दिखा दीं। सारी चप्पलें बहुत अच्छी लग रही थीं। पर मुझे काली चप्पलें पसन्द आईं। मैंने वो चप्पलें ले लीं और पैसे दे दिए।

फिर मैं रास्ते में सोच रही थी कि मैं जितना डर रही थी और जैसा सोच रही थी, वैसा कुछ भी नहीं था। उस दिन समझ में आया कि डरना नहीं चाहिए। जहाँ नहीं गए हों वहाँ जाना चाहिए।



डर के भागे

काजल देवी

नौवीं, स्वतंत्र तालीम फाउंडेशन, मलसराय
सीतापुर, उत्तर प्रदेश



आधार में संशोधन

सुषेन्द्र कुमार
दसवीं, सीख समूह
स्वतंत्र तालीम फाउंडेशन
मलसराय, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

हम एक बार अपने आधार में संशोधन कराने गए पोस्ट ऑफिस गए थे। पहली बार हम अकेले गए थे। हमारे पापा ने बता दिया था कि यहाँ पर संशोधन होगा। अगले दिन हम अकेले साइकिल से गए। वहाँ पर हम फॉर्म जमा किए। पहली-पहली बार गए थे तो हल्का-हल्का डर लग रहा था। जब दो-चार फॉर्म कम्प्लीट हो गए तो मेरा नम्बर आया। पर जैसे ही मेरा नम्बर आया तो प्रिंटर व लैपटॉप में कुछ गड़बड़ी हो गई। पहले से ही हम लाइन में खड़े-खड़े परेशान हो गए थे। तो हम चुपचाप मेज़ पर बैठ गए। लगभग दो घण्टे बाद हमारे आधार का संशोधन हुआ। फिर हम शाम तीन बजे वापिस हुए तो रास्ते में हमारी साइकिल बिगड़ गई। फिर हम दो-तीन किलोमीटर पैदल गए, साइकिल बनवाए तब घर गए। हम उस दिन बहुत थक गए थे।



चित्र: शांभवी, पहली 'ए', बिलाबॉन्ग हाई इंटरनेशनल स्कूल, वडोदरा, गुजरात



चित्र: सुरगी, नौ साल, स्टूडियो रनिंग स्टिच, बेंगलुरु, कर्नाटका

पत्र

आदरणीय प्रेमचंद जी,
सादर स्मरण,

प्रिय प्रेमचंद जी,

हालांकी आप इस दुनिया में

नहीं हैं पर आपकी कहानियाँ अभी तक लोगों
के दिलों में हैं। मैंने आपकी कुछ कहानियाँ
पढ़ी थी। जो कि मैंने कक्षा 5 और 6 में पढ़ी थी।

'इर्दगाह' और 'नादान दोस्त' थी। दोनों ही कहानियों
का अलग-अलग महत्व था। जिस तरह 'इर्दगाह'
में प्रीत और दादी के बीच का प्रेम दर्शाया था उस
ही तरह 'नादान दोस्त' में केशव और श्यामा की नादान
का ब्रह्म परिणाम निकला विस्तार से समझाया है।
यह दोनों ही कहानियाँ अपना-अपना अलग-अलग
महत्व रखती हैं।

आप भले ही अभी इस दुनिया में हमारे उपर
नहीं हैं पर आपकी कहानियाँ, उपन्यास आज
लोगों के दिलों में बसती हैं।

धन्यवाद

मैं,
मानवी रावत
'A'

प्रिय लेखक

मैंने आपकी लिखी कहानी

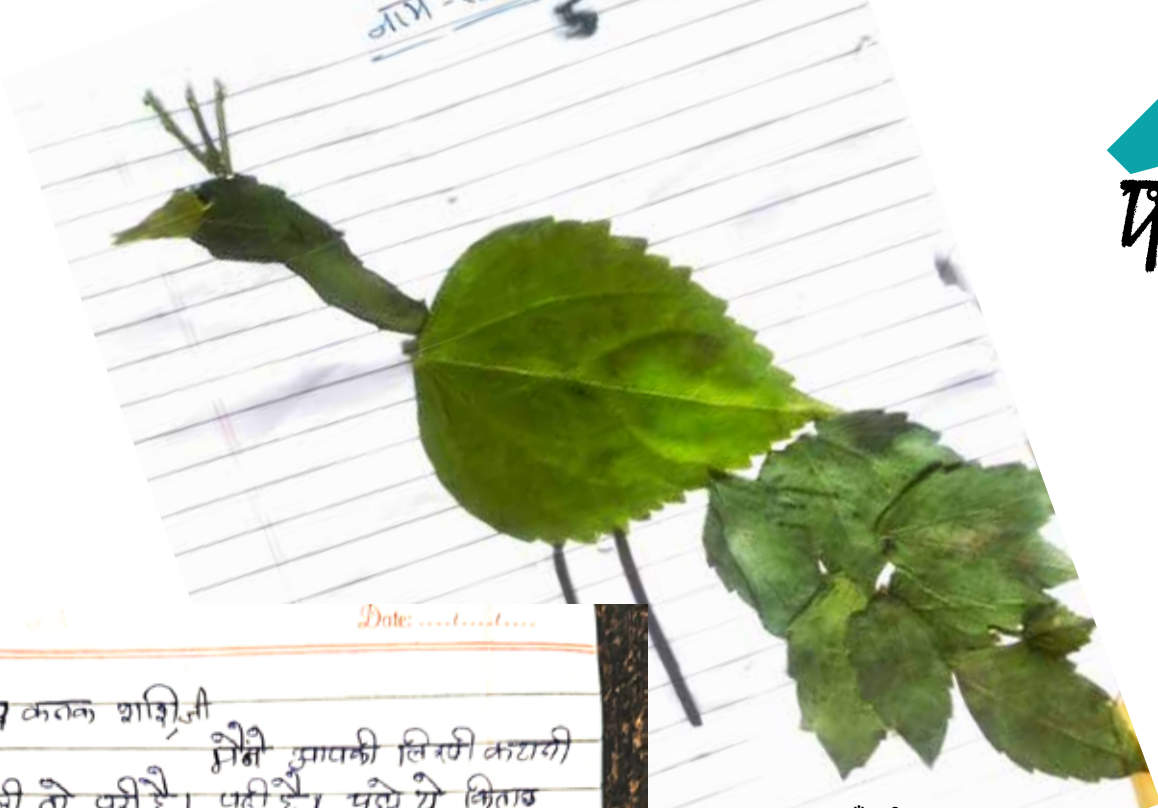
आई और मैं पढ़ी। कहानी बहुत भावुक
थी यह एक लड़की और उसकी माँ की कहानी है।
माँ कैंसर की मरीज है और कई दिन अस्पताल
में पड़ा करकर घर लौटी है। माँ के सारे बात
गिर गए हैं। लड़की अपनी माँ के लिए बहुत
चिंतित है। अधिकतर कहानियों में माँ ही बच्चों
की चिंता और देखभाल करती है। जबकि इस
में एक बच्चे की चिंता को दर्शाया गया है।
मुझे भी अपनी माँ की बहुत चिंता रहती है। घर के
कामों के अलावा वो दुकान भी देखती है। मेरे
पापा परदेश रहते हैं। माँ ही सारा हिस्सा कितना
रखती है। घर का खर्च चलाती है और बाजार का
काम भी देखती है। मैं घर के कामों में उनकी
मदद करती हूँ। परन्तु अभी छोटी होने के कारण
भरपूर मुझे खाना बनाने नहीं देती ॥

इस कहानी के लिए शुक्रिया अपनी लिखी और
कहानियों के बारे में मुझे बताइगा।

क्रान्ती कक्षा=5

प्राथमिक विद्यालय धर्मपुर

बलरामपुर उत्तर प्रदेश



चित्र: सृष्टि रावत, पाँचवीं,
अजीम प्रेमजी स्कूल, मातली,
उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

प्रिय कतक शशिजी

मैंने आपकी लिखी कहानी
गुठली तो पसी है। पढी है। मुझे ये किताब
बहुत अच्छी लगी। क्योंकि इसे पढ़ने के बाद मेरा
नज़रिया बदल गया है। पहले मैं ऐसा समझता था
कि कुछ काम जैसे घर की सफाई, झाड़ू बुझाई
वर्तन चौका लड़कियों का काम है। परंतु गुठली की
कहानी पढ़कर मुझे समझ में आया की लड़कों का
मन भी फ्रीक पढ़ते काम कर सकते हैं। इसी प्रकार
चैक गेज सिंघ की लिखी कहानी पढ़ाने के बाद पढ़ी
थी। उन्हें घर सजावे का फूल लगावे चिठ्ठ बगाने
होते रंगना पकावे का शौक। या घर उनकी प्रमोटी
की घर सब पढ़ने नहीं था। जैसे घर में तो लड़का
लड़की को लेकर नोई विशेषासेक-टोक नहीं है।
फिर भी मैं खुद ऐसा सोचता था कि लड़का
होने के कारण मुझे घर के काम नहीं करना चाहिए।
अब मैं समझ रहा हूँ की सबको सब काम खीरपैरे
चाहिए।

शुक्रिया इस कहानी के लिए।

अनापका, अमरजीत

कसा पू प्राथमिक धर्मपुर
बलरामपुर - उत्तर प्रदेश



चित्र: दिया असवाल, आठवीं, लक्ष्मी आश्रम,
कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड



कबड्डी की खिलाड़ी

ज्योति मण्डल
नौवीं, मंजिल संस्था, दिल्ली

मैं कबड्डी की खिलाड़ी हूँ।
और कबड्डी की नेशनल टीम
में भी खेलना चाहती हूँ। अभी
रीसेंट की बात है। मेरी टीम
खेलने गई थी और पहला मैच

हटगढ़ और छम्यार के बीच मैच

भारत

बारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

मेरा आज तक का सबसे रोमांचक मैच
हटगढ़ और छम्यार के बीच वाला था।
वह हमारा फाइनल मैच था। वह मेरी
ज़िन्दगी का पहला मैच था। हमने इस
टूर्नामेंट में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। सब
हमारी तारीफ कर रहे थे। जब हमारा मैच
हटगढ़ की टीम के साथ हुआ तो सभी
लोग हटगढ़ की तरफ से शोर मचाने
लगे। परन्तु हमने अपने अन्दाज़ में अपना
मैच खुलकर खेला। दूसरी टीम को अपने
ऊपर ओवर कॉन्फिडेंस था। वे सोच रहे
थे कि ये तो कमज़ोर टीम है। उन्होंने हमें
चैलेंज दिया कि हम तुमसे बड़ी आसानी
से जीत जाएँगे। हम हँसने लगे। हमने
उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। हम
खूब अच्छा खेले और जीत गए। इससे
हमें यह सीख तो ज़रूर मिली कि कभी
भी किसी को हलके में नहीं लेना चाहिए।



चित्र: निहार वासुदेव हलबे, चौथी, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु



जीती थी। उसमें जो हमारे कोच थे उन्होंने हमें खूब साहस दिया और हमारा उत्साह बढ़ाया। पहला मैच हम बहुत आसानी से जीत गए थे। दूसरे मैच में ऐसा था कि जीतने वाला फर्स्ट आएगा और जो हारेगा वो दूसरे नम्बर पर आएगा। दूसरे मैच में हम बहुत अच्छा नहीं कर पाए। और इसलिए हम दूसरे नम्बर पर आए। लेकिन अच्छी बात यह है कि हमने टीमवर्क से खेला।



रोमांचक फुटबॉल मैच

विरन
आठवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल
पाढ़ा, करनाल, हरयाणा

मैं आपको हमारे रोमांचक फुटबॉल मैच की ओर लेकर चलता हूँ। उस मैच में हमने 2 गोल मारे और दूसरी टीम ने भी 2 गोल मारे थे। तो हमें पेनल्टी का मौका मिला, जिसमें हमने शानदार प्रदर्शन किया। फिर भी हम जीते नहीं। मैच टक्कर का था। लास्ट में हमें एक गोल मारना था। पर हमारे एक साथी से गोल नहीं हुआ। परन्तु दूसरी टीम के बच्चे ने गोल मार दिया। हम हार गए परन्तु मैच बहुत रोमांचक था।



खो-खो

प्रिंसी यादव
आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश

एक दिन मैं मेरे विद्यालय के पास मैदान में खो-खो खेल रही थी। मैं बहुत फुर्ती से खो-खो खेल रही थी। तभी अचानक मैं अपनी दोस्त के ऊपर से गिरकर पलटी खा गई और नीचे गिर गई। तब मुझे तो हँसी आई पर दोस्त को रोना आ गया। तब वहाँ पर मेरी मैम नहीं थीं। तो मैंने अपनी दोस्त को समझाया और माफी माँगी। तब उसने रोना बन्द किया और होंठों पर थोड़ी मुस्कान लाई। फिर छुट्टी हो गई और वो हँसकर बतियाने लगी।



सुपर हीरोइन

काजल

नौवीं, समूह लक्ष्य, दिगन्तर स्कूल, जयपुर, राजस्थान

मेरे सुपर हीरो नहीं, बल्कि सुपर हीरोइन हैं। और वह हैं मेरी मम्मी। क्योंकि वे मेरी सारी बातें मानती हैं। मेरी गलतियों को सुधारती हैं और मुझे भी सुधारने के लिए कहती हैं। मैं चाहती हूँ कि जैसे मेरी मम्मी सुपर हीरोइन हैं, वैसे ही मैं भी एक अच्छी इन्सान बनूँ। वे खुद भी सफाई करती हैं और मुझे भी सिखाती हैं।



सुपर हीरोइन

श्वेता बलसूनी

लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

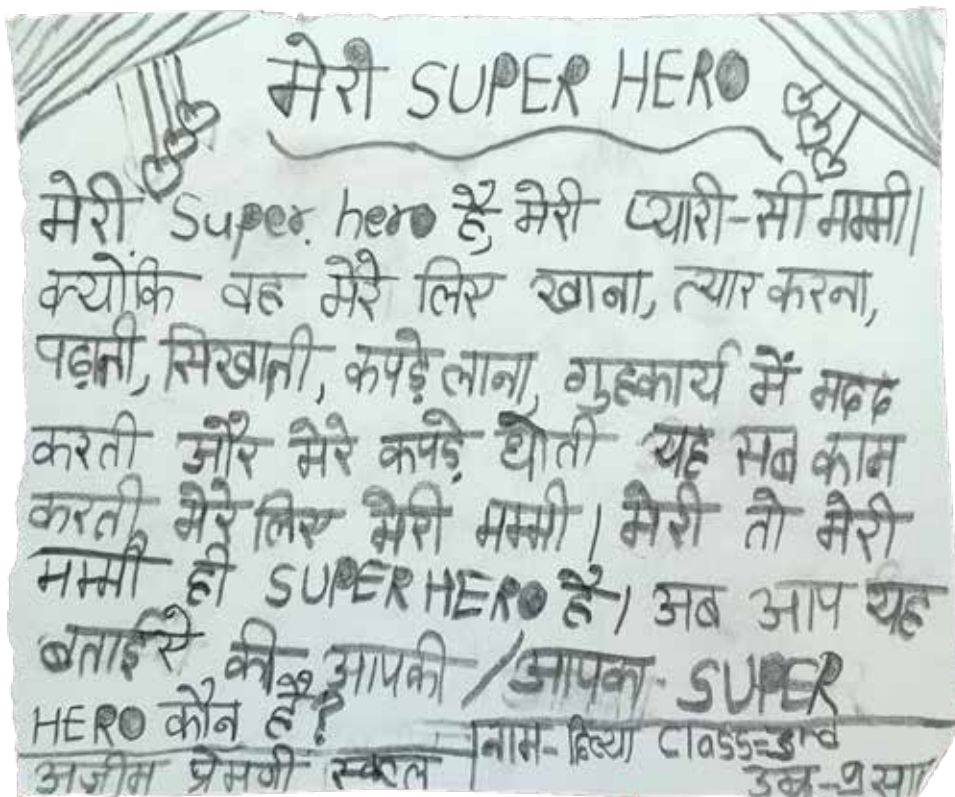
मेरे सुपरहीरो मेरे पिताजी हैं। उन्होंने बचपन से ही बहुत संघर्ष किया है। मेरे पिताजी ने छोटे-छोटे कामों से आज बहुत बड़ी सफलता पाई है। मेरे दादाजी का देहान्त जब हुआ था तब मेरे पिताजी केवल नौ साल के थे। मेरे पिताजी ने खुद की व अपनी बहनों की शादी अपने दम पर की। पिताजी ने कड़ी मेहनत करके हमारे गाँव का एक फेमस स्थान बनाया।

मेरे गाँव मनकोट में पहाड़ी खाना बहुत फेमस है। इन सभी फेमस चीज़ों की शुरुआत मेरे पापा ने अपना ज़ायका रेस्टोरेंट खोलकर की। मेरे पापा ने कभी हार नहीं मानी और हमेशा ज़रूरतमन्द लोगों की मदद की। मुझे मेरे पिताजी से बहुत प्रेरणा मिलती है। मैं अपने पापा के बारे में जितना भी कहूँ वह मेरे लिए कम ही है।



मेरी मौसी

काव्या यादव, दूसरी, पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, एजीसीआर कॉलोनी, दिल्ली



मेरी हीरो

दिव्या, तीसरी,
अजीम प्रेमजी
स्कूल, बाड़मेर,
राजस्थान

मेरी माँ हीरो

स्मिता उड़के

आठवीं, शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला, जामुनडोल केसला,
नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

मेरी सुपरहीरो मेरी माँ हैं क्योंकि मेरी माँ मेरा ख्याल बहुत अच्छे से रखती हैं। मैं जब भी बीमार हो जाती हूँ तो मेरी माँ मेरा ध्यान बहुत अच्छे से रखती हैं। मेरे लिए मेरा मनपसन्द खाना भी बनाती हैं। मेरे लिए अच्छी-अच्छी चीज़ें भी लाती हैं। अगर मैं कभी कुछ गलती कर दूँ तो डाँट भी देती हैं। अगर मैं कभी गुस्सा हो जाती हूँ तो मुझे मना भी लेती हैं। मेरी माँ मुझे डाँटती भी हैं और प्यार भी बहुत करती हैं। मैं भी अपनी मम्मी से बहुत प्यार करती हूँ। इसीलिए वो मेरी सुपरहीरो हैं। रुको, रुको, एक बात और। अगर मुझे रात को डर लगता है तो मेरी माँ मेरे साथ सो जाती हैं।



मेरे हीरो

दिया भट्ट

दसवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

मेरे लिए दो शख्स सुपरहीरो से भी बढ़कर हैं। वो मेरे सुपरहीरो अभी अप्रैल 2025 में ही बने। इसका कारण है मैं पहले बहुत गुस्सैल, लड़ाकू थी। उनके समझाने से मुझमें काफी फर्क आया है। मेरा दिमाग पढ़ाई में न होकर अन्य चीज़ों में था। जिनके कारण मेरा व्यवहार चिड़चिड़ा हो गया था। और मेरा स्वभाव भी एकदम अलग हो गया था। परन्तु दीक्षा दीदी व दिया दीदी ने मुझे जीवन जीना सिखाया। इन दोनों की मैं सदैव आभारी रहूँगी।





फटाफट बताओ

क्या है जिसे पीसा जाता है,
काटा जाता है, बाँटा भी
जाता है पर खाया नहीं जाता

(फिर कर्क 1996)

काला हण्डा उजला भात
ले लो भैया हाथों हाथ

(1996)

दुबली पतली मेरी काया
एक आँख की देखो माया
धागे ने जब साथ दिया तो
दो बिछड़ों को खूब मिलाया

(द्वेष्ट)

मैं कटूँ मैं मरूँ,
तुम क्यों रोते हो?

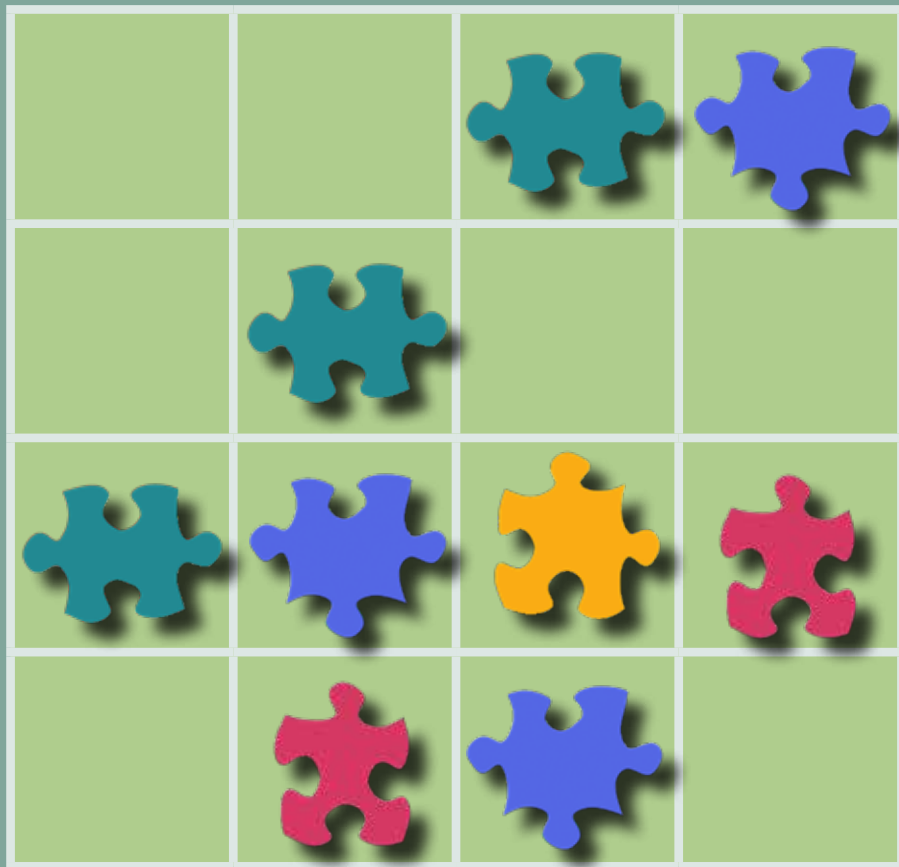
(छाया)

मैं सबको खिलाती हूँ पर
खुद कुछ नहीं खाती हूँ।
बताओ मैं कौन हूँ?

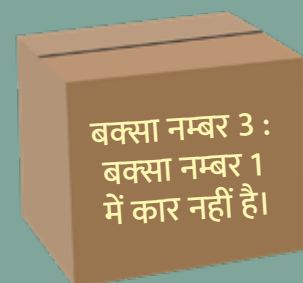
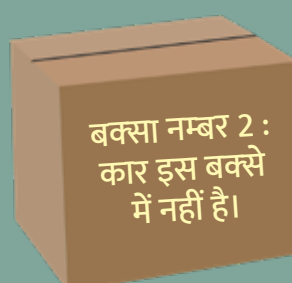
(जम्मू)

क्या है जिसे बिना आग लगे
भी बुझाना पड़ता है?

(छाया)



11. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में पज़ल का अलग-अलग टुकड़ा आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से टुकड़े आएँगे?
12. तुम्हारे सामने तीन बक्से हैं जिनमें से किसी एक में खिलौने वाली कार है। तुम्हें पता करना है कि कार किस बक्से में है। तुम्हारी मदद के लिए तीनों बक्सों पर चिप्पी लगी हैं, लेकिन तीनों में से केवल एक ही चिप्पी सही है।



तुम कौन-से बक्से को खोलोगे?

13.

दी गई ग्रिड में कई सारी नदियों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

घा	गं	त	सो	का	चि	ना	ब	बा
ब	घ	वा	कृ	न	पे	का	ली	य
ता	प्ती	रा	ग	र्म	रि	वे	हु	मु
रा	चं	पा	गो	दा	व	री	सो	ना
सा	ब	र	म	ती	पा	को	सी	मी
पा	ल	गं	ती	रा	स्ता	हु	ग	ली
कृ	पा	ड	गा	को	झे	रा	व्या	म
जी	ष्णा	क	ना	सी	ल	जी	पा	स
पे	रि	या	र	ली	म	हा	न	दी

14.

बहुत ठण्ड थी। एक माँ और बेटे को नदी के दूसरे छोर पर जाना था। उनके पास दूसरी ओर जाने के लिए कुछ नहीं था। नदी पर पुल भी नहीं था। फिर भी वो दोनों उस पार चले गए। कैसे?

यह सवाल उत्तर प्रदेश के नोएडा के शिव नाडर स्कूल के चौथी कक्षा के छात्र वीर ने भेजा है।

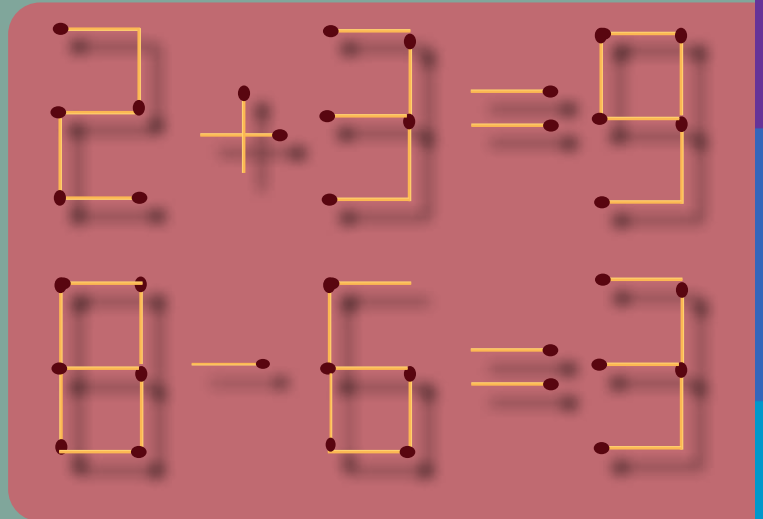
16.

एक दुकानदार के पास दस कॉपियाँ थीं। एक बच्चे ने चार कॉपियाँ खरीदीं। फिर एक और बच्चे ने दो कॉपियाँ खरीदीं। फिर पहले वाले बच्चे ने एक कॉपी वापिस की। बताओ अब दुकानदार के पास कितनी कॉपियाँ बचीं?

यह सवाल उत्तर प्रदेश के नोएडा के शिव नाडर स्कूल के छात्र कबीर रावत ने भेजा है।

15.

क्या तुम किन्हीं भी दो तीलियों को इधर-उधर करके इस समीकरण को सही कर सकते हो?



17.

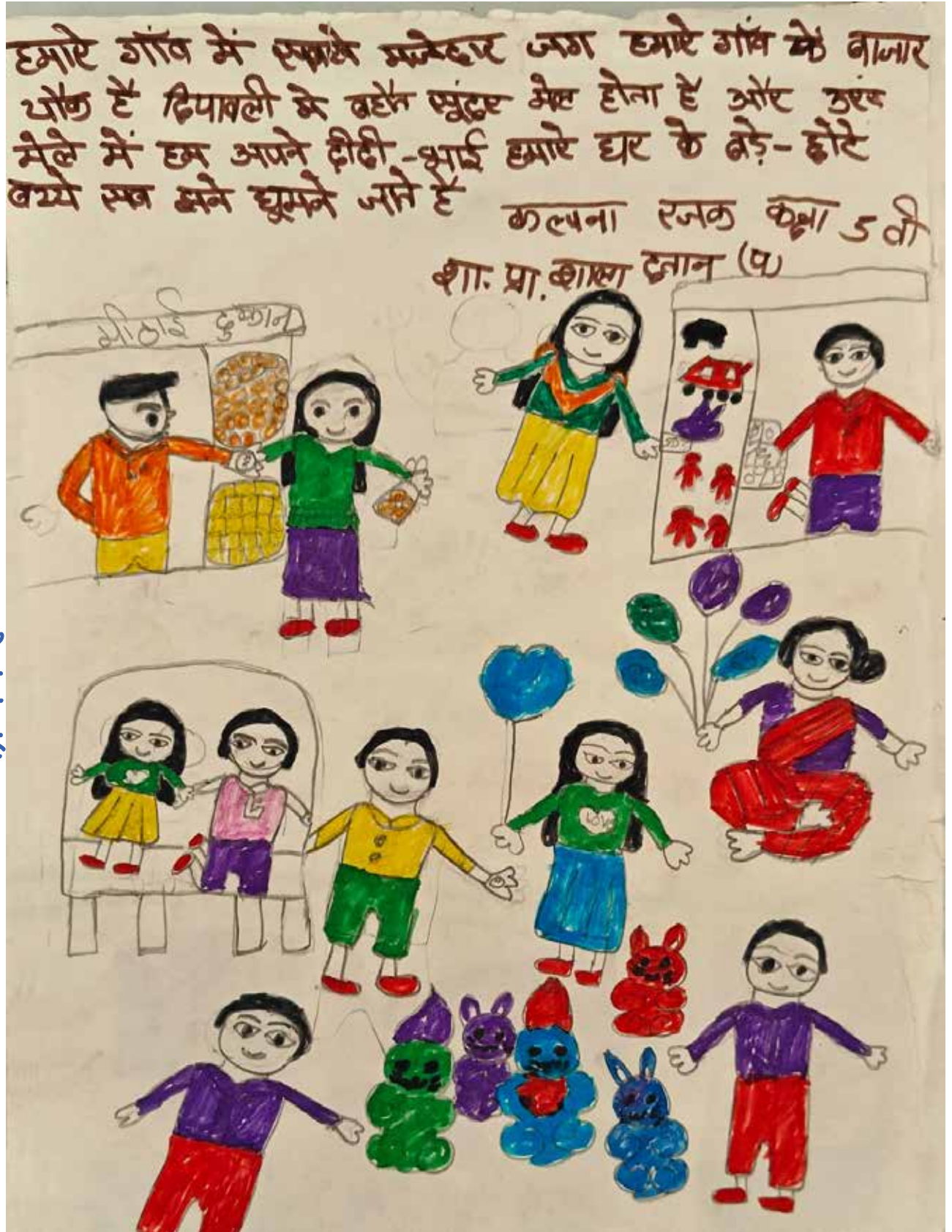
किसी भी और चिह्न का इस्तेमाल किए बिना इस समीकरण को सही करो।

$$8 + 8 = 91$$

18.

क्या तुम केवल एक अंक इधर-उधर करके इस समीकरण को सही कर सकते हो??

$$26 - 63 = 1$$



कल्पना रजक, पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक शाला, दतान (प), बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़



मजेदार जगह

छाया अहिरवार

चौथी, एकलव्य फाउंडेशन, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, मरोड़ा
केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

सबसे मजेदार जगह है हमारे गाँव का चबूतरा। वो हमें इसलिए अच्छा लगता है क्योंकि उस पर बहुत सारे लोग बैठते हैं। कुछ लोग वहाँ बैठकर बातें करते हैं तो कुछ सोते हैं। कुछ लोग वहाँ बैठकर अपने मोबाइल में पिकचर देखते हैं। कुछ बच्चे भी उनके पास ही बैठकर पिकचर देखते हैं। और जब ये लोग चले जाते हैं तो कुछ लड़कियाँ वहाँ डांस करती हैं। इसलिए वह जगह बहुत प्यारी लगती है।



कोट पटियाल

प्रथम सिंह पटियाला

चौथी, रमणा विद्यालय, महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी
चंगलपेट, तमिलनाडु

मेरा गाँव कोट पटियाल पंजाब में ज़िला होशियारपुर के पास है। मेरा गाँव पहाड़ियों में बसा है जो कि बहुत खूबसूरत है। मेरे गाँव की मजेदार बात यह है कि इतने सालों में अभी तक वहाँ बस एक ही बस आती है। बारिश के दिनों में जो एक बस आती है वह भी आना बन्द हो जाती है। अभी तक भी लोग चूल्हे में खाना बनाते हैं और सब साथ में नीचे बैठकर खाना खाते हैं।



गाँव के खेत

प्रज्ञा

समूह इन्द्रधनुष, दिगन्तर विद्यालय, जयपुर, राजस्थान

मेरी सबसे मजेदार जगह गाँव में एक खेत है जो मुझे बहुत अच्छा लगता है। क्योंकि मैं जब छोटी थी तो मैं गाँव गई हुई थी। तो मैं रोज़ मेरे दादाजी और सारे भाई-बहन के साथ खेत पर जाती थी। खेत पर ठण्डी-ठण्डी हवा चलती थी। वह बहुत अच्छी लगती थी। मैं और मेरे भाई-बहन भागने की प्रतियोगिता करते, पकड़ा-पकड़ी खेलते। कभी-कभी हम दादाजी से उनके बचपन की बातें करते और पापा क्या शरारत करते थे उनके बारे में पूछते। दादाजी बड़े ही मजे-से हमको सुनाते थे।

गाँव के खेत के पास एक बगीचा था। उस बगीचे में बहुत सुन्दर फूल थे, जैसे कि सूरजमुखी, गुलाब, चमेली। हम फूल के बगीचे के मालिक से अनुमति लेकर खेलते थे। खेत में हरियाली-हरियाली थी। एक दिन अचानक मैंने उस खेत में एक मोर देखा। वह बहुत सुन्दर था। इससे पहले मैंने कभी भी मोर नहीं देखा था। मैं उसे देखती ही रह गई। अब मेरी सबसे प्यारी चीज़ है मोर। मोर की आवाज़ भी मुझे बहुत अच्छी लगती है। लेकिन वह आवाज़ समय-समय पर मुझे खेत पर ही सुनने को मिलती है। शाम होती है तो मोर की मधुर आवाज़ आती है। आज भी मैं जब भी गाँव जाती हूँ तो मोर को अवश्य देखती हूँ और उसकी आवाज़ सुनने का इन्तज़ार करती हूँ।



एक जैसे
दिखने
वाले इन
दोनों चित्रों
में नौ से
ज़्यादा
अन्तर हैं,
तुमने
कितने
ढूँढे?



YS...
18/04/2025

अन्तर ढूँढो
अ-46



YS...
18/04/2025

चित्र: तेजस, छठवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल, पाढ़ा, करनाल, हरयाणा



चित्र: जियांश देसाई, तीसरी, बाल भवन, वडोदरा, गुजरात



गुड़िया का परिवार

सनंदा एल. और निकिता एस.
छठवीं, रमणा विद्यालय, महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी
चंगलपेट, तमिलनाडु

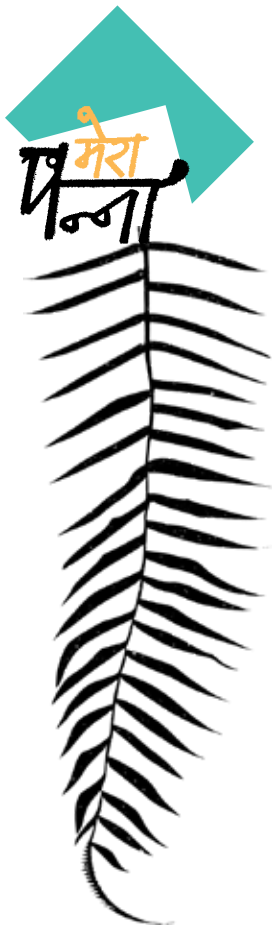
जुगाड़

लकड़ी या प्लास्टिक की चार चम्मचें, ऊन (सफेद और काले रंग का), लाल और काला मार्कर, रंगीन और काला मोटा पेपर, रुई, फेवीकॉल, सजाने के लिए मोती या सितारे



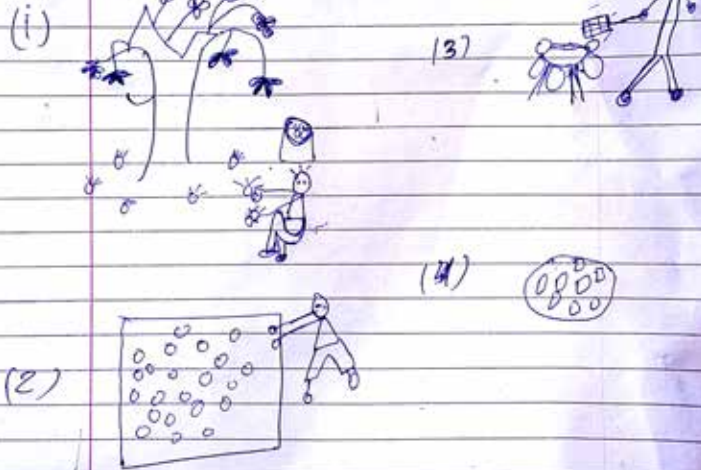
लकड़ी या प्लास्टिक की चार साफ सफेद चम्मच लें। लाल और काले मार्कर से चारों चम्मचों पर आँख, कान, नाक बनाएँ। दादा-दादी के चेहरे पर सफेद बालों के लिए रुई चिपकाएँ। गुड़्डा-गुड़िया के बालों के लिए एक काला चार्ट लें। इसे काटें और बालों की जगह पर चिपका दें। सफेद ऊन से दादी की चोटी और दादा की दाड़ी-मूँछ बनाएँ। काले ऊन से गुड़िया की चोटी और गुड़डे की दाड़ी-मूँछ बनाएँ। कुछ रंगीन कागज़ लें और गुड़िया के परिवार के लिए ड्रेस बनाएँ। ड्रेस पर कुछ मोती या सितारों से सजावट करें। अब हमारी गुड़िया का परिवार तैयार है।





एपाना पुनाने का विधा

हमने महुआ उठाया और सूखा दिया
सूखाने के बाद साफ कर दिया
और चुल्हा जलाया और कड़ाई रखा कड़ाई
गर्म होने के बाद महुआ को चुड़ा लिया
और हमारा व्यंजन बन गया



विकास कुमरे, नौवीं, कोटमीमाल, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

पंजी की रेसिपी

पंजी काभी के बिस्किट अच्छे पड़ते हय भेटे का शरात
लेगे फिर हम उस जार को देखी की मे तब तक
बुलेने जब तक सादा हल्के भूरे रंग का हो जाय
और फिर एक कड़ाई में वाशनी करायेंगे। जब
वाशनी बनकर तैयार हो जायगी तब इस व्यंजमे
काजू, बादाम, मिश्रीश, दुआरे और रासी
को पीसकर गारली में डालेंगे और फुला हुआ
शात डूबी हलवार पात्री को बिस्का करके रखेंगे।
जब अच्छे से मिश्र हो जायगा तो फिर हमारी
पंजी बनकर तैयार हो जायगी।

ग्राम- नवजोत कौर

नवजोत कौर, सातवीं, नानकमता पब्लिक स्कूल
नानकमता, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड



हर्षिता कहार, सातवीं, शासकीय माध्यमिक कन्या
शाला, कलाआखर, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

मानवी, चौथी 'ब', जिंगल बेल स्कूल, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

मीठा गुलगुला पकवान

गुलगुला एक ऐसा पकवान है जो बाजार में
नहीं मिलता है गुलगुला चीनी, सफ़ेद आटा से
बनता है गुलगुला तो शुरूको परंपरा होगा
क्योंकि वो मीठा होता है जब इसे घाना
जाता है तब ये छन-छन-छन-छन होता है
और मुझे इसकी अवाजें बहुत अच्छी लगती हैं।
ये बच्चोंकमनपसंद भी होता है।
बच्चे इसे बड़े गव से खाते हैं और इसे खास
तौर बड़े लोग खाते हैं क्योंकि उन्हें नरम-नरम
खाने का मन करता है। इस स्वादिष्ट पकवान
को गरम व ठंडा दोनों तरह के रूप में खाने
का मन करता करता है। मेरे घर खास तौर
पर गुलगुला नागपंचमी को मनाया जाता
है।



एसीपी-मक्का के खड़े।
सामग्री- आटा भिजी, घनीभा, मणाला, तेल, मक्का।

खाने का तरीका- मक्का को किरियते में फिर भिजी में
पीसते हैं और फिर इसमे एक थाली में रखा लेते हैं
फिर इसमे मणाला, कटी घास, कटी भिजी, घनीभा को
मिक्स करके तेल में डालते हैं और फिर पकवाने के
लिए रखते हैं फिर उसके एक थाली में निकालकर थाली
सजाते हैं।



मक्का के खड़े



क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:
क्या कभी तुम्हें रेलवे स्टेशन या बस स्टैंड
पर लम्बे समय तक इन्तज़ार करना पड़ा
है? इस दौरान तुमने क्या-क्या देखा? क्या
अच्छा लगा और क्या बुरा, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें
से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक का सवाल है:

कुछ लोग चीज़ें दूसरों के साथ
आसानी से बाँट लेते हैं, जबकि कुछ
को यह मुश्किल लगता है — ऐसा
क्यों होता होगा?

तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम
लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें
merapanna.chakmak@eklavya.in पर
ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर
वॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी
भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

हाँ, मुझे बहुत इन्तज़ार करना पड़ा है बेंगलुरु के स्टेशन
पर। मैं सुबह आठ बजे से रात के ग्यारह बजे तक वहाँ
बैठी रही। इस दौरान लोगों की भीड़, भाग-दौड़, बच्चों
की हरकतें और चाय-समोसे की खुशबू देखने को मिली।
अच्छा यह लगा कि अलग-अलग लोग एक जगह मिलते
हैं, लेकिन बुरा यह लगा कि बहुत शोर और गन्दगी थी।
कुल मिलाकर अच्छा और बुरा दोनों अनुभव हुए। वहाँ
बैठकर मैंने कई बार किताब पढ़ने की कोशिश की और
अनाउंसमेंट्स बार-बार सुनकर थक भी गई।

सेहज त्यागी, सातवीं, दिल्ली पब्लिक स्कूल, एचआरआईटी कैम्पस,
गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश



एक दिन मैं बस स्टैंड पर खड़ा था। वहाँ मैंने एक दुकान में बहुत सारे पकवान देखे और मेरे मुँह में पानी आ गया। मेरे पास तीस रुपए थे, तो मैंने तीस रुपए की जलेबी ले ली। मेरे दोस्त के पास भी पैसे थे, उसने चार समोसे लिए। हमने साथ बैठकर खाए और हमें बहुत मज़ा आया। थोड़ी देर बाद हमने देखा कि एक कुत्ते की पिछली दोनों टाँगें टूटी हुई थीं और वह इधर-उधर खाना ढूँढ रहा था। लेकिन हमारे पास उसे देने के लिए कुछ भी नहीं था, तो हमें बहुत बुरा लगा।

कन्हैया कुमरे और विवेक कुमरे, आठवीं, शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला, कोटमीमाल, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

मैं जब अपने परिवार के साथ भोपाल से अजमेर जा रहा था तब ट्रेन लेट होने के कारण हमें इन्तज़ार करना पड़ा। तब मैंने बहुत-सी चीज़ें देखीं। जैसे कि शराब पिए हुए लोग, स्टेशन पर सोए हुए लोग, रेलवे स्टेशन पर लगी हुई दुकानें, वहाँ की साफ-सफाई। मुझे वहाँ नशे की हालत में लोगों को देखकर बुरा लगा और वहाँ की साफ-सफाई देखकर बहुत अच्छा लगा।

महफूज़ खान, नौवीं, सावित्रीबाई फुले फातिमा शेख लाइब्रेरी, भोपाल, मध्य प्रदेश

चित्र: शोएब एवं मुख्तार, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश



गर्मियों की छुट्टियाँ आ गई थीं। हमने सामान बाँधा और चल पड़े चाची के घर जाने के लिए। हम स्टेशन पर पहुँचे तो पता चला कि ट्रेन दो घण्टे लेट थी। एक बारी को तो हम उदास हो गए। लेकिन फिर मैं खुश हो गई क्योंकि मुझे चीज़ों को देखकर उनके बारे में सोचना बहुत अच्छा लगता है। इसलिए मैंने मम्मी से पूछा, “मैं स्टेशन घूम लूँ?” मम्मी ने कहा, “घूम ले। लेकिन समय से आ जाना।” मैंने स्टेशन पर देखा कि एक छोटा लड़का लकड़ी बजाकर पैसे माँग रहा था। मुझे यह बात बहुत बुरी लगी। सबसे मजेदार बात थी कि स्टेशन पर दो औरतें लड़ रही थीं। उन्हें देखकर मुझे बहुत हँसी आई क्योंकि वो दोनों एक-दूसरे के बाल पकड़कर लड़ रही थीं। फिर मुझे एक आइसक्रीम वाला दिखा। मेरा थोड़ा मन तो किया कि आइसक्रीम खा लूँ, लेकिन मैं पैसे लेकर नहीं गई थी। थोड़ा आगे जाने पर मुझे किताबों की एक दुकान दिखी। वहाँ पर बहुत अच्छी किताबें थीं। मैंने सोचा अगली बार मैं ज़रूर यहाँ से किताब लूँगी। इतने में मम्मी ने आवाज़ दी कि ट्रेन आने वाली है। और मैं वहाँ से चल दी।

दीपा, पाँचवीं, उमंग स्कूल, गन्नौर, सोनीपत, हरयाणा



एक दिन जब मेरी मैं, मेरी बहन और मम्मी ननिहाल जा रहे थे तो हमारी बस छूट गई। फिर अगली बस 1 घण्टे बाद थी। तो मुझे बुरा लगा क्योंकि बस स्टैंड बहुत गन्दा था। वहाँ पर कचरा भी था। फिर मेरी मासी और भाई आ गए। हमने उनसे बातें कीं जैसे कि बस कैसे छूट गई। तो मैंने बताया कि हम देर से पहुँचे। इतने में दो बच्चे आगे निकल गए। फिर हमने उन बच्चों की मम्मी को ढूँढा। फिर हमने माज़ा जूस पिया। और जब हम चौहटन पहुँचे तो वहाँ हम अपनी जान-पहचान वाले के हैंडलूम की दुकान गए। दुकान का नाम जसनाथ हैंडलूम था। उन्होंने हमें जूस पिलाया और कचौड़ियाँ खिलाईं। फिर पन्द्रह मिनट में बस आने वाली थी तो हमने जनता स्वीट्स से आइसक्रीम ली और बस में जाते-जाते खाई।

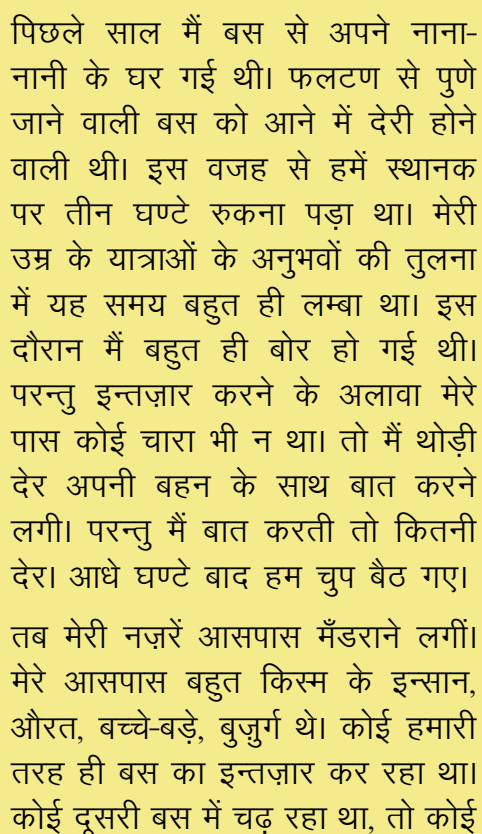
यश, नौ साल, अज़ीम प्रेमजी स्कूल
बाड़मेर, राजस्थान



चित्र: शांभवी, पहली 'ए', बिलाबॉन्ग हाई
इंटरनेशनल स्कूल, वडोदरा, गुजरात

मैं एक बार बस स्टैंड पर बस का दो घण्टे इन्तज़ार की थी। तो मैंने देखा वहाँ पर छोटे-छोटे बच्चे बस स्टैंड में भीख माँग रहे थे। यह देखकर मुझे बुरा लगा। और वहाँ पर एक तालाब है जो बहुत गन्दा था। उससे बहुत बदबू आ रही थी। वहाँ पर मैंने बहुत सारी बस देखीं और चारों ओर दुकानें भी देखीं। एक बूढ़ी दादी अम्बिकापुर में घूमती रहती हैं। उनके शरीर पर एक भी कपड़े नहीं थे तो मुझे बुरा लगा देखकर।

दुर्गा, सातवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, परसा, छत्तीसगढ़



उतर रहा था। परन्तु वहाँ मुझे कई ऐसे भी लोग दिखे जो अपने बाल-बच्चों सहित स्थानक पर ही अपना घर जमाए बैठे थे। रोज़गार का कोई साधन उपलब्ध न होने की वजह से वे उस हालात में जी रहे थे। उनके पास ना तो पैसे थे, ना ही अन्न और ना ही सर के ऊपर छत। उनके लिए तो ज़मीन गददा और आसमान चददर।

कुछ समय बाद एक वृद्ध महिला मुझे दिखाई दीं। वे एक हाथ में लाठी सँभालते हुए लोगों से भीख माँग रही थीं। उनके साथ एक छोटा पोता भी था। उस छोटे बच्चे के मन में गरीबी से उबरने की ज़िद थी। आगे की दुनिया का कोई अन्देशा न होने वाला वह लड़का अपनी दादी को सभी सुख देने का सपना रखता है। यह बात मुझे अच्छी लगी।

प्रज्ञा शहा, नौवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मुझे बस स्टैंड पर लम्बे समय तक इन्तजार करना पड़ा है। इस दौरान मैंने देखा कि एक व्यक्ति ने गरीब व्यक्ति की मदद की जिसे देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। क्योंकि वह गरीब व्यक्ति की मदद कर रहा था। और देखा कि एक औरत सब्जी बेच रही थी उसकी सब्जी कोई ले नहीं रहा था। जिसे देखकर मुझे बहुत बुरा लगा क्योंकि वह औरत धूप में सब्जी बेच रही थी लेकिन उसकी सब्जी कोई ले नहीं रहा था।

राधिका यादव, आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला,
जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश

मैं कभी रेलवे स्टेशन तो नहीं गई पर बस स्टैंड गई हूँ। मैंने वहाँ इन्तज़ार भी किया था। वहाँ पर से बहुत सारी बस निकलीं, पर रुकी नहीं। पता नहीं, क्यों। शायद वह भरी हों। वहाँ भीड़ थी। बस पकड़ने के चक्कर में लोग एक-दूसरे को धक्का दे रहे थे। यह बात मुझे अच्छी नहीं लगी। और एक बूढ़ी दादी थीं जो बस पर चढ़ नहीं पा रही थीं। उनकी एक ने मदद की। यह बात मुझे अच्छी लगी।

भूमिका राना, पाँचवीं, नानकमत्ता पब्लिक स्कूल,
नानकमत्ता, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

बातें फिल्मी

डॉक्टर स्ट्रेंज इन द मल्टीवर्स ऑफ मैडनेस



निर्देशक: सैम रैमी
निर्माता: केविन फिगे
रिलीज: 6 मई, 2022

सत्यम कुमार
नौवीं, किलकारी बिहार बाल भवन
पटना, बिहार

कभी सोचा है अगर जादूगर, चुड़ैल और टूटी हुई हकीकत को एक ही कढ़ाही में डालकर हिलाया जाए तो क्या बनेगा? इसका जवाब है — डॉक्टर स्ट्रेंज इन द मल्टीवर्स ऑफ मैडनेस। एक ऐसी फिल्म जहाँ दिमाग कहता है, “बस भाई!” और दिल कहता है “एक बार और!” इस फिल्म में हकीकत छुट्टी पर जाती है और कल्पना पागल हो जाती है।

बेनेडिक्ट कम्बरबैच यहाँ फिर से जादू बुनते हैं — पर इस बार उनकी लड़ाई किसी खलनायक से नहीं, बल्कि पूरे मल्टीवर्स से है। हर यूनिवर्स का दरवाज़ा खुलता है और हर दरवाज़े के पीछे पागलपन की एक नई दुनिया खड़ी है। कभी आँखों के रंग बदलते हैं, कभी ज़मीन हवा में उड़ती है, और कभी आपको लगता है कि स्क्रीन ही अब जादू कर रही है।

एलिज़ाबेथ ऑल्सन ने इस रोल में वो दर्द भरा है जो सीधा दिल चीर देता है। वो माँ है, पर वो चुड़ैल भी है — और जब माँ रोती है तो पूरा ब्रह्माण्ड काँपता है। उसका हर आँसू एक धमाका है, हर मुस्कान एक जादू। वो खलनायिका नहीं, वो भावनाओं का तूफान है।

डायरेक्टर सैम रैमी ने इस फिल्म को ऐसे बनाया है जैसे कोई भूतिया कॉमिक बुक ज़िन्दा हो गई हो। कहीं हॉरर के झटके हैं, कहीं सुपरहीरो की चमक और बीच-बीच में ऐसे सीन कि लगे “ये हुआ क्या अभी?” मैं इस फिल्म में एक भी बदलाव नहीं चाहता। क्योंकि डॉक्टर स्ट्रेंज इन द मल्टीवर्स ऑफ मैडनेस फिल्म नहीं, बल्कि एक अनुभव है। एक ऐसा जादू जो अगर ज़रा भी छेड़ दो, तो अपनी चमक खो दे। हर ट्विस्ट, हर डर, हर आँसू और हर जादुई चिंगारी अपनी जगह पर बिलकुल परफेक्ट है। यह फिल्म पागलपन और खूबसूरती का ऐसा संगम है जहाँ गलती की भी गुंजाइश नहीं, क्योंकि कुछ चीज़ें अधूरी नहीं होतीं — वो बस जितनी हैं, उतनी ही जादुई होती हैं।

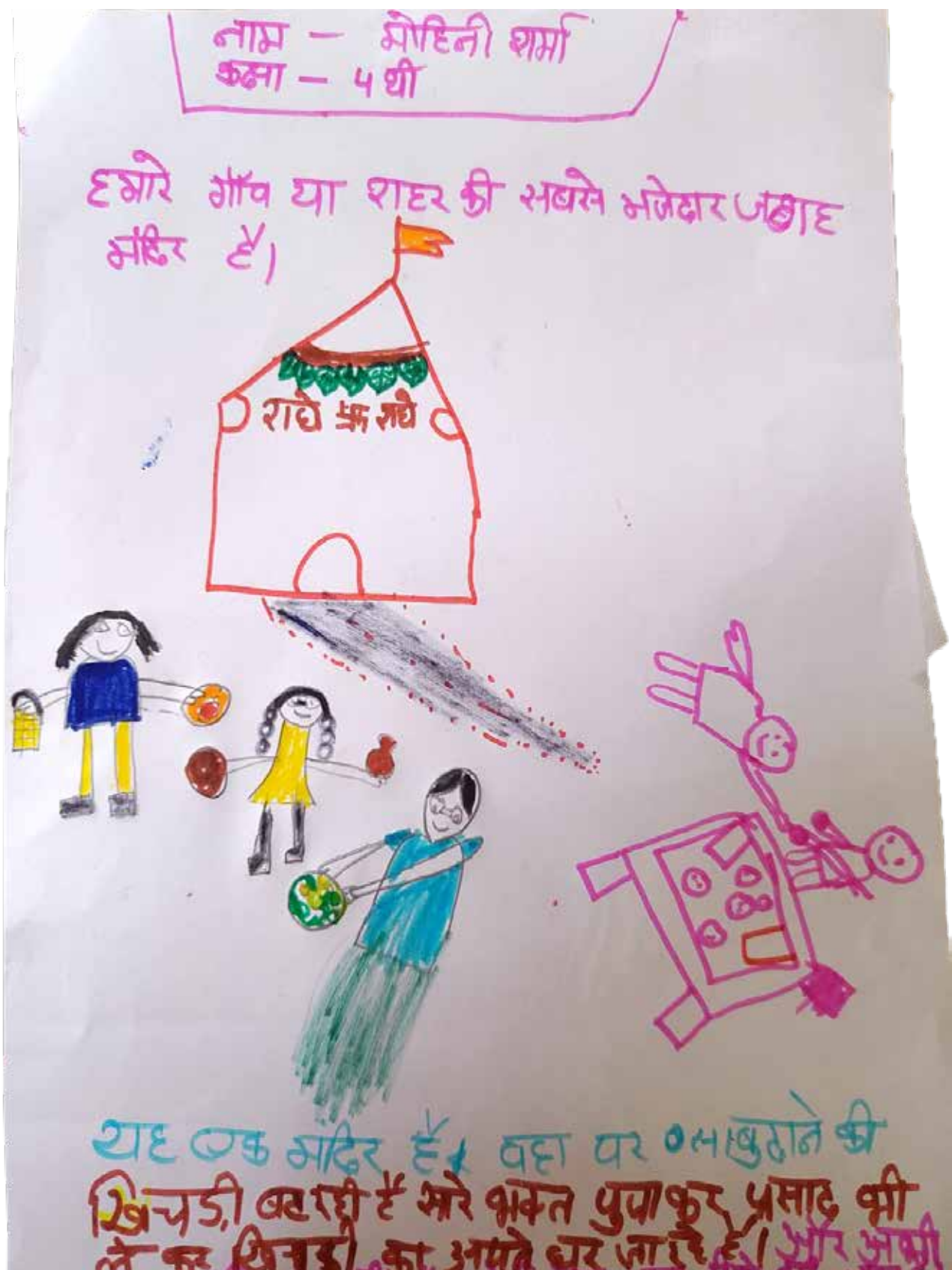


यह फिल्म हमें यह सिखाती है कि हर ताकत की एक कीमत होती है और हर शक्ति के साथ ज़िम्मेदारी और त्याग जुड़ा होता है। सच्चा प्यार किसी को बाँधने में नहीं, बल्कि छोड़ने में है — जैसे वांडा अन्त में समझती है कि अपने बच्चों के लिए मल्टीवर्स तोड़ना सही नहीं। यह फिल्म यह भी दिखाती है कि हर इन्सान के अन्दर थोड़ी 'मैडनेस' यानी पागलपन होता है, लेकिन अगर उसे सही दिशा दी जाए तो वही हमारी सबसे बड़ी ताकत बन जाती है। चाहे कितनी भी दुनिया या हालात क्यों न बदलें, अगर दिल सच्चा और इरादे साफ हों, तो हम हर जगह अपनी पहचान बना सकते हैं। डॉक्टर स्ट्रेंज हमें शक्ति और विनम्रता का सन्तुलन सिखाते

हैं — सब कुछ कर पाना और सब कुछ करना, दोनों में बड़ा फर्क है। कुल मिलाकर, यह फिल्म हमें बताती है कि कभी-कभी थोड़ा पागल होना ज़रूरी है, क्योंकि वही पागलपन हमें सीमाओं से परे सोचने, सपने देखने और खुद को पहचानने की हिम्मत देता है।

यह सिर्फ एक फिल्म नहीं, एक अनुभव है — ऐसा अनुभव जहाँ दिमाग खो जाता है, दिल जीता जाता है, और आपको समझ आता है कि 'मैडनेस' असल में कितनी खूबसूरत हो सकती है।





मोहिनी शर्मा, चौथी, एकलव्य फाउंडेशन, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, गजपुर, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

घर की छत

वर्षा

बारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

हमारे गाँव के बीच में एक घर है। उस घर की छत पर रहना मुझे बहुत अच्छा लगता है। क्योंकि उस घर की छत से हमारी पाठशाला तथा इधर-उधर का नज़ारा देखने में बहुत आनन्द आता है। उस घर की छत पर अगर कोई भी दिख गया तो सब वहाँ पर इकट्ठे हो जाते हैं और बातें करते हैं। बातें करते-करते कभी तो अँधेरा भी हो जाता है। लाइट बन्द करके हम सभी अपनी-अपनी या डरावनी कहानियाँ सुनाने लगते हैं। उन कहानियों को सुनते समय यदि कहीं पर ज़रा भी आवाज़ हो जाए तो सभी थर-थर काँपने लगते हैं। तभी बड़ा भाई बोलता है, “अरे! कुछ नहीं, यह तो कुत्ता है।” घर से फोन आता है कि खाना खाने के लिए आ जाओ। परन्तु घर जाने वाला रास्ता थोड़ा सुनसान है। घर जाने में डर लगता है। जो भी वहाँ पर बैठा होता है मैं उनसे बोलती हूँ कि मुझे घर छोड़ दो। ये सारी बातें सुनने में डर भी लगता है और मज़ा भी आता है। इसलिए उस घर की छत पर रहना मुझे बहुत अच्छा लगता है।



रीडिंग प्लाज़ा

प्राजक्ता काकड़े

आठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मेरी पसन्दीदा जगह है स्कूल का रीडिंग प्लाज़ा। हमारे सारे सीक्रेट इस रीडिंग प्लाज़ा को पता हैं। जो भी बात हो हम उधर ही जाते हैं। वहाँ बैठते हैं और बातें करने लगते हैं। वो हमारी सारी बातें छुप-छुपकर सुन लेता है। ना जाने कितने सीक्रेट्स होंगे उसके पास। मन करता है पूँछ लूँ उसे सारे सीक्रेट्स। पर क्या करूँ वह तो बोल ही नहीं सकता है।



पिपरा का बड़ा पेड़

सुमन

अपना स्कूल, देदुपुर कानपुर, उत्तर प्रदेश

हमारे मोहल्ले में पिपरा का एक बड़ा पेड़ है। वहाँ एक छोटा-सा मैदान व कुआँ भी है। वहाँ हम सब बच्चे खेलते हैं। और प्यास लगती है तो बाल्टी और रस्सी से पानी भरकर पी लेते हैं। कुएँ का पानी बहुत ही ठण्डा रहता है। दोपहर में मोहल्ले के सभी लोग वहाँ आराम करते हैं। वह जगह मुझे बहुत मज़ेदार लगती है। क्योंकि वहाँ गर्मी नहीं लगती है और ठण्डी हवा और पानी भी मिलता है।



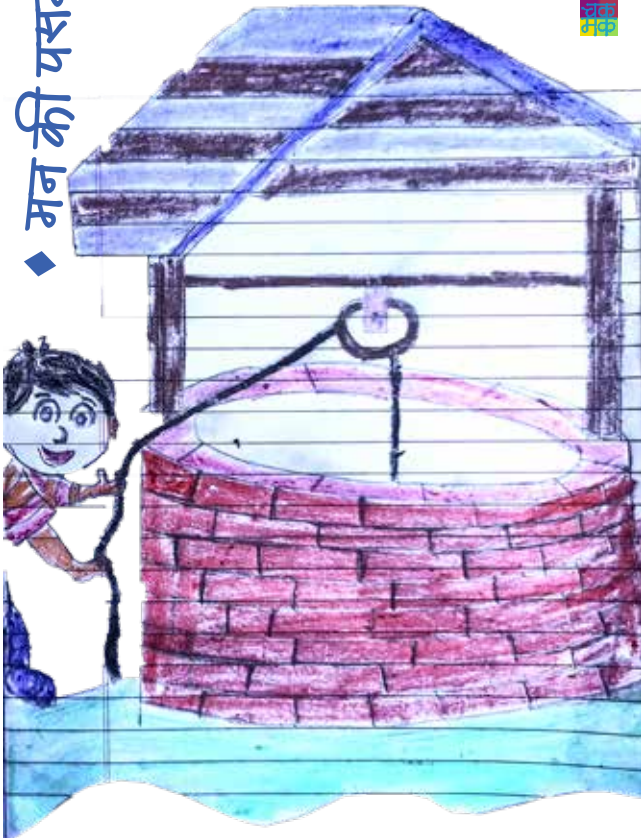


एक मैदान

नगमा

निरन्तर संस्था, पेस सेंटर, दिल्ली

मेरी नानी के घर के बराबर में एक मैदान है। मुझे सबसे ज़्यादा मज़ा वहाँ आता है। क्योंकि वहाँ सब खेलते हैं। छोटे से बड़ों तक सब। और ये जो मैदान है इसके पास एक नल है। जब हम मज़े करते-करते थक जाते हैं तो उसी के पास जाकर पानी पीते हैं। और पानी पीते-पीते मज़े में एक-दूसरे के ऊपर पानी डालने लगते हैं। हमारी नानी के घर पर किसी चीज़ की रोक-टोक नहीं है। मुझे अपनी नानी के घर जाना बहुत पसन्द है। और मैं इन्तज़ार करती हूँ नानी के घर जाने का।



छत्रपाल पहलवान ढाबा

स्नेहा कलमे

आठवीं, शासकीय एकीकृत हाई स्कूल, केसला, मध्य प्रदेश

छत्रपाल पहलवान ढाबा: मेरा घर अब गली या मोहल्ले में तो नहीं है, मेरा घर है गाँव से बाहर। मेरे घर के बगल में एक ढाबा है। ढाबे का नाम है 'छत्रपाल पहलवान ढाबा'। वो हमारे इधर का एक तरह से प्रसिद्ध ढाबा है। वहाँ पर बहुत भीड़ रहती है। वहाँ खाना भी बहुत अच्छा बनता है। वहाँ पर एक डोंग भी है। आपकी भाषा में कहूँ तो एक कुत्ता भी है। अब मुझे उसका नाम याद नहीं है। वहाँ के लोगों का व्यवहार भी अच्छा है। वहाँ शाकाहारी और माँसाहारी दोनों प्रकार का भोजन मिलता है। पहलवान ढाबा की यात्रा अब समाप्त होती है।



एक कुआँ

राखी लविस्कर

आठवीं, शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला

डाण्डीवाड़ा, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

हमारे घर के सामने एक कुआँ है। वो जगह बहुत मज़ेदार है। क्योंकि वहाँ जाम, आम, नींबू के पेड़ हैं और आसपास खेत भी हैं। वहाँ पर हम सभी दोस्त जाकर जाम, आम खाते हैं। जब भी छुट्टी लगती है हम सब दोस्त वहीं पर जाकर मस्ती-मज़ाक करते हैं। और हमारी छुट्टी का दिन वहीं बीत जाता है। अगर स्कूल नहीं लगा तो यह पक्का है कि हम वहाँ पर जाएँगे।



चित्र: सुमन, अपना स्कूल, देदपुर सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश



चित्र: प्रथम सिंह पटियाला, चौथी, रमणा विद्यालय,
महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी, चंगलपेट, तमिलनाडु

पार्क व पेड़

अहान जैन

दूसरी, दरबारीलाल देव मॉडल स्कूल, पीतमपुरा, दिल्ली

मेरे घर के पास एक बहुत बड़ा आम का और सुन्दर-सा जामुन का पेड़ है। लेकिन सबसे ज़्यादा अच्छा मुझे डिस्ट्रिक्ट पार्क में लगता है। वह मेरे घर से बहुत ही पास है। वहाँ मैं झूला झूलता हूँ, फिसलपट्टी पर फिसलता हूँ। वहाँ मैं स्केटिंग भी करता हूँ। बहुत मज़ा आता है। वो किसी जंगल जैसा लगता है जहाँ बहुत बड़े-बड़े पेड़ और सुन्दर फूल लगे हैं। वहाँ मैंने कई बार मोर को नाचते हुए भी देखा है। बहुत ही मज़ेदार होता है ये।



खट्टी-मीठी यादें

पलक

ग्यारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

वैसे तो मुझे मेरा पूरा गाँव पसन्द है लेकिन मुझे मेरे घर का आँगन बहुत अच्छा लगता है। क्योंकि इस आँगन से मेरी खट्टी-मीठी यादें जुड़ी हैं। इसी आँगन में मैंने चलना सीखा। मेरे आँगन में एक पेड़ है। वहाँ पर मैं झूला झूलती हूँ। अपने आँगन में लगे इस पेड़ से मैं आज भी उतना ही लगाव रखती हूँ, जितना बचपन में रखती थी। पर इस बरसात में इस पेड़ की दो टहनियाँ टूट गई हैं। शायद यह पेड़ अब बूढ़ा हो चला है। इस पेड़ के साथ मेरी अनगिनत यादें जुड़ी हुई हैं। मैं चाहती हूँ कि यह हमेशा इसी तरह सामने खड़ा रहे और मैं इससे बातें करती रहूँ।



चित्र: नैवध्य थपलियाल, नौवीं, विवेकानन्द स्कूल, देहरादून, उत्तराखण्ड





चित्र: रोहित, सातवीं, अजीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान



चित्र: मंजूर अली, सातवीं, अजीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान



झण्डू बाम

समर्थ यादव

चौथी, एकलव्य फाउंडेशन, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, चरगाँव माल
बीजाडाण्डी, मण्डला, मध्य प्रदेश

मैं और मेरे दोस्त स्कूल से आने के बाद साइकिल चलाने जाते हैं। हम तीनों एक-दूसरे के साथ कभी झगड़ा नहीं करते। पर तीनों ने एक-दूसरे के नाम कुछ भी रख दिए हैं। मेरे एक दोस्त का नाम लक्खा टकला है और दूसरे दोस्त का नाम महोदय लाल है। और मेरे दोस्त मुझे झण्डू बाम कहकर बुलाते हैं। हम तीनों कभी एक-दूसरे से गुस्सा नहीं होते। और केन्द्र में आते हैं तो भी साथ रहते हैं। कभी लड़ते भी हैं तो शाम तक मिल जाते हैं।



भेदभाव और घमण्ड

प्रकाश ठाकुर

छठवीं, कथा कानन लाइब्रेरी एवं संसाधन केन्द्र, नगांव, असम

दुर्गा पूजा के तीन दिनों में मैंने बहुत कुछ नोटिस किया, जैसे भेदभाव और घमण्ड। नगांव के एक तरफ की कमिटी ने बहुत अच्छे से पण्डाल सजाया था और वहाँ किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जा रहा था। लेकिन एक बड़ी कमिटी में भेदभाव और घमण्ड दिखा, खासकर जब एक बुजुर्ग औरत अपनी जाति के लोगों को अन्दर जाने दे रही थीं, लेकिन हम लोगों को नहीं। उनका घमण्ड साफ झलक रहा था क्योंकि इस बार उनकी कमिटी का पण्डाल बहुत अच्छा बना था और वह प्रेसिडेंट बनी थीं। मुझे लगता है कि इस बार एक अलग पण्डाल को जीतना चाहिए था, जहाँ भेदभाव और घमण्ड नहीं था।



चित्र: नन्दिनी धुमाल, आठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मेरे घर का सबसे पुराना सदस्य

ममता

ग्यारह वर्ष, अजीम प्रेमजी स्कूल
बाड़मेर, राजस्थान



पुरानी
लालटेन

फोटो: हीना ठाकुर

पापा जब बच्चे थे तब उनके माता-पिता ने उन्हें एक लालटेन लाकर दी। वह लालटेन बहुत सुन्दर थी। वह सूरज जैसी चमकती थी। उसका काँच साफ था। उस समय सब चिमनी की रोशनी में पढ़ा करते थे। इसलिए जब पापा लालटेन के साथ घर पहुँचे तो दूर-दूर के बच्चे उस लालटेन को देखने आए।

उस समय वह लालटेन सबके हिसाब से बहुत महँगी थी। तब एक लालटेन पचास रुपए की आती थी और महीने में पचास रुपए का तेल पी जाती थी। रात के समय सभी बच्चे पापा के पास आते थे। वे सभी एक छोटे-से पेड़ पर लालटेन को लटकाकर उसकी रोशनी में पूरी रात पढ़ते थे। कई बार सब वहीं मिट्टी में सो जाते। सुबह जल्दी उठते और घर से दूर कुएँ में से पानी भर लाया करते। वह लालटेन सबकी चहेती बन चुकी थी।

एक दिन जब सारे बच्चे पापा के पास पढ़ने आए तो पापा ने उन सबसे कहा, “अगर रोशनी चाहिए तो सभी महीने में एक लीटर मिट्टी का तेल लाना।” अगले दिन से सभी तेल लाने लगे जिससे पापा के पचास रुपए बच गए। पापा जब भी कहीं जाते तो अपनी लालटेन को ताला लगाकर जाते थे। पापा घमण्डी तो नहीं थे, पर मेहनती बहुत थे। वे लालटेन के तेल के लिए अपना समय बचाकर दुकान पर काम करते थे। जब उस लालटेन का धुआँ सबकी नाक में जाता था तो सब सुबह एक साथ पानी में मुँह धोते तो पूरा पानी काला हो जाता था। आज भी हम गाँव जाते हैं तो वह लालटेन एक कोने में पड़ी रहती है।

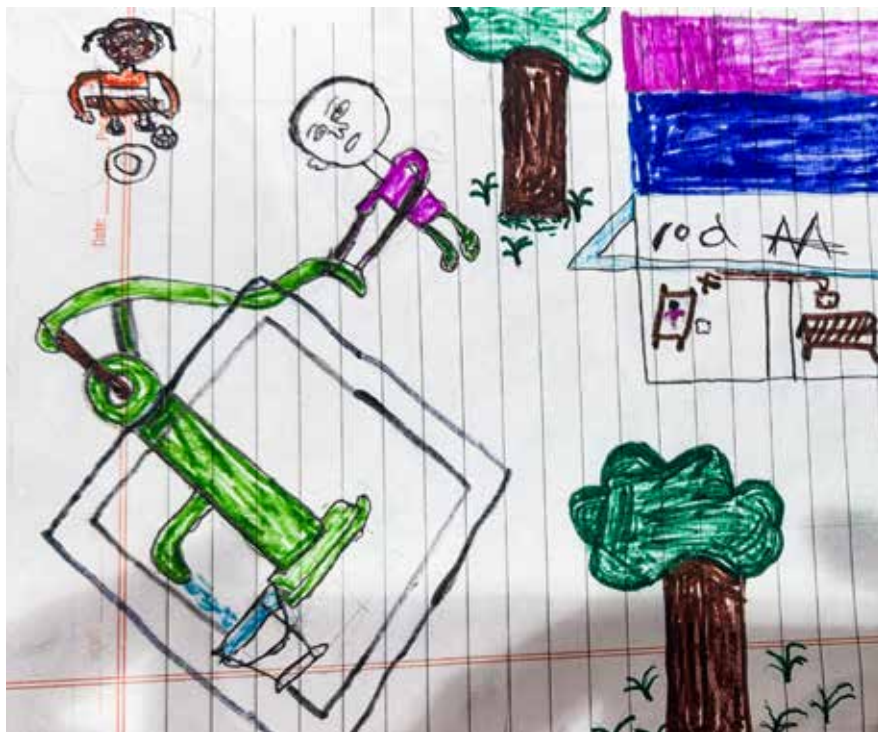


विवेक कुमरे व कन्हैया कुमरे

आठवीं, शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला, कोटमीमाल, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

हमारे घर में एक बहुत पुरानी लालटेन है। और सिक्का है जो पुराने ज़माने में चलता था। वो दो और पचास पैसे का है। हमारे घरवाले बोलते हैं कि हम ये पैसा दुकान पर लेकर जाते थे तो हमें बहुत सारी चॉकलेट और बिस्कुट देते थे। अब तो पाँच रुपए में सिर्फ एक बिस्कुट देते हैं। और पाँच रुपए में तो हम पूरे घर का राशन ला लेते थे। अब तो पाँच सौ रुपए में भी पूरा राशन नहीं आता।





चित्र: अमरजीत, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

हैंडपम्प

अमरजीत

पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरा घर मेरे खेत में ही बना है। घर के बाहर एक हैंडपम्प लगा है। यह हैंडपम्प मेरे परदादाजी ने लगवाया था। इसका उपयोग तब खेत में पानी चलाने के लिए होता था। अब तो लाइट लग गई है। और खेत में सिंचाई करने के लिए गाँव में मशीन भी मिल जाती है। अब हैंडपम्प का उपयोग हम घर के कामों के लिए करते हैं। हम लोग नल पर ही नहाते हैं और उसी का पानी पीते हैं। दोपहर के समय वहीं पर माँ बरतन भी साफ करती हैं। और कपड़े भी धोती हैं। नल अभी भी ठीक काम करता है। कभी-कभी वासर कट जाता है तो नया लगाना पड़ता है। परदादा तो अब नहीं हैं पर उनका लगवाया हुआ नल अब भी हमारी मदद कर रहा है।



नानाजी की संटीक कार

श्रेयांश राज

चौथी, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल

चंगलपेट, तमिलनाडु

मेरे नानाजी के पास एक तीस साल पुरानी कार थी। उसका नाम फिएट था। वह बहुत तेज़ चलती थी और बहुत मज़बूत भी थी। उसमें घूमने में हमें बहुत मज़ा आता था। कुछ साल पहले एक अंकल जिन्हें पुरानी चीज़ें रखने का शौक था, वे यह कार ले गए और उसे सँभालकर रखा है।

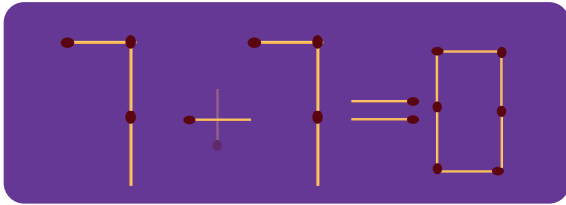


1. 11

2. क्योंकि वह उस स्टोर में काम करता था और बेकार हो गए सामान को कार्ट में डालकर बाहर ले जा रहा था।

4. 6, 9, 4, 1

5.



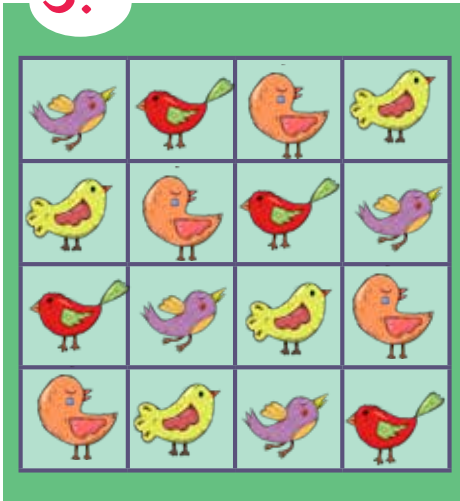
9.

क	से	रा	बे	श	र	म
ने	म	गु	ला	ब	जू	ट
र	ल	ल	चं	पा	मा	ही
गें	ल	मो	ग	रा	त	नी
टे	दा	ह	र	सिं	गा	र
पा	सू	र	ज	मु	खी	लि
चाँ	द	नी	रा	च	मे	ली

7. $12 \times 2 = 24$

- 8.
1. नेहा थर्मस में गरम चाय है, पी लेना।
 2. उसका नमकीन बनाने का तरीका ही कुछ अलग है।
 3. मेरी पतंग लाल रंग की है।
 4. ज़ोया ने पावभाजी भापेट खाई और पैक भी करा ली।
 5. महिमा थाली ले आना।
 6. सपना कल दिल्ली जाने वाली है।

3.



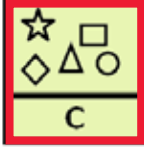
इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

1 क	म	र	2 क		3 आ	4 क
ने			5 घ	ना		री
6 र	शी		ना		7 गें	दा
		8 ब	र	9 ग	द	
10 ग		बू		घा		11 ची
12 क	म	ल			13 पा	द
शी			14 रा	ल	रा	नी

सुडोकू-90 का जवाब

4	1	5	3	6	2
6	3	2	4	1	5
5	2	1	6	4	3
3	6	4	5	2	1
2	4	3	1	5	6
1	5	6	2	3	4

10.

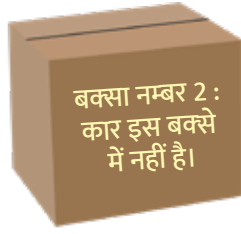


13.



12.

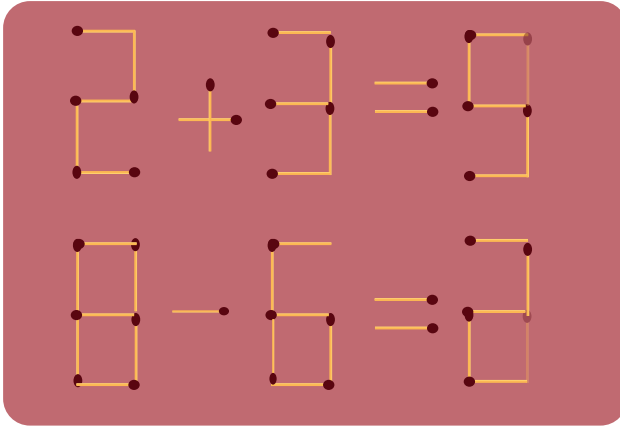
बक्सा नम्बर 2 को। यदि कार पहले बक्से में होती तो बक्सा नम्बर 1 व 2, दोनों की चिप्पी सही हो जाती। इसी तरह यदि कार बक्सा नम्बर 3 में होती तो बक्सा नम्बर 2 व 3 दोनों की चिप्पी सही हो जाती। इसलिए कार केवल बक्सा नम्बर 2 में ही हो सकती है।



14.

पैदल चलकर, क्योंकि नदी में पानी नहीं था।

15.



16. 5 किताबें

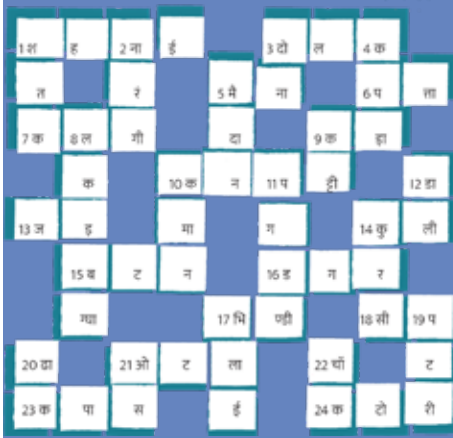
17. 9 को उठाकर उलटा करके 1 के बगल में रख दो, तो $8 + 8 = 16$ हो जाएगा।

18. $2^6 - 63 = 64 - 63 = 1$

11.



इस अंक की चित्रपहेली का जवाब



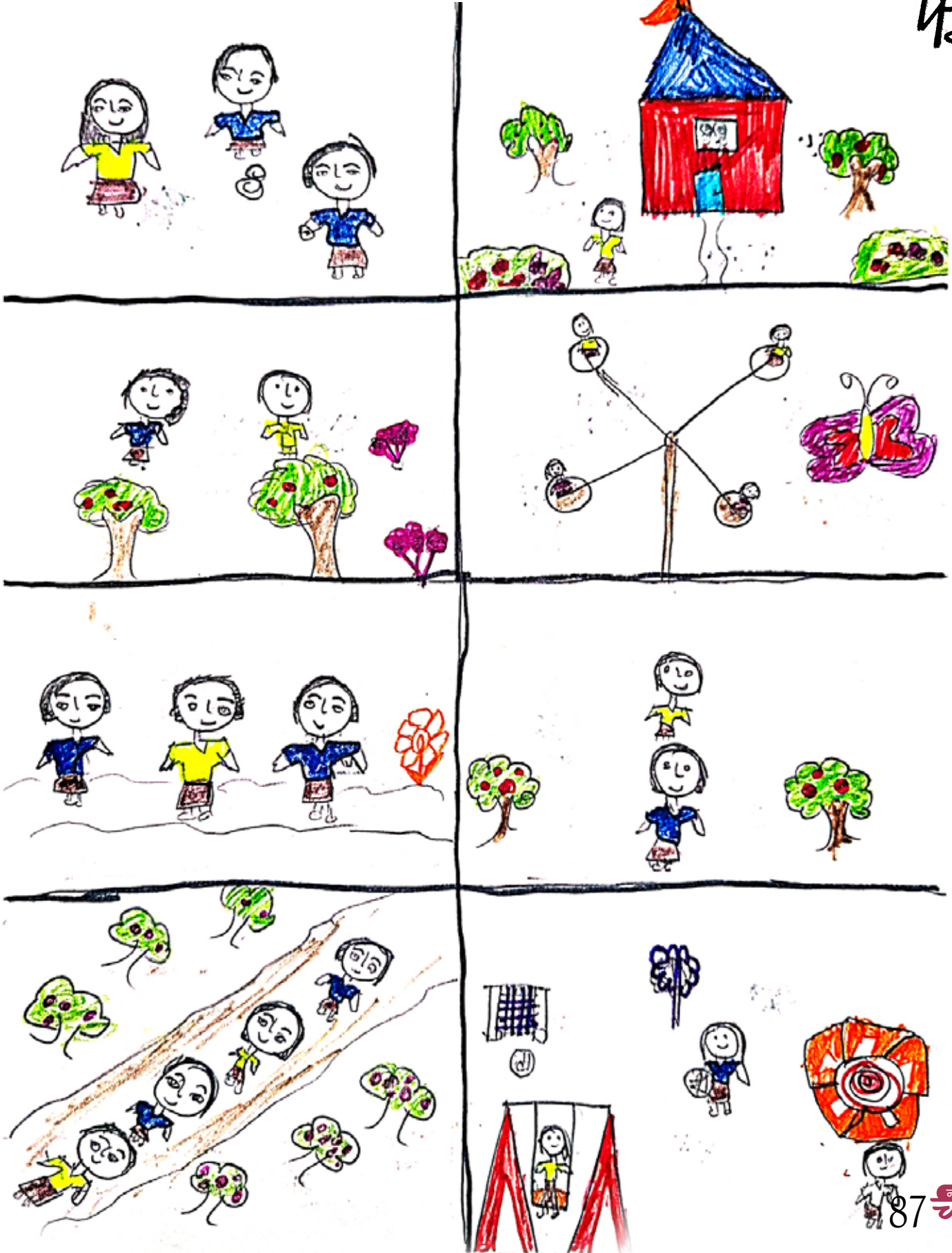
सुडोकू-91 का जवाब

2	1	9	4	8	3	7	5	6
6	7	8	5	1	9	2	3	4
5	3	4	2	7	6	9	8	1
8	6	1	7	4	2	3	9	5
4	5	2	3	9	8	6	1	7
3	9	7	6	5	1	4	2	8
7	8	5	9	2	4	1	6	3
1	2	6	8	3	7	5	4	9
9	4	3	1	6	5	8	7	2

Name = LAXMI
class = VII

Roll NO = 713 [मेरा वनचपन: चित्र कथा]
School Name = J.S.S. Kamba



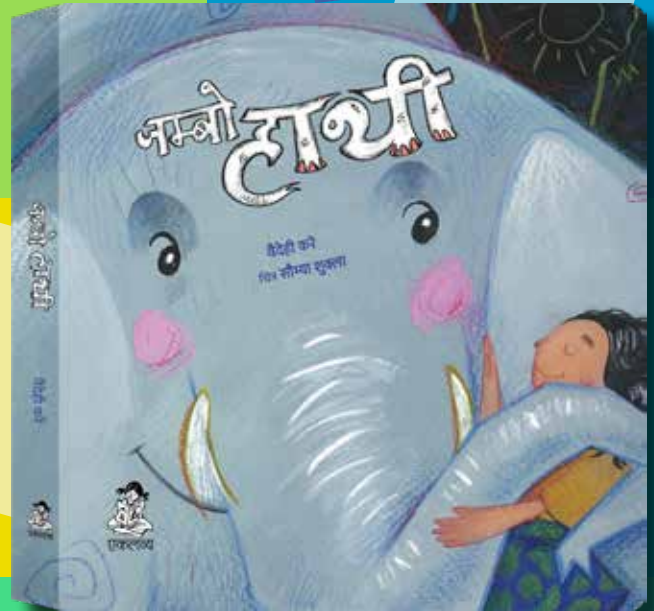
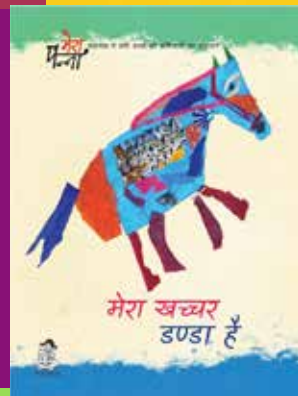
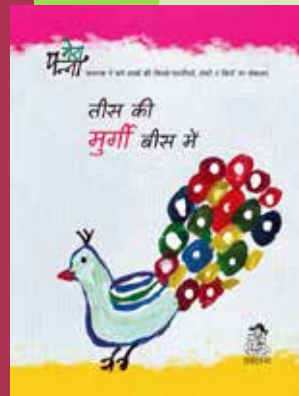
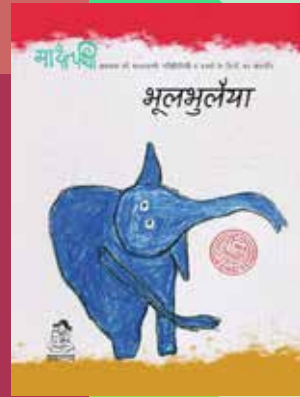
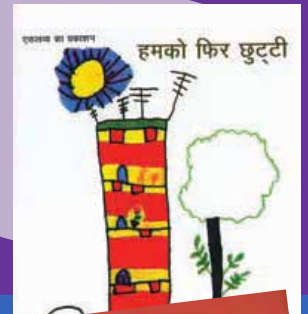
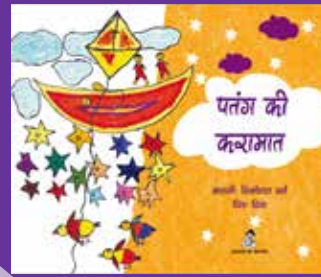


मेरा पन्ना

रचनाओं से बनी किताबें...

बच्चों का दुनिया देखने का नज़रिया अमूमन बड़ों जैसा नहीं होता। वे शब्दों या चित्रों के ज़रिए अपने आसपास की चीज़ों को जिस बारीकी से बयाँ करते हैं उनमें उनकी एक खास शैली देखने को मिलती है।

बाल साहित्य में बच्चों की रचनाओं को अक्सर बहुत कम जगह मिलती है। लेकिन चकमक की हमेशा से यह कोशिश रही है कि बच्चों की रचनात्मकता को माकूल जगह दी जाए। इसलिए चकमक में शुरुआत से ही 'मेरा पन्ना' नाम से एक कॉलम रहा है। चकमक में छपी बच्चों की रचनाओं को एकलव्य ने कई किताबों के रूप में भी प्रकाशित किया है।



प्रकाशक टुलटुल बिस्वास द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं मुद्रक आर के सिक्युप्रिंट प्रा. लि. द्वारा प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन